शंभुदास

(दीर्घ कथा संग्रह)

जगदीश प्रसाद मण्डल



श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

ISBN : **९७८-९३-८०५३८-७४-७**

गाम- बेरमा, पोस्ट-बेरमा, भाया- तमुरिया
जिला- मधुबनी
८४७४१०

मूल्य : भा. रू. २००/-
पहिल संस्करण : २०१३

श्रुति प्रकाशन :
रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली- ११०००८.
दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११) २५८८९६५७
Website : http://www.shruti-publication.com
e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com

मुद्रक: अजय आर्टस्, दरिया गंज, नई दिल्ली-११०००२

अक्षर-संयोजक: श्री उमेश मण्डल

डिस्ट्रीब्यूटर:

पल्लवी डिस्ट्रिब्यूटर, वार्ड न. ६, निर्मली (सुपौल),
मो. ९५७२४५०४०५, ९९३१६५४७४२

***Shambhudas** : Collection of three long Maithili stories*
by Jagdish Prasad Mandal.

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ
समरपित...



परिचए-पात : जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म : ५ जुलाइ १९४७ ई.मे

पिताक नाओं : स्व. दल्लू मण्डल।

माताक नाओं : स्व. मकोबती देवी।

पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।

पुत्र : सुरेश मण्डल, उमेश मण्डल, मिथिलेश मण्डल।

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा।

मूलगाम : बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला-मधुबनी, (बिहार) पिन- ८४७४१०

मोबाइल : ०९९३१६५४७४२, ०९५७०९३८६११, ०९९३१७०६५३१

ई-पत्र : jpmandal.berma@gmail.com

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी आ राजनीति शास्त्र) मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर साहित्यमे मनुखक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि।

सम्मान : गामक जिनगी लघुकथा संग्रह लेल विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११क मूल पुरस्कार आ टैगोर साहित्य सम्मान २०११; तथा समग्र योगदान लेल वैदेही सम्मान- २०१२; एवं बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह "तरेगन" लेल "बाल साहित्य विदेह सम्मान" २०१२ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) प्राप्त।

साहित्यिक कृति :

उपन्यास : (१) मौलाइल गाछक फूल (२००९), (२) उत्थान-पतन (२००९), (३) जिनगीक जीत (२००९), (४) जीवन-मरण (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (५) जीवन संघर्ष (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (६) नै धाड़ैए (२०१३) प्रकाशित। (७) सधबा-विधवा, (८) बड़की बहिन तथा (९) भादवक आठ अन्हार शीघ्र प्रकाश्य।

नाटक : (१) मिथिलाक बेटी (२००९), (२) कम्प्रोमाइज (२०१३), (३) झमेलिया बिआह (२०१३), (४) रत्नाकर डकैत (२०१३), (५) स्वयंवर (२०१३) प्रकाशित।

लघु कथा संग्रह : (१) गामक जिनगी (२००९), (२) अर्द्धांगिनी (२०१३), (३) सतभैंया पोखरि (२०१३), (४) उलबा चाउर (२०१३), (५) भकमोड़ (२०१३)

विहनि कथा संग्रह : (१) बजन्ता-बुझन्ता (२०१३), (२) तरेगन (बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह) (२०१० पहिल संस्करण, २०१३ दोसर संस्करण)

एकांकी संग्रह : (१) पंचवटी (२०१३)

दीर्घ कथा संग्रह : (१) शंभुदास (२०१३)

कविता संग्रह : (१) इंद्रधनुषी अकास (२०१३), (२) राति-दिन (२०१३), (३) सतबेध (२०१३)

गीत संग्रह : (१) गीतांजलि (२०१३), (२) तीन जेठ एगारहम माघ (२०१३), (३) सरिता (२०१३), (४) सुखाएल पोखरिक जाइठ (२०१३)

मइटुग्गर

जहिना सरयुग नदीमे नहा भक्त मंदिरमे प्रवेश करिते भगवान रामक दर्शन करैए, तहिना तपेसर अँगनाक मेहमे ओंगठि समाजकेँ भोज खुअबैक ओरियौन देखि रहल छथि। पोखरिक पानि जकाँ शीतल, शान्त आ समतल मन अँगनाक सुगंधमे मस्त छन्हि। तैबीच बेटी घुरनी चमकैत स्टीलक छिपलीमे पनरह-बीसटा सूखल बड़ी एकटा बड़ आ पानि भरल गिलास आगूमे रखि कहलकनि-

''कनी चीख कऽ देखियौ जे नीक भेल आकि नै?''

मुस्कीआइत बेटी आ छिपलीमे सजल बड़-बड़ी देखि तपेसर हरा गेला। मन पड़लनि मइटुग्गर। मुदा चुल्हिपर चढ़ल लोहिया छोड़ि अँटकब उचित नै बूझि घुरनी चुल्हि लग पहुँच गेली। कमलक फड़ सन एकटा बड़ी मुँहमे लइते मन पड़लनि परिवारमे अपन कएल काज।

सौन मास। भोरहरबामे मेघ फटि बरखो भेल आ अधरतीएसँ जे पूर्बा उठल, उठले रहल। कखनो काल झकसीओ अबिते रहल। जेना-जेना दिन उठैत गेल तेना-तेना पूर्बाक लपेटि सेहो बढ़िते गेल। प्रसवक दर्दक आगम सुशीला सासुकेँ कहलनि। पुतोहुक बात सुनि सुनयना बेटा-तपेसरकेँ पल्हनि बजबए कहलखिन।

ओसारक ओछाइनपर ओंघराएल सुशीलाक मनमे लड़ाइ पसरि गेलनि। एक दिस प्रसवक पीड़ा अपन दल-बलक संग अंगक पोर-पोरमे चढ़ाइ करैत तँ दोसर दिस जिनगीक कठिन दुर्गमे फँसल मन खुशीक लहरिमे झिलहोरि खेलाइत। नारी जिनगीक श्रेष्ठतम काज। जेहने भरिगर काज तेहने मुँहमंगा मातृत्वक उपहार। पूर्बाक लपेटि देखि सुनयनाकेँ ठकमुड़ी लगल रहनि। आइ धरि प्रसव गठुलामे होइत रहल अछि। जइ घरक टाट हवाक झोंककेँ नै रोकैत। आश्रमक घर जकाँ टाटमे लेब नै पड़ैत। मुदा वोनक बच्चाकेँ कोन घर रच्छा करैए! गठुला छोड़ि मालक घरमे ओछाइन ओछा देलखिन। ओछाइन ओछा हियासए लगली जे

अगियासी भइए गेल, फाटल-पुरान लइए अनलौं। मालक घरसँ हुलकी मारि पुतोहु दिस देखलनि तँ चैन बूझि पड़लनि। मन असथिर भेलनि।

पल्हनि ऐठाम जाइत तपेसरक मनमे अपन काजक भार उठलनि। एहेन भारी काजमे पुरुखक काज की अछि? डेग भरि हटल पल्हनिक घर अछि तेकर पछाति? मचकीपर झुलैत झुलनिहार जकाँ तपेसर झुलैत पल्हनि ऐठाम पहुँच जनतब देलखिन। अपन उगैत लछमीकेँ देखि मुस्की दैत पल्हनि कहलकनि-

''अहाँ आगू बढ़ू गाएक थैर बनौने पीठेपर दौगल अबै छी।''

पाँचो मिनट पल्हनिकेँ पहुँचला नै भेल आकि बेटाक जनम भेल। धरतीपर बेटाकेँ पदार्पण करिते बिजलोका जकाँ परिवारमे खुशी पसरि गेल। देह पोछैत पल्हनिक मन चालीस तम्मा निछौर, तैपरसँ निपनौन, लाढ़ि-पुरनि कटाइक संग उपहार, पसारी छी तँए मंगबोक अधिकार अछिए जाइकाल एकटा सजमनिओ मांगि लेब। सिदहा तँ देबे करती। हिसाबमे मन बौआ गेलनि। समाजमे भगवान केकरो सनतान दइ छथिन तइमे सझिया कऽ दइ छथि ने। बच्चाक जिनगी हमरा हाथमे अछि, तहिना ने अपनो जिनगी दोसराक हाथमे अछि। तरे-तर मन खुशी भऽ गेलनि। मुस्की दैत सुनयनाकेँ टोकलखिन-

''काकी, पहिल पोता छियनि, रेशमी पटोर पहिरबनि?''

धारक बेगमे दहलाइत दादीक मन, मुड़ी डोलबैत बजली-

''एकटाकेँ के कहए सातटा पहिरेबह।''

खुशीसँ पल्हनि बजली-

''बच्चा मुँह, एन-मेन तपेसरे बौआ जकाँ छै।''

पल्हनिक बात सुनि ओछाइनपर पड़ल सुशीलाक दर्द भरल देहक मनमे अपन सतीत्वक आभास भेल। मुदा अवसरकेँ हाथसँ नै जाए दिअए चाहि बुदबुदाएल-

''केहेन सपरतीभ जकाँ बजैए।'' मुदा पल्हनि सुनलक नै। जइसँ आगू किछु नै बजली।

झीलक पानि जकाँ तपेसरक मन असथिर। सामान्य परिस्थिति तँए सामान्य मनक विचार। जहिना कठिन-सँ-कठिन, उकरू-सँ-उकरू काजपर लूरि डटल रहैत तहिना जिनगीक काजपर नजरि दौगैत मन डटल। मन कहैत बीस-एक्कैस बर्खक उम्रो छेबे करनि, रोगो बियाधिक छूति देहमे नहियेँ छन्हि। बेटापर नजरि पहुँचिते पुत्र सन सम्पतिक आगमनसँ मन फुला गेलनि। जहिना लगौल गाछमे पहिल फूल वा फड़ लगलापर बेर-बेर देखैक इच्छा होइत तहिना तपेसरक मनमे उठैत। बर्जित जगह बूझि परहेज केने रहथि। मुदा तैयो जहिना डॉट टुटल कमल हवाक संग पोखरिमे दहलाइत तहिना खुशीक हिलकोरमे तपेसरक मन तर-ऊपर करैत। मनमे उठलनि, पुरुख-नारी बीचक सम्बन्धमे बच्चो पैघ शर्त्त छी। परिवारमे -सम्बन्धमे- विखण्डनक संभावना बनल रहैए। लगले मन अपनासँ आगू उड़ि माए-बापपर गेलनि। हृदए बिहुँसि गेलनि। जहिना मातृत्व प्राप्त केलापर नारीक सौन्दर्य बढ़ि जाइत तहिना ने पितृत्व प्राप्त केलापर पुरुषोकेँ होइत। लगले सिनेमाक रील जकाँ बेटाक जनमसँ अंतिम समए धरिक जिनगी नाचि उठलनि।
किछुए समए पछाति सुशीलाकेँ पुन: दर्द शुरू भेलनि। समैक संग दर्दो बढ़ए लगलनि। दुखक संग छटपटाएब शुरू भेलनि। सुशीलाक छटपटाहटि देखि सुनयना पल्हनिकेँ कहलखिन-

''कनियाँ, अहाँ देखियनु ता बच्चा सम्हारि दइ छी।''

पेटपर हाथ दैते पल्हनि बूझि गेली जे दोसर बच्चा हेतनि। बजली-

''काकी, एकटा बच्चा आरो हेतनि?''

पल्हनिक बात सुनि, जहिना मेघ तड़कैत तहिना सुनयनाकेँ भेलनि। जोरसँ तपेसरकेँ कहलखिन-

''बौआ, बौआ।''

अकचका कऽ तपेसर बाजल-

"हँ, माए।"

"हँ, अँगनेमे रहअ।"

करीब बीस मिनट पछाति बेटीक जनम भेलनि। अखनि धरि जहिना खुशीक सुगंध अँगनामे पसरल छल एकाएक ठमकि गेल। बच्चाक जनम होइते सुशीलाक देह लर-तांगर भऽ गेलनि। पल्हनि सुनयनाकेँ कहलनि-

> "काकी, पुरबा लपटै छै। अगियासी नीक-नहाँति जगा देथुन ओना तँ सभ भगवानक हाथमे छन्हि मुदा जहाँ तलिक पार लगत से तँ करबे करबनि। जानिए कऽ तँ भगवान दुख बढ़ा देलखिन हेन। ऐ -पहिल- बच्चापर ई नजरि राखथु ऐपर हम रखै छी।"

कहि बच्चाक पोछ-पाछ करए लगली। साँस मन्द देखि मुँहमे मुँह सटा फूकि साँसक गति ठीक केलनि। बच्चाक लक्षण देखि पल्हनिक मन बाजि उठल। जरूर दुनू बच्चा ठहरबे करत। नजरि पछिला काजपर पड़ल। एहेन की पहिल-पहिल बेर भेल। केतेकोकेँ भेलनि। किछु गोटेक दुनू बँचलनि, किछु गोटेक एकटा बँचलनि आ किछु गोटे बच्चाक संग चलि गेली। ओना काज तँ अनिश्चित अछि मुदा अपना भरि तँ तिया-पछा करबे करबनि। सुशीलाकेँ सुनयना पुछलखिन-

"कनियाँ मन केहेन लगैए?"

अर्ध-चेत अवस्थामे सुशीला अपन टुटैत जिनगी हाथक इशारासँ कहलकनि। मुँहक सुरखी कहैत जे नै बँचब। सुशीलाक इशारासँ सुनयना बुझलनि जे तपेसर भारी विपतिमे पड़ि गेल। भगवानपर खींझ उठलनि। वेचारा फट्टो-फनमे पड़ि जाएत। हम बूढ़े भेलौं, जएह कएल हएत सएह ने सम्हारि देबै। मुदा विपति तँ तेतबेटा नै ने छै। खेती-पथारी, माल-जाल, कुटुम-परिवार छै तैपरसँ दू-दूटा चिल्का भेलै। केना सम्हारि पौत। ने स्त्री बँचतै आ ने एक्कोटा बच्चा। हमहूँ केते दिन जीब। सभ किछु वेचाराकेँ हरा जेतै। हे भगवान, तोरा केहेन दुरमतिया चढ़लह जे एहेन गनजन वेचाराकेँ केलहक।

आँगनमे बैसल तपेसरक मनमे उठैत जे जेतेटा मोटरी माथपर उठत तेतबे ने उठाएब। नम्हर मोटरी केते काल कियो माथपर सम्हारि कऽ रखि सकैए। मुदा तँए की? जीत्ता जिनगी हारिओ मानि लेब उचित नै। करैत-करैत-लड़ैत-लड़ैत जे हेतै से देखल जेतै।

जहिना रणभूमिमे दू दलक बीच लड़ाइ अंतिम दौड़मे अबिते दुनू दलक मन मानि लैत जे के जीतत के हारत। मुदा हरलोहोक बीच केते रंगक विचार उठैत। किछु गोटे रणभूमिसँ भागए चाहैत तँ किछु गोटे अढ़ भँजिया नुकाए चाहैत। मुदा किछु एहनो होइत जे अपन बलि देखि स्वेच्छासँ अंतिम समए धरि हथियार उठौने रहैत। केना नै उठौत? अपन जिनगीक संगी, जे कौआ-कुकुरक पेट भरि अपन मनोरथ पूरा करत, आ हम गुलाम बनि दुश्मनक जहलमे सड़ब।

अपन अंतिम बात सुशीला पल्हनिओ, सासुओ आ पतिओकेँ कहलक-

> ''हम नै बँचब। दुनियाँक सभसँ पैघ पापी छी जे अपनो रच्छा नै कऽ सकलौं। दुनू बच्चाकेँ अहाँ सभ देखबै।''

बजिते आँखि बन्न भऽ गेलनि। प्राण तँ बँचल रहनि मुदा चेतन-शुन्य भऽ गेली।

सुशीलाक बात सुनि पल्हनि चमकि उठली। बाप रे! सभसँ बेसी भार अपने ऊपर आबि गेल। जनमक पालनक भार...!! अखनि धरि जेतेठीम काज केलौं, एहेन काजसँ भेँट कहाँ भेल! बूझल बात कम आ अनभुआर बेसी बजरत। जेते अपना दिस तकैत जाइत तेते चिन्ता बढ़ल जाइत। बच्चाकेँ दूध पिआएब जरूरी भऽ गेल। माएक तँ यएह गति छन्हि। हे भगवान कोनो उपए धड़ाबह। मन पड़लै अपन बच्चा। अपनो तँ दूध होइते अछि तखनि एते घबड़ेबाक की जरूरति अछि। मुदा अपन दूध तँ छह मासक बकेन अछि। गजुरा तँ नै। एते विचार करब तँ बच्चे मरि जाएत। हे भगवान जानिहऽ तूँ! मोने-मन कहि दुनू बच्चाकेँ दुनू छाती लगा दूध पिआबए लगली। बच्चाक चोभ देखि पल्हनिक मन खुशीसँ नाचि उठलनि। ठानि लेलनि जे बच्चाकेँ मरऽ नै देब। आइए बकरी दूधक ओरियान करैले सेहो कहि दइ छियनि आ टेम-कुटेम अपनो चटा

देबै। मुदा अपनो बच्चा तँ छअए मासक अछि। सात माससँ पहिने केना दालिक पानि चटेबै। फेर मातृत्व जगिते बुदबुदेली-

> ''ऐसँ पैघ काज ऐ धरतीपर हमरा लिये की अछि? जौं दुनियाँ देखए बच्चा आएल हएत तँ जरूर देखत।''

पुतोहुक बात सुनि सुनयना चेतनहीन हुअ लगली। कासक फूल जकाँ मन उड़ि-उड़ि बौराए लगलनि। बच्चाक मुँहपर नजरि पड़िते उपराग दैत भगवानकेँ मोने-मन कहलखिन-

> ''कोन जनमक कनारि ऐ बच्चासँ असुलि रहल छह। ऐ निमू-धनक कोन दोख भेलै। जौं तोरा नै सोहेलह तँ पेटेमे किए ने कनारि चुका लेलह। एहेन बच्चाक एहेन गंजन तोरे सन बुते हेतह।''

चहकैत करेजसँ द्रवित भऽ कुहरि उठली। एक तँ वेचारीक -पुतोहुक- ऊपर केहेन डाँग पड़ल जे अमूल्य कोखि उसरन भऽ गेलै, तइ संग बच्चा लटुआएल अछि। मुदा अपनो वंश तँ उसरने भऽ रहल अछि। थाकल-ठहियाएल जकाँ छातीपर पथरो रखि आँखि ताकब मुदा तपेसर तँ से नै अछि। जुआन-जहान अछि, हो-न-हो कहीं बौर ने जाए। केकरा के देखत? जहिना धारक बोहैत धारामे माथक मोटरी खुललासँ मोटरीक वस्तु छिड़िया पानिक संग भाँसए लगैत जइसँ किछु बिछेबो करैत आ किछु भँसिओ जाइत तहिना सुनयनाक विचार किछु उड़ियाइत, किछु ठमकल आ छाती दहलाइत रहए।

ओसारक खुट्टा लगा बैसल तपेसरक मन मानि गेलै जे चूक हमरोसँ भेल। आइ धरि जे देखैत एलौं वएह मनमे बैस गेल। की रेडियो-अखबारक समाचार झूठे रहैए जे दू-तीन-चारि धरि बच्चा मनुखकेँ होइ छै। जहिना परम्परासँ अबैत बेवहारकेँ बिनु सोच-विचार केनौं सभ लकीरक फकीर बनि लहास ढोइत अछि तहिना तँ केलौं। मुदा हाथक डोरा टुटने जहिना गुड्डी अकासमे उधिया जाइत तहिना ने तँ उधिया गेलौं। सोचैक, बुझैक बात छल जे एक बच्चा लेल केते सेवाक जरूरति होएत, दू बच्चा लेल केते...। से नै बूझि सकलौं। आइ जौं बूझल रहैत

तँ एहेन दिन देखैक अवसर नै भेटैत। परिवार उजड़ि जाएत। वंश विलटि जाएत। मुदा जे चुकि गेलौं ओकर उपऐ की? जहिना लटुआएल अड़िकंचनमे सुन्नर सुकोमल पेंपी निकलैत तहिना तपेसरक मनमे आशाक पेंपी उगल। धारक धाराक सिक्त मनमे उठलनि, जहिना एक दिस परिवार, वंशकेँ उजड़ैत-उपटैत देखै छी तहिना तँ भूत, वर्तमान आ भविस सेहो आँखिक सोझमे लहलहा रहल अछि। लहलहाइत परिवारकेँ देखि तपेसरक हृदए उफनि गेलनि। जहिना धारक धारा माने बेगमे टपै काल ओरिया कऽ पएर रखितौ थरथराएल पएर पिछड़ैत रहैत तहिना तपेसरक मन सेहो असथिर नै भऽ पिछड़ए लगलनि। मुदा जी-जाँति कऽ माटिपर पएर रोपिते मनमे उठलनि, माएओ जीविते छथि, अपनो छी, तैपरसँ दूटा दुधमुहाँ बच्चा सेहो अछिए। तखनि परिवार किए उपटत? हँ, ई बात जरूर जे पुरुख-नारीक बीच बच्चा लेल माए भोजनक पहिल बखारी होइ छथिन। मुदा युग धर्मो तँ कहैए जे आजुक बच्चाक नसीबसँ माएक दूध कटि रहल अछि। तैयो तँ बच्चा जीविए जाइत अछि। तखनि ई बच्चा किएक ने जीति?

सोगाएल तपेसरक मुँह देखि माए -सुनायना- बोल-भरोस दइले घरसँ निकलि आबि कहलखिन-

"बच्चा, गाड़ीए पहिया जहाँति जीते जिनगी सुख-दुख अबैत रहैए। तइले सोगे केने की हेतह? भगवानक लीले अगम छन्हि। अखनि हम जीविते छी। हमरा अछैत तोरा कथीक दुख होइ छह!"

सिमसल आँखि उठा तपेसर माएक मुँहपर देलनि। हवामे थरथराइत दीपक टेमी जकाँ सुनयनाक छाती डोलैत। मुदा जहिना हवाक झोंककेँ सहन करैत दीप प्रज्वलित रहैत तहिना धैर्यक लौ सुनयनाक बोलसँ टपकल विचार सुनि तपेसरक मनक डोलैत जमीन थीर हुअ लगल। मनमे उठलनि, यएह माए पुरुख जानि अपन सहारा बुझै छथि आ अखनि सहारा बनि ठाढ़ छथि। कोढ़ीसँ -कलीसँ- फुलाइत फूल जकाँ तपेसरक मन फुलाए लगल। तखने पल्हनि मुँह उठा कऽ बजली-

"काकी, एतै आबथु।"

पल्हनिक बात सुनि सुनयना तपेसरपर नजरि दौड़ा सोइरीघर दिस बढ़ली। मनमे एलनि, ओना अन्हारघर साँपे-साँप रहैत मुदा हँथोरिओ थाहि कऽ तँ लोक अन्हारोमे जीविते अछि। सभ मिलि जौं लगि जाएब तँ बच्चा जरूर उठि कऽ ठाढ़ हेबे करत।

तपेसरक मनमे उठल, 'जाधरि साँस ताधरि आस।' अपना सभ बुते काज नै सम्हरत। डाक्टरकेँ बजेबनि। मुदा लगमे तँ ओहो नहियेँ छथि। जौं रोगीएकेँ लऽ जाए चाहब सेहो भारीए अछि। एक तँ तेहेन सवारी सुविधा नै दोसर तीनि-तीनि गोरेकेँ लए जाएब। ओतबे नै, अपनो सभकेँ जाइऐ पड़त। एक दिस अब-तबक स्थिति दोसर दिस सवारीक ओरियान आ डाक्टर ऐठाम पहुँचैत-पहुँचैत बँचती आकि नै। जहिना अमती काँट एक दिस छोड़बैत-छोड़बैत दोसर दिस पकड़ि लैत तहिना तपेसरक मन ओझरा गेल। कोनो सोझ बाट आँखिक सोझहामे पड़बे नै करैत। बेकल मोने उठि कऽ सोइरी घर पहुँच माएकेँ कहलक-

"माए...।" माए पछाति कोनो शब्द मुहसँ नै निकललनि।

तपेसरक बेकल मन देखि पल्हनि कहलखिन-

> "बौआ, एना मन छोट नै करू। जे करतूत अछि सएह ने अपना सभ करब। केकरो जान तँ नै ने दऽ देबै। जखनिसँ दुनू बच्चाकेँ छाती चटौलिऐ तखनि से कलपड़ल अछि। सभसँ पहिने दूधक ओरियान करू। अखनि महिंस-गाएक दूध पचबैबला नै अछि, केतौसँ बकरी कीनि आनू। ताबे केकरो बकरी दुहि कऽ लऽ आनू। एक तँ बकरीओ सभ तेहेन अछि जे अपनो बच्चा पालैक दूध नै होइ छै, मुदा जेकरा एकटा बच्चा हेतै ओहन कीनि लिअ।"

अशौच दुआरे दुनू जौआँ भाए-बहिनक -धीरज आ घुरनीक- छठियार नै भेल। ने कियो सोइरी सँठनिहारि आ ने केकरो मन कखनो थीर होइत जे नीक-अधलाक विचार करैत। ओना तीनूक -पल्हनि, सुनयनया आ तपसीक- मन हरिदम बच्चेपर रहै छेलनि मुदा कखनो काल नेकरमसँ अकछि मोने-मन सोचथि जे दुनूकेँ ॠण असुलए भगवान पठौलनि। जेते

ओकर ऋृण बाँकि छै ओते तँ असुले कऽ जान छोड़त। मुदा लगले मन घूमि जाइत जे विधातो भाग-तकदीरकँ नै बदलि सकै छथि। जौं दुनू बच्चा ऐ धरतीक सुख भोगए आएल हएत तँ नहियोँ सेवा-बरदासि करबै तैयो पानिक पाथर जकाँ जीवे करत। मुदा बच्चाकँ छोड़ि तीनूक -पल्हनि, सुनयना आ तपसीक- अपन-अपन जिनगी आ दुनियाँ सेहो छेलनि। पल्हनिए वेचारी की करितथि? एक तँ दस-दुआरी दोसर अपनो बाल-बच्चेदार परिवार तैपरसँ तड़िपीबा घरबला। धैनवाद बूढ़ी-सासु-कँ दियनि जे सुखाएलो-टटाएल हड़डीपर ने कखनो हाथ-पएर कामै होइत आ ने मुँह सापुट लैत। अखनो वएह रूआब जे केते दिन जीब तेकर कोन ठेकान। हजार कि लाख आकि नहियेँ मरब तेकर कोन ठीक। मुदा साँपक मंत्र जकाँ भरि दिन सुगिया -पल्हनि- सासुक नीक-अधला बात सुनैत रहैत मुदा कोनो बातक उतारा नै दैत। अपन सभ किछु बूझि सासु -झिंगुरी- मालिक जकाँ काजक समीक्षा हरिदम करैत रहैत जे कोन-काज केहेन उताहुल अछि। जेहेन जे काज उताहुल तइ काजकँ दोसर काज छोड़ि करए लगैत तँए सुगिया सासुक बातो कथा सुनि चुप्पे रहैत। तँए कि झिंगुरी हरिदम पुतोहुपर गरमाएले रहै छेली? केना रहितथि, जखनि सुगिया कोनो अँगनाक पवनौट, कोनो तीमन-तरकारी वा सिदहा आनि आगूमे देथि वा बैसलोमे टाँग पसारि जँतऽ लगैत तखनि वएह सासु ने असिरवाद दइ छेलखिन जे हमरो औरूदा भगवान तोरे देथुन। यएह ने परिवार छी जे हरिदम सुख-दुख, नीक-अधला, हँसैत-कनैत मस्तीमे चैनसँ चलैत रहए। झिंगुरीओक जिनगीमे तहिना भेल। एक्के सन्तानक -बेटा- पछाति विधवा भऽ गेली। अपना खेत-पथार तँ नै मुदा अदहा गाम -भैयारीक हिस्सा- तँ खानदानी सम्पति छेलै। जइसँ खाइ-पीबैक कोन बात जे दू पाइ बेटोकँ खाइ-पीबैले दैत रहली। भलहिं बेटा नसेरी किए ने भऽ गेलनि। की अखनो धरि बेटाकँ कहियो एकटा खढ़ उसकबए नै कहलनि। जौं माए-बाप अछैत बेटा सुख नै केलक तँ माए-बापक मोले की? ऐ बातकँ गीरह बान्हि झिंगुरी कहियो बेटाकँ कोनो भार अखनि धरि नै देने। भलहिं बेटा सहलोले किए ने भऽ जाए मुदा सिद्धान्तो तँ सिद्धान्त छी। ओकरो अपन महत छै। भलहिं करी वा नै करी। जौं से महत नै छै तँ बुधियार लोकक बेटा बुड़िबक केना भऽ जाइ छै।

दसदुआरी रहने सुगियाकेँ घरसँ बाहर एते काज करए पड़ैत जे दिन-राति रेजानिस-रेजानिस रहै छेली। साँझ-भोर, राति-दिन काज। केम्हरो जँत्ते-पीचैक समए तँ केम्हरो बिआउ करैक ताक। धैनवाद सुगीयेकेँ दी जे घिरनी जकाँ हरिदम नाचि काज सम्हारैत। तहूमे मइटुग्गर धीरज आ घुरनीक तँ सहजे माइए छथिन। दूध पिऔनाइसँ लऽ कऽ जाँति-पीचि देह-हाथ सोझ करऽ पड़ैत। दसदुआरी रहने दस दिस सेहो आँखि-कान ठाढ़ राखए पड़नि। जिनगीक काज सुगियाकेँ ऐ रूपे पकड़ि नेने जे दोसर दिस तकै नै दैत। मन कहैत जेकरा अपन माए जीबै छै स्त्री होइक नाते अपन चिलकाकेँ अपनो सम्हारि सकैए मुदा ऐ दुनू -धीरज आ घुरनी- केँ दुनियाँमे के देखनिहार छै? हमरा हाथे जनम भेल छै, जौं पैतपाल नै करबै तँ एकर परतवाए केकरा हेतै। भगवानक घरमे दोखी के हेतै। वेचारी दादी सुनयना छथिन मुदा ऐ उमेरमे दूध तँ नै छन्हि। सोलाहो आना बकरीए दूधपर तँ दूधकट्ठू भइए जाएत। जे बच्चा दूधकट्ठू भऽ जाएत ओकर छाती कहियो सक्कत हेतै। खेने-बिनु खेने सुगिया भरि दिन ओइ जंगली जानवर जकाँ नचैत जे बच्चाकेँ दूध पिआ, गर लगा सुता चरौर करए जाइत, तहिना।

अधवयसू सुनयना अपन राजा बेटा तपसीक दुखक बोझ देखि दिन-राति ओइ बोझकेँ हल्लुक बनबैले एकबट्ट करैत रहैत। जहिना युद्धभूमिमे अपन राजापर दुश्मनक अबैत तीर देखि सेनापति उपयुक्त तीर तरकससँ निकालि दुश्मनक तीरकेँ रोकैक प्रयास अंतिम साँस धरि करैत तहिना सुनयना तपसीपर अबैत तीर- 'भगवान केहेन डाँग मारलखिन जे जइ काजक लूरि पुरुखक हिस्सामे देबे ने केलखिन ओइ फाँकमे फँसा देलखिन। कोशिकन्हाक खेत जकाँ आड़ि-धूर मेटा बालुसँ भरि देलखिन। स्त्रीगण होइत हमहूँ तँ स्त्रीगणक सभ काज -बच्चाकेँ दूध पीऔनाइ- नहियेँ सम्हारि सकब। जौं एहेन फाँसे लगबैक छेलनि तँ आरो नम्हर लगा दुनू बच्चोकेँ माइए संगे नेने जइतथि। पुरुखक -बेटा- देह तँ खाली रहितै। मन होइतै चिड़ैक खोंता जकाँ परिवार बना रहैत नै मन होइतै लौका-तुम्मा लऽ दुनियाँमे घूमि-फीर जीबैत। जाधरि हम जीबै छी ताधरि माएक ममता पकड़ि रखितै। मुदा तहू बीच जौं पत्नीक सिनेह बेटा-बेटीक सोह जगितै तखनो तँ मन बौरेबे करितै! अनासुरती सुनायनाक मनमे

उठलनि, माया-मोहक लत्ती जेते दूर धरि चतरैए ओते दूर धरि मनुख तँ नै चतरत। मनुखक तँ बाढ़ि छै। तैबीच हम तपसीआक माए भेलिऐ, जेते धरि कएल हएत तेतबे ने करबै। आकि ओकरा दुखसँ दुखी भऽ अथबल बनि बैस कऽ कानब। माएक काज जेते दूर धरि छै ओइमे कलछप्पन नै करबै। परिवारे केकर छी केकरो नै छी? तखनि तँ मनुख रहत घरेमे। खाएत अन्ने, पीति पानिए। जाबे जीबै छी ताबे बुझै छी जे सभ किछु छी, आँखि मूनि देबै अन्हारमे हरा जाएब। फेर मन घुमलनि हमरा अछैत बेटाक आँखिक नोर देखब हाड़-चामक मनुखकेँ सहल जाएत? ओ तँ पाथरक नै छी जे केतौ पड़ल रहत। मनुखकेँ तँ चलै-फिरै, सोचै-विचारै, बुझै-सुझैक बखारी छै ओ तँ देखिए-सुनि कऽ चलत। दुनियाँ बेइमान भऽ जाएत भऽ जाह मुदा जहिना तपसीक माए छिऐ तहिना तपसी देखत। ओकरा मनमे कहियो ई नै उपकए देबै जे दुनियाँक संग माएओ पएर पाछू केलक। ताधरि तपसीक परिवारकेँ पकड़ि सम्हारने रहबै जाधरि बेकाबू नै भऽ जाएत। भगवान केलखिन आ दुनू पिलुआ उठि कऽ ठाढ़ भेल तँ जरूर परिवार फड़त-फुलाएत। अखनि बेकाबू कहाँ भेल हेन? अखनि तँ सम्हारैबला अछि। माटिक तरमे सजमनि-झुमनीक बीआ गारि दइ छिऐ, समए पाबि जहिना ओ जनमि कऽ ऊपर आबि धरतीसँ आसमान धरि लतरि जाइत अछि, मुदा ई तँ -दुनू बच्चा- माटिक ऊपर अछि। जौं समुचित सेवा भऽ जाए तँ जरूर कलशि कऽ गाछ बनत। आशा-निराशाक बीच सुनयनाक मन वृन्दावनक कदमक गाछपर झुलैत राधा-कृष्ण जकाँ झूलए लगलनि। ने अक चलनि ने बक। आँखि निहारि दुनियाँ दिस देखए लगली। दू-पत्ती-चारि-पत्ती सजमनि-झुमनी गाछक जे लत्तीक आशा अपनाकेँ ठाढ़ रखैत, चारू भाग जहिना छोट-छोट कड़चीक टुकड़ी गाड़ि ओकर रक्षा लगौनिहार करैत तहिना सुनयना फुड़फुड़ा कऽ उठि बड़बड़ेली-

> ''अनेर गाएक धरम रखबार।'' मुहसँ अनासुरती हँसी निकललनि।

पितृ-प्रमुख परिवारमे पिताक परोछ भेलापर ताधरि मातृ-प्रधान परिवार बनल रहैत जाधरि पुत्र पितातुल्य नै बनि जाइत। ओहुना किछु

काजमे मातृत्वे प्रमुख परिवार रहैत। एक तँ ओहिना बच्चाक पालन मातृ पक्षक काज बूझल जाइत तैपरसँ अखनि धरि तपसी माइएक आदेशक पालन करैत आएल, तँए धैनसन। मुदा तैयो टुटैत परिवार आ नव उलझन देखि मन ओझराए लगलनि। एते दिन खेती-पथारी करै छेलौं, दिन-राति ओहीमे लगल रहै छेलौं। आब तँ से नै हएत। एक तँ दिनोदिन माएक हूबा सेहो घटत दोसर बच्चा सभले बकरीसँ गाए धरि पोसए पड़त। ओहिना थोड़े हएत। कहुना करबै तँ खुऐनाइ-पीऐनाइ, दुहनाइ-गारनाइसँ लऽ कऽ ओगरवाहि धरि करए पड़त। खुट्टापर छोड़ि कऽ केतौ जाएबो मसकिल हएत। कुत्ता-बिलाइसँ लऽ कऽ साँढ़-बत्तू धरि उपद्रव करत। ओह! से नै तँ खेत बँटाइ लगा देब। जौं से नै करब तँ नै सम्हरत।

छह मासमे छह दिन कम। बच्चाकेँ जँतै-पीचैक समए होइते पल्हनि -सुगिया- हाँइ-हाँइ गाएक नाइदमे सानी-कुट्टी लगा विदा भेली। डेढ़िया टपिते बामा भागसँ दहिना भाग बिलाइकेँ टपैत देखलनि। मनमे सगुन अपसगुन हुअ लगलनि। जौं दहिनासँ बामा भाग जाइत तखनि ने अपसगुन होइत मुदा से तँ नै बामासँ दहिना टपल। सगुन बुझिते खुशी उपकलनि। मुदा लगले फेर तर्कक संग विर्तक, अतितर्क, अतिवितर्क हुअ लगलनि। मन औनाए गेलनि। पुरुखक कहब ने छियनि जे वामसँ दहिन टपने सगुन होइत, मुदा पुरुखक दहिन स्त्रीगणक वाम होइत आ वाम दहिन? प्रश्नक उत्तर नै पाबि मन ठमकि गेलनि। मुदा लगले सोचलनि, अनजान-सुनजान महाकल्याण। जे पूत हरबाहि गेल देव-पितर सभसँ गेल। अनेरे कोन ओझरीमे ओझराएल छी। जानि कऽ रोग बेसाहि लेब तँ दोख केकर हएत। मन हल्लुक भेलनि। मन हल्लुक होइतै दुनू बच्चा धीरज आ घुरनीपर नजरि बढ़लनि। दुनूक जनमक दिन गानए लगली। वरस्पति दिन पूस मास। आँगुरपर गनैत-गनैत पाँच मास चौबीस दिन पुरलनि। छह मासमे छह दिन कम। हिसाब जोड़िते मन मधुआ गेलनि। अकास-पतालक बीच हृदए नाचए-गाबए लगलनि। एक दिन बितने तँ उनतीस माघ हरा जाइत आ छह मासमे तँ छबे दिन कम रहल हेन। सकताइत-सकताइत बच्चा छहमसुआ भऽ गेल। माएओक पेटमे जे छह माससँ कम रहैए ओकर आँखि नै फुटै छै मुदा छह मास पुरलापर जे

जनमैए ओ तँ भगवतीक बेलक आँखि सन आँखि नेनहि अबैए। छबे दिन ने कम छै आँखिक गुणक सिरखार तँ आबिए गेल हेतै। फूलक कोढ़ी जकाँ पत्ती सभ जरूर निकलि गेल हेतै। अधखिल्लू फूल जकाँ सुगियाक मन हर्ष-विषादक बीच पड़ि गेलनि। पीपरक पात जकाँ हरिदम डोलैबला नै बड़क पात जकाँ भऽ गेलनि। ऐ दुनू बच्चाक माए तँ हमहीं भेलिऐ किने। अपन दादी -सुनयना- तँ पकले आम जकाँ छथिन। मुदा तैयो धैनवाद हुनके दियनि जे घर-अँगनाक काजक संग दुनू बच्चोकेँ सम्हारै छथि। ओना भैयो -तपेसरो- अपन पुरुखपना काज -खेती-पथारी- छोड़ि अँगने-घरक काजमे भरि दिन लगल रहै छथिन। ई तँ ओही वेचारेकेँ धैनवाद दियनि जे एहेन दुधमुहाँ बच्चाकेँ पोसि-पालि रहल छथि। दस दुआरी रहितो की कम करै छियनि। मन शान्त भऽ गेलनि। नजरि भगवान दिस बढ़लनि। भगवान दिस नजरि बढ़िते तामस लहरए लगलनि। कहैले भगवान छथि। सभपर एक्के रंग नजरि रखै छथि मुदा वएह कहथु जे केकरो-केकरो तेते दइ छथिन जे तौला-कराही घिनाइ छै आ केकरो-केकरो चुट्टियाह बँसवाड़ि जकाँ ओइध धरि कोकनि कऽ उपटि जाइ छै। जुगो तेहेन भऽ गेल जे जेहने पुरुखक किरदानी देखै छी तेहने मौगीक। जीबैओबला बेटा-बेटीकेँ कियो मोड़ीमे फेकैए तँ कियो नून चटबैए। फेर लगले मन अपना परिवार दिस घूमि नसेरी पतिपर पड़लनि। पतिपर नजरि पड़िते सासु-ससुरपर खौंज उठलनि। बुदबुदेली-

> ''बेटाकेँ बिगाड़ैमे जहिना बुढ़ियाक -सासु- किरदानी भेलनि तहिना बुढ़बाक। गाँजाक गूल सुनगबैत-सुनगबैत बेटो अपने जकाँ गजेरी भऽ गेलनि। असगरे की करब? घरसँ लऽ कऽ बाहर धरि खटैत-खटैत देह अकड़ि जाइए।''

तपेसर ऐठाम पहुँचिते सुनयनाकेँ बच्चा लग बैसल देखलनि। बाटक सभ बात बिसरि मुस्कीआइत बजली-

> ''काकी, छह मास पूरैमे छबे दिन कम छन्हि। आब दुनू दुनियाँ देखबे करतनि।''

पल्हनिक बात सुनि जहिना सुनयना अपन सभ किछु बिसरि बच्चाकेँ हृदैमे समा लेलनि तहिना तपेसर रोपल गाछीक फड़ देखि

विस्मित भऽ गेला। मनमे आनन्दक हिलोर उठि गेलनि। दुनूक -सुनयनो आ तपेसरो- मनमे सबुरक गाछ जनमि गेलनि।

अखनि धरि सुनयना पत्नीपर जेते ओंगठल छेली ओइमे कमी करैक एहसास भेलनि। छह मसुआ बच्चा भऽ गेल। दूधक संग अन्नो चाटत। दालिक झोर बना खुआएब। मुदा लगले मनमे उठलनि जे दालिओ तँ केते रंगक होइ छै। सभ एक्के रंग थोड़े होइ छै। कोनो गलनमा -सुपाच्य- होइ छै तँ कोनो गरिष्ठ। सबहक अपन-अपन चालि-ढालि -गुन-धर्म- होइ छै। मन औना गेलनि। औनाइत-औनाइत मन खेरही दालिपर गेलनि। जेहने आकार तेहने गलनमा। अखनि कि कोनो रोटीपर लठगर खुआएब। पत्नीकेँ कहलखिन-

"कनियाँ, सभसँ नीक खेरहीए दालि हएत?"

"हँ। जेना-जेना देह सकताइत जेतै तेना-तेना खोराको बढ़बैत जैहएथिन। आब अपनोसँ ओरिया-ओरिया जँतबो-पिचबो करिहथिन आ तेलो-कुर दिहएथिन।"

पत्नीक सभ बात सुनायना सुनबो नै केलनि आकि बिच्चेमे मन उड़ि कऽ तपेसरक जिनगीपर चलि गेलनि। वेचाराकेँ दुनियाँक कोनो सुख नै भेल। पाँचो बर्ख कनियाँ संग नै रहल। कोन जनमक पाप बिषेलै से नै जानि। फेर मन उनटि अपनो दुनू परानीपर गेलनि। माएओ-बापक कएल नीक-अधला काजक फल बेटा-बेटीकेँ पड़ै छै। जेना-जेना विचार उठनि तेना-तेना मुँहक सुखी क्षीण -उदास- होइत जानि। कहीं हमरे सबहक -माए-बापक- कएल पाप ने तँ वेचाराक ऊपर डिरिआइ छै। फेर मन आगू बढ़ि समाज दिस बढ़लनि। एहेन बेर-विपति की तपेसरेपर पड़ल अछि आकि आनो-आनकेँ पड़लै।

सोगमे पड़ल तपेसरक मन अपन गिरैत परिवारपर अँटकल। जेते उपजा-बाड़ी होइ छेलए बँटाइ लगौने दूधक डारही होइए। एक तँ समैक कोनो ठेकान नै तैपर लोढ़ि-बीछि कऽ सेहो लइए जाइत अछि। मगर खरचा तँ बढ़िए गेल। अपनो काज-उद्यम छोड़ि भरि दिन अँगने-घरक काजमे लटपटाइत रहै छी। छोड़िओ केना देबै? कोनो कि भेड़ी-बकरीक बच्चा छी जे पेटसँ निकलल आ कुदए-फानए लगल। मनुखक बच्चा तँ

ताड़क गाछ जकाँ होइत अछि। जेकर जड़िए बन्हैमे केतेक समए लगैए। ई भिन्न बात जे वोनमे जैठाम ताड़क गाछ ने दोसरकँ रोकैए आ ने अपने रूकैए।

भक्क टुटिते सुनयना पल्हनिकँ पुछलखिन-

''कनियाँ, की कहलिऐ से नै बुझलौं?''

पल्हनि कहलकनि-

''यएह कहलियनि जे आब अपनो सभ काज सम्हारि सकै छथि।''

सभ काज सम्हारब सुनि सुनयनाक मनमे परिवार नाचि उठलनि। सोचए लगली जे जखनि परिवारमे लोकेक बाढ़ि ठमकि गेल तखनि धने-सम्पति लऽ कऽ की हएत? पुन: विचार घुमलनि। जौं भगवान दुनूक औरूदा देथिन तँ धन-सम्पति कमा लेत। कमाइक बात मनमे उठिते अपन काज दिस नजरि बढ़लनि। बिसवास जगलनि जे जखनि पिलुआ सन दुनू छल तखनि तँ पालि लेलौं। आब तँ सहजे छह मसुआ भऽ गेल। हमरा अछैते बेटा -तपेसर- कानए, ई केहेन हएत! पुन: मनमे उठलनि, अपने पुरना साड़ीक बिष्टी पोताकँ बना देब आ पोतीकँ घघड़ीओ सीबि देबै। उमेरे बेसी भऽ गेल तँए की। जाबे देहमे हूबा अछि ताबे तँ खटबे करब जहन हूबा टूटि जाएत तहन बूझल जेतै। तँए की बेटाकँ कानए देब। दुनियाँमे कियो ओकर नोर पोछैबला नै छै? जौं नै छै तँ सुगीये -पल्हनिए- किए एते करै छै। ओकरा हमरा परिवारसँ कोन मतलब छै। मुदा छै। जेकरामे प्रेम छै ओकरे दुनियाँमे सभ छै।

दुनू बच्चाकँ जाँति पल्हनि बजली-

''आब जौं बकरीक दूध नहियोँ हेतनि तँ गाएओक दूधसँ काज चलि जेतनि। आब ओछाइनपर बच्चा अपनो उनटै-पुनटैले जोर करतनि। आस्तेसँ कर घुमा दिहथिन ओना बेर-कुबेर हमहूँ अबिते रहब। भैयाकँ कहि दथुन जे काल्हि पटोर पहिरि अँगनासँ निकलबनि।।''

चिन्तामे डुमल तपेसर अपनो सोचैत आ दुनू गोटेक -माए आ पल्हनि- गपो-सप्प सुनैत। ओना किसानी बुधि तपेसरकेँ, तँए जेते मन काज दिस दौगैत ओते गप-सप्प दिस नै। अखनि धरिक जे जिनगी रहलनि ओइमे एकाएक मोड़ एलनि। १०८दानाक तुलसीमालाक जप जकाँ तपेसरक दिन-राति अपन घर-गिरहस्तीक काजक बीच बित जाइत। ओना जहिना मनक बिसवासकेँ आँखि नै झूठला सकैत तहिना तपेसरक हृदैमे माए आ पल्हनि, चौपड़ि मारि बैसल रहनि तँए, चिन्ता ओते नै जेते हेबाक चाहियनि।

दुनू बच्चाकेँ जाँति पल्हनि हाथ-पएर सोझ कऽ टाँग पकड़ि उल्टा झुला चानिमे काजरक टीक्का लगा मुस्की दैत सुनयनाकेँ कहलखिन-

''काकी, भैयाकेँ बिआह करा दियनु?''

बिआह सुनि सुनयना सुख-दुखक -नीक-अधलाक- बीचक सरोवरमे पैसि सोचए लगली। हमरे आशा केते दिन हेतै। चौथापनमे पहुँच गेल छी, जेते दिन जीबै छी जीबै छी। मुदा ओकर -तपेसरक- जिनगी तँ से नै छै। अखनि ओकरा की भेल हेन। बच्चोक कोन ठेकान अछि। जुआनो-जहान चलि जाइ छै। एक तँ मनुक्खे माटिक काँच बरतन छी तैपर ओ -दुनू बच्चा- तँ आरो गिलगर माटि जकाँ अछि। नीक जकाँ सुखबो ने कएल अछि। एक रती कोनो चीजक टोना लगतै टन दनि चलि जएत। मुदा परिवार तँ पुरुख-नारीक संयोगसँ चलैए। जाबे दुनूक संयोग नै हएत ताबे दुनियाँ -सृष्टि- आगू मुहेँ केना ससरत? बातकेँ टारैत सुनयना बजली-

''कनियाँ, कहलौं तँ नीके बात मुदा साल भरिक बीच केना एहेन गप करब।''

सुगियाक बात तपेसरो सुनने। तरे-तर मन बजैले ओढ़ मारै मुदा बुधि रोकैत रहनि। केतबो बुधि रोकलकनि तैयो तपेसरकेँ बजा गलनि-

''कनियाँ, अहुँ नीकेले कहलौं, कटै नै छी मुदा जौं दुनू बच्चा उठि कऽ ठाढ़ हएत आ दुनियाँ दिस डेग बढ़ौत तखने...! एक तँ ओकरा मइटुग्गर बूझि कियो अपन बेटा-बेटीकेँ ऐ घर आबै ने

दैत तैपर जौं दोसर बिआह कऽ लेब तखनि तँ आरो कियो अपना बेटा-बेटीकेँ सतमाए लग आबए नै दिअ चाहत।''

तपेसरक बात सुनि पल्हनि बजली-

''भैया, हिनका सन-सन समाजमे केते पुरुख छथि। समाजो तँ एकरा अधला नै बूझि उठा लेने अछि। रस्ता बना देने अछि तखनि किए एना बजै छथि।''

सुगियाक बात सुनि जहिना तपेसरक मुँह बन्न भऽ गेलनि तहिना सुनयनाक। मोने-मन सुनयना सोचए लगली, कोनो नवकनियाँ -जेकरा दुनियाँदारीक थोड़ ज्ञान छै- परिवारमे सासु-ससुर, पति, भैंसुर-दिअर, ननदिक बीच अबैत। ओकरा काँच कड़ची जकाँ जइ रूपे लीबा कऽ बनौल जाइत ओइ रूपक बनैत। किए लोक सतमाएकेँ दोख लगबैए। ओहो तँ मनुक्खे छी। जौं ओकरा मनुखक रस्ता छोड़ा देब तँ ओ मनुख बनत केना? मुदा किछु मनुक्खो तँ ओहन होइत जे जेरमे रहए नै चाहैत? हँ मुदा ओहन सतमाइए टा तँ नै होइए, आनो-आन होइए।''

सुनयनाक मन ओझरा गेलनि, तँए चुप भऽ गेली।

तपेसरक मनमे उठलनि जिनगी की? जौं जीबैले जिनगी तँ जीबैले अनेको तरहक साधनक जरूरति सेहो होइत। परिवारिक जिनगी लेल पुरुख-नारी दुनूक जरूरति होइत अछि। जौं से नै हएत तँ परिवार केते दिन परिवारक रूपमे ठाढ़ रहत। अखनि बूढ़ माएक आशापर दुनू बच्चा जीब रहल अछि जखनि कि हुनको -माएओ- भानस-भात करए, सेवा-टहल करए लेल टहलूक जरूरति छन्हि। जौं ओहो मरि जेती तखनि अपनो-सभकेँ के भानस कऽ खुऔत। अपने खाइक ओरियान करब आकि भानस करब। जौं भानसे नै हएत तँ खाएब केना? जौं खाएब नै तँ जीब केना? जौं मनुक्खे नै जीवित रहत तँ परिवार केना बनल रहत? मुदा मनुखो तँ अजीव होइत अछि। कियो अपन घरमे लागल आगि मिझबै पाछू अपनो जरि-पकि जाइत तँ कियो हँसि-हँसि घरमे आगि लगबैए। मुदा अपना ऐठाम तँ से नै अछि। अनजानमे भलहिं जे भऽ गेल हुअए मुदा जानि कऽ तँ किछु नै भेल। पल्हनिक विचार तँ अधला नहियेँ छन्हि। ओहो वेचारी तँ दुनू बच्चाक मुहेँ देखि बजली। अपन जानि बजली।

हुनको मनमे कहाँ छेलनि जे दोसर स्त्री कुल्टे हेतनि। सुपात्रो भऽ सकैए। खैर जे हौ, मुदा परिवारमे जरूरति तँ जरूर अछि। भलहिं अखनि माए सम्हारि रहली हेन मुदा परोछ भेलापर -मुइलापर- तँ जरूरति हेबे करत। फेर मनमे उठलनि जौं कहीं माएक सोझहेमे बेटी भानस-भात करै जोकर भऽ जाएत तखनि...। बिआह भेलापर ओहो सासुर जाएत। ताधरि पुतोहुओ तँ हएत।

साल लगि गेल। ऐबेर अदरा पावनि रीब-रीबेमे रहि गेल। माघमे तेहेन मारूख हवा चलल रहै जे एकोटा आमक गाछ मोजरबे ने कएल। धिया-पुताक कोन गप जे सियानो सभ आमक मास बुझबे ने केलक। जहिना बिनु बरक बरियाती नै होइत तहिना बिनु आमक अदरा पावनिए की? पुरुखे रहने ने मौगी गिरथानि बनैत, बिना पुरुखे तँ राँड़-मसोमात कहबैत। अंतिम जेठमे मौनसुनी तँ नै बिहड़िया बर्खा भेल। बर्खा भेने धरतीक रंगे बदलि गेल। आन साल जकाँ ने बेसी गरमी पड़ल आ ने बाध-वोनक रूप बिगड़ल। हरिअर घाससँ बाध सुग्गा पाँखिक साड़ी पहिरल जकाँ सुन्नर लगैत। अगता हाल भेने पूबरिया घरक पछुआरक दाबा परहक गेनहारी सागक गाछ सुनयनाक जनमि गेलनि। बीसे दिनमे आँगुर भरि-भरिक भऽ गेल। कनौजरि छोड़ै जोग भऽ गेल। काल्हिए बीड़ार देखि सुनयना विचारि लेलनि जे काल्हि एकरा -सागकेँ- रोपि लेब। अखनि रोपलासँ पाँच दिन पछुएबे ने करत मुदा कनौजरि तँ ठीक रहत। तहूमे पछबा थोड़े बोहैए जे रोपलापर एकोटा लटुआएत। दुनू साँझ पानि देबै लगले लागि जाएत। कनी-मनी रौदमे अलिसाएत तँ सेहो रातिक ठंढमे उठि कऽ ठाढ़ भऽ जाएत। जौं अखनि नै रोपि लेब तँ भदबारिमे तीमनक दिक्कत हएत। फेर मनमे उठलनि, भदबारिक साग! तत्-मत् करिते रहथि आकि मनमे उठलनि पोरो-पटुआ साग ने भदबारिमे कफाह होइए सभ साग थोड़े होइ छै। जहिना जाड़मे सेरसो-तोड़ी झँसगर होइए, चैत-बैसाखमे पोरो-पटुआ, तहिना ने भदबारिमे गेनहारी-ठढ़िया होइए। मनमे खुशी भेलनि। मनमे चमकलनि गेनहारीक रूप। हरिअर साड़ीसँ सज्जित पात, तहिक बीच लाल डाँटक पाढ़ि, धरतीपर ओलरि मस्तीक आँखिसँ दुनियाँ दिस देखैत। अपन जिनगी दोसराक सेवा लेल अरोपि बेर-बेर मुड़ी कटला पछातिओ पुन: मुड़ी पैदा कऽ सेवा लेल इशारा करैत।

जहिना मुरगी चूजाक संग खोपसँ निकलि ओचौन बाड़ी-झाड़ीमे चरौर करैत, बोलीओ सीखैत आ दुनियाँ देखए जाइत तहिना दुनू बच्चा धीरज-घुरनीक संग सुनयना लोटामे पानि नेने पछुआर दिस विदा भेली। दावा लग पहुँच ठाढ़ भऽ गेनहारीक बीराड़ देखिते मन पड़लनि भीतमे साटि कऽ राखल गुरमीक बीआ। आँखि उठा कऽ देखलनि तँ चक-चक करैत बीआ। बीआ देखि मन पड़लनि जे गुरमीओ रोपैक समए आबि गेल। मारे बीआ अछि, एते थोड़े अपने रोपब। अनको देबै। गुरमी मनमे रहबे करनि आकि दुनू बच्चा दिस तकली। गुरमीक कोमलता मनमे अबिते मुहसँ अनासुरती निकललनि-

''बौआ, आइ साग रोपि दइ छी काल्हि गुरमीओ रोपि देब।''

दादीक बात सुनि धीरज बाजल-

''कोन गुलमी?''

भीतमे साटल गुरमीक बीआ आँगुरसँ देखबैत सुनयना बजली-

''ओ बीआ गुरमीक छी। जहिना अहाँ दुनू भाए-बहिन बच्चा छी तहिना ओहो बीआ छी। ओकरा खुरपीसँ माटिकँ खुनि रोपि देबै। पाँच-छह दिनमे गाछ जनमि जाएत। जहिना अहाँ दुनू गोरे हमरा एतेटा हएब तहिना ओहो बढ़ि कऽ फड़ए लगत।''

दादीक बात सुनि घुरनी ठुनकैत बाजल-

''गुलमी लेब। गुलमी लेब।''

घुरनीक ठुनकबपर धियान नै दऽ सुनयना लोटाक पानि सागक गाछपर छीटिलनि। पानि छीटैत देखि घुरनीओ चुप भऽ गेल। लोटा रखि गाछ निहारि कऽ देखलनि तँ बूझि पड़लनि जे एक दिससँ उखाड़ैबला सभ गाछ नै अछि। से नै तँ छोटकाकँ बैरा बड़का उखाड़ब। चारि दिन पछाति छोटको रोपाउ भऽ जाएत। फेर मन पड़लनि जे एक डेढ़ धूर करीबमे रोपब। चारि-पाँच डेग पूबे-पछिमे आ चारि-पाँच डेग उत्तरे-दछिने। एक-एक बीतपर रोपब। मोने-मन हिसाब जोड़ि बीआपर नजरि दैते बूझि

पड़लनि जे चारिओ हिससँ कम्मे गाछ लगत। खैर, भगवान सभ चीज अहिना देथुन जे अपनो खाए आ दोसरोकेँ दिऐ।

निहुरि कऽ सागक गाछ उखाड़ए लगली। तैबीच दुनू भाए-बहिन - धीरज-घुरनी- एक्के गाछपर हाथ दऽ उखाड़ए चाहलक। एक-दोसराक हाथ-हटबैक कोशिश दुनू करए चाहलक। हाथ पकड़ि दुनू कटौझ करए लगल। दुनूक कटौझ नै छोड़ा सुनयना हाँइ-हाँइ छेँटगरहा गाछ उखाड़ि कहलखिन-

"चलै चलू। भऽ गेल।"

आगू-आगू दुनू बच्चा आ पाछू-पाछू सुनयना आँगन एली। आँगन आबि बाटीक पानिमे गाछक जड़ि धोय बाटीएमे रखि देलखिन। रोपाउ जगहपर जनमल घासकेँ उखाड़ि कातमे फेक ओसारक चारसँ खुरपी उतारि बीत-बीत भरिपर छअ मारि-मारि दड़ी बनबए लगली। गोर दसेक दड़ी बनबिते दुनू भाए-बहिन हाथसँ खुरपी छीनए लगलनि। काजकेँ बाधिक होइत देखि सुनयना दुनू बच्चाक हाथ छोड़ा, बीच आँगनमे खुरपी फेक देलनि। शंका रहनि जे खुरपी ने लागि जाइ। दुनू बच्चा खुरपी आनए दौगल तैबीच ओ बाटीसँ गाछ निकालि हाँइ-हाँइ रोपए लगली। दुनू बच्चा खुरपी पकड़ि फेर छीना-छीनी करए लगल। हाथमे खुरपी लगैक डर फेर भेलनि। दसो दड़ी रोपि बाल्टीन लऽ पानि आनए कल दिस विदा भेली। दुनू बच्चा खुरपी छोड़ि पाछू-पाछू दौगलनि। पानि आनि लोटासँ रोपलाहा गाछमे पानि दिअ लगली। फेर दुनू लोटा छीनए लगलनि। हाँइ-हाँइ पटा लोटा दऽ देलखिन। फेर दुनू लोटा छीना-छीनी करए लगल। तैबीच खुरपी आनि दड़ी खुनए लगली। दुनू बच्चाकेँ देखि बौआए लगली। खुरपी लऽ दड़ी खुनब कि रोपब आकि पटाएब।

अढ़ाइ बर्ख बित गेल। दुनू भाए-बहिन दादीओ आ पितोसँ बाजब सीख लेलक। दुनूक बोलो फरिछा गेल। सुपुट बोल निकलए लगल। पियास लगलापर पानि आ भूख लगलापर भात-रोटी बाजए लगल। बजरूआ बच्चा जकाँ मोबाइलसँ गप, छुड़ी, पिस्तौलक खेलौना आ छुड़छुड़ी फटाका फोड़ब नै बुझैत मुदा तैयो गमैआ बच्चाक जिनगी जरूर जीबए लगल। गाम-घरमे जे गति विधवा, निस्सहायक होइत से गति

मइटुग्गर धीरज आ घुरनीक परिवारमे नै छेलै। गाम-घरमे गरीब मइटुग्गर, बपटुग्गरक प्रति सियानोक नजरि विषैला होइत। विधवाकेँ डाइनक संग अशुभ बूझल जाइत तहिना दुखताहसँ घृणा आ मइटुग्गर-बपटुग्गरसँ सेहो कएल जाइत अछि।

पानिक बाल्टीन नेनहि सुनयना कलपर पिछड़ि खसि पड़ली। ओना देहमे चोट लगलनि मुदा माथ उठले रहि गेलनि। ईंटा चोटसँ दहिना गट्टा टूटि गेलनि। तत्काल चोट तँ तेहेन नै बूझि पड़लनि मुदा गट्टा फुलब शुरू भऽ गेलनि। तपेसर बाँसक पात आनए गेल रहए। ओसारपर ओछाइन खसा एक्के हाथे सुनयना ओछा पड़ि रहली। ओछाइनेपर दुनू बच्चा बगलमे बैसल। पात लऽ कऽ अबिते माएकेँ सूतल देखि तपेसर पुछलकनि-

“माए, सूतल किए...?”

नोर पोछि सुनयना उत्तर देलखिन-

“बौआ, कलपर खसि पड़लौं।”

खसैक नाओं सुनि तपेसर चमकि कऽ पुछलकनि-

“चोटो-तोटो लगलौं?”

“ईंटापर कनी चोट लगि गेल।”

लग आबि तपेसर गट्टाक फुलल देखि गुम भऽ गेला। फुलबक हिसाबसँ भरिसक टूटि गेलै। मन चनकि करेज दरकि गेलनि। मनकेँ थीर करैत बजला-

“डाक्टरकेँ बजौने अबै छियनि। दबाइ देथुन नीक भऽ जेमे।” कहि कलपर पहुँच हाथ-पएर धो, अंगा पहिरि तपेसर विदा भेला। आँगनसँ निकलिते मनमे उठलनि जहाँ धरि पार लागत तहाँ धरि तँ करबे करबनि। जखनि जिनगीएक कोनो ठेकान नै अछि, कखनि की भऽ जाएत तेकर कोन ठीक। अपने बाँसपर चढ़ै छी जौं ओतैसँ खसि पड़ी तखनि की हएत? चिन्ता बढ़ए लगलनि।

डाक्टर संग आबि तपेसर माएकेँ कहलखिन-

''माए, जेना जे भेलौ से सभटा बात डाक्टर साहैबकेँ कहुन।''

सुनयनाक बात सुनि डाक्टर पलस्तर कऽ देलखिन। फीस लऽ चलि गेला।

गाएकेँ पानि पीआ तपेसर बाँसक पात टोनियाबए लगला। मनमे उठलनि काजक बोझ। एक तँ ओहिना दिन-रातिमे एक्को छन निचेन नै होइ छी तैपर माएक गट्टा टुटब तँ आरो काज बढ़ा देलक। छोड़ैबला कोन अछि। गाएकेँ खुएनाइ-पीएनाइ, घर-बाहर केनाइ छोड़ि देब से नै बनत। एक तँ लछमी दुआरपर कलपती दोसर बच्चाक माए तँ वएह छी। अखनि की भेल दू-अढ़ाइ बर्खक अछि, जौं ओकरा कनीओं कऽ दूध नै हेतै तँ सक्कत छाती केना बनतै। अपने नै हएत तँ नै हएत। माएओ तँ तहिना भऽ गेल। एक तँ बुढ़ाड़ी तैपर जौं पाबोभरि दूध नै हेतै तँ बुढ़ाड़ीक हाड़ केना जुटतै। एते दिन दुनू बच्चेक ताक-हेर करए पड़ै छल आब माएओक तँ करए पड़त। उपजा-बाड़ी तँ तेहेन होइए जे पार लागब मोसकिल भऽ गेल अछि। रौदी भेने ऐबेर आरो संकट बढ़ि गेल। पछिले माससँ बेसाह लगि गेल। पाइ-कौड़ीक कोनो दोसर उपए नै। हे भगवान! कोन जनममे चूक भेल जे चर्मरोग जकाँ सौंसे देह एकबट्ट भेल अछि! मुदा, की चिन्ता केने दुख भागि जाएत? पत्ता टोनि कुट्टी काटए लगला। मन पड़लनि बाँसक पातक कुट्टी। एक तँ लगहरि गाएकेँ बाँसक पात खुअबै छी। मुदा उपए की? जौं दू मुट्ठी हरिअरी नै हेतै तँ नारक कुट्टी केना खाएत। अपने घास आनए जाएब से ओते पलखैत रहैए। गाएक नादिमे कुट्टी लगा माए लग आबि बजला-

> ''माए, चिन्ता-फिकिर नै कर। दिनक दोख छेलै, भेलै। तोरा कोन चीजक कमी छौ। हमरा सन बेटा, दूटा पोता-पोती लगेमे छौ तखनि तोरा कथीक दुख।''

भरभराएल स्वरमे सुनयना कहलखिन-

> ''बौआ, आँखिक सोझमे तोहर दुख देखि छाती छटपटाइए। जेहो कोनो काजमे संग-साथ दइ छेलिअ सेहो आब हएत।''

माएक बात सुनि तपेसर अवाक भऽ गेल। बोल बन्न भऽ गेलै। मनमे उठलै रतुका सिदहा। बेर टगि गेल। केना राति चुल्हि चढ़त। बिनु खेने केकरो नीन हेतै। जे कनी-मनी हाथमे छेलए सेहो दबाइए-दारूमे चलि गेल। एना भऽ कऽ कहियो हाथ खाली नै भेल छेलए। ने तँ पचासे रूपैआ दुआरे डाक्टर साहैबकेँ एना कहितियनि। तरे-तर छाती डोलए लगलनि। आगू नाथ ने पाछू पगहा। माएकेँ कहलनि-

''माए, खेत बेचने बिना एक्को दिन पार लगब कठिन भऽ गेल। से...।''

बेटाक बात सुनि सुनयना चुपे रहली। मनमे उठए लगलनि घर-परिवार तँ ओकरे छिऐ। केना हँ आकि नै कहबै। हमरा बुते की हेतै। धारक बेग जहिना भौर लैत तहिना सुनयनाक मन भौर लिअ लगलनि। एक-एक पाइ कम भेने घर खसैत आ एक-एक पाइ जमा भेने उठैए। एक-एक कट्ठा जौं बिकाइत गेल तँ निरभूमि होइमे केते दिन लगत। एक दिस परिवारक खर्च दोसर दिस समैक मारि तैपर जेते सम्पति कमत ओते तँ कमे होइत जाएत। माएकेँ चुप देखि तपेसर बजला-

''जाइ छी, चौरी खेत बेचैक गप-सप्प करए।''

खेत बेचैक बात करए तपेसर विदा भेला। आँगनसँ निकलिते मनमे उठलनि सुपतोसँ कम दाम देत। जहिना गड़ामे उत्तरीबलाकेँ कौआसँ खैर लुटौल जाइत तहिना ने हएत। मुदा लगले मन सकतेलनि, बजला-

''तोहर कोन दोख। मन-पेट काटि लोक घर बनबैए आ बिहाड़िमे उड़ि जाइ छै तइमे बनौनिहारक कोन दोख।''

सबुर भेलनि डेग आगू बढ़ौला। दुनियाँ बड़ीटा छै। जौं भगवान हाथ-पएर दुरूस रखने रहता तँ कहुना नै कहुना जिनगी गुदस कइए लेब। मुदा आइक जे परिस्थिति अछि ओकरा छोड़ि कऽ भागब? भागब तँ कायरता हएत। कोन मुँह लोककेँ देखाएब। हमरा सन-सन ढेरो लोक अछि। लगले मन उनटि गेलनि। जहिना गाममे केतेको वृत्तिक लोक होइत अछि तहिना गामोक अनेक रूप होइत। एक्के गाम केकरो लेखे विद्वानक होइत तँ केकरो लेखे मुरुखक। केकरो लेखे शराबी-जुआरीक

होइत तँ केकरो लेखे बेइमान-शैतानक। तँए कि आमक गाछमे तेतरि फड़ि जाएत आ तेतरि गाछमे आम? सभकेँ अपन-अपन गुण-स्वभाव आ चलैक रस्ता होइ छै। कियो फटेहाल जिनगी पाबि जीबैए आ कियो सुभितगरसँ जीबैए। एकर माने ई नै जे फटेहाल जिनगी जीनिहार पतिते भऽ जाए। हँ, होइतो अछि। मुदा जेकर जेहेन विचार तड़गर रहैए ओ ओहन जिनगी बना जीबैमे आनन्द प्राप्त करैए। आनन्दे प्राप्त करब तँ उदेस होइत अछि। कियो तत्व-चिन्तनमे समए लगबैत तँ कियो दिन-राति लुचपत्री केने घुरैत। एहनो-एहनो तत्व चिन्तक ऐ धरतीपर भेल छथि जे दोहरा-तेहरा कऽ जिनगी मांगि तत्व-चिन्तन करैत रहला। ऐ असीमित भूमाकेँ, कठिन मेहनतेसँ जानल आ ताकल जा सकैए। टोलक अंतिम छोड़पर पहुँचिते तपेसरकेँ कलकत्तासँ आएल खुशीलाल पुछलकनि-

''भाय केतए जाइ छी?''

खुशीलालक बात सुनि तपेसर ठमकि गेला। जहिना खुशी मनमे मधुआएल बोल पनपैत तहिना दुखी मनमे सिनेहक बोल। कनीकाल चोकरियाएल ठोर, थरथराइत पिपनी रूपमे ठाढ़ भऽ मिरमिराइत तपेसर बजला-

> ''बौआ, विपतिमे पड़ल छी। माएक हाड़ टूटि गेलनि। पलस्तर तँ करा देलयनि। मास दिन पछाति पलस्तर कटतनि। तैबीच पथ-पानिक संग-संग दबाइ-दारू सेहो चलतनि। केते कहबह?''

''भैया, हमहूँ अही समाजक बेटा छी। जेते शक्ति अछि ओते मदति करब। साल भरिपर चारि-पाँच हजार रूपैआ लऽ कऽ कलकत्तासँ आएल छी। अखनि जेते पाइक काज अछि लिअ छह मासमे बिना सूदिक घुमा देब। अखनि अहूँक काज चलि जाएत आ कनी दिके कि सिके अपनो चला लेब।''

बिनु सूदिक रूपैआ सुनि तपेसरक मनमे खुशी आएल। मुदा लगले मनमे भेल जे बेथा सुनि खुशीलाल औगुता कऽ ने तँ बजला। जहिना ओ बजला तहिना की हमहूँ करब। जहिना देहमे रोग सन्हियाइते रसे-रसे पसरए लगैत तहिना तँ अखनि अपनो अछि। छह मासक समए दइ छथि

मुदा ओरियान हएत। दिन-दिन खरचो बढ़बे करत जखनि कि आमदनीक कोनो जोगार नै देखै छी। तखनि केना लेब? बजला-

''बौआ, दू कट्ठा खेते लऽ लैह।''

खेतक नाओं सुनि खुशीलाल सहमि गेला। एक तँ वेचारे विपतिक मारल छथि। तैपरसँ खेत लेब। करेज थीर रहतनि? जखनि करेजे थीर नै रहतनि तखनि तँ आरो सोग बढ़बै करतनि किने। कहलखिन-

''भ... इ... आ...।''

बजैत-बजैत आँखिमे नोर आबि गेलनि। पुन: बजला-

''छह मासक बदला दू-चारि मास पछाइते देब।''

बिनु सूदिक रूपैआ तपेसरक मनकेँ तड़का देलकनि। मनमे चमकलनि सूदि प्रथा। जैपर दुनियाँक बैंक ठाढ़ भऽ नंगटे नचैत धनीकक शासनक -सत्ताक- फुलवाड़ीक शोभा बढ़ौने अछि। जइसँ देशक उन्नति -मनुखक कल्याण- मुँहक बोल मात्र रहि गेल अछि। तैठाम समाजमे...। जइ समाजकेँ सूदि दू भागमे बाँटि देने अछि- सूदिखौक आ सूदिदार। बैंकक सूदि कम होइ छै मुदा छबे मासमे मूल धन बनि सूदि पैदा करए लगै छै। बियाजक बंश दुनियाँमे पसरि गेल अछि। जखनि कि समाजक सूदि एकहरफी चलै छै। भलहिं महाजनक बोही गीता-रामायणक थाकमे रहि पारसमणि जकाँ बोहीओ गीता-रामायण बनि जाए। देन-देनक सीमा-सरहद तोड़ि गीता-रामायणपर हाथ रखैत खौदकाक घराड़ीक रजिष्ट्रीक समए बना लैत। लगले मन घूमि अपन समस्यापर एलनि। छोट भाए जकाँ खुशीलालकेँ कहलकनि-

''बौआ, लोकक लाइगमे लोक अही दुआरे बसैए जे सुख-दुख संग मिलि जीब। टुटल सीढ़ी जकाँ अखनि परिवारक स्थिति बनि गेल अछि। कोहुना कऽ एकटा पएर रौपे छी तँ दोसर टूटि जाइत अछि। एक्को डेग ससरब कठिन भऽ गेल अछि। जेना बूझि पड़ैए जे पानि-बिहाड़ि, पाथर, ठनका सभ संगे आबि गेल

अछि। जिनगीक कोनो ठेकान नै देखि रहल छी। जहिना पानिमे नाव खेबनिहारक लग्गी थाह नै लैत तहिना भऽ गेल अछि।''

खुशीलाल कहलखिन-

''भैया, लोकेक काज लोककेँ होइ छै।''

तपेसर बजला-

''बेस कहलह। मुदा लोकोक बीच खाढ़ी बनल अछि। तोरासँ सात कछे बेसी सम्पति अछि। जखनि दुखेक जिनगी भगवान देलनि तखनि ओइसँ केते पड़ाएब। जीता-जिनगी आँखि केना मूनि लेब। मुदा तोड़ा पाबि छाती सूप सन भऽ गेल। जहिना पानिमे डुमैत चुट्टीकेँ खढ़क आशा होइत तहिना भेल। एकटा संगी भेटल। मुदा दुखो असान नै अछि। समैया नै बरह-मसिया अछि। तोरो कहबह जे जखनि एते मेहनति कऽ कमाइ छह तँ पाइकेँ राइ-छित्ती नै करिहऽ। अखनि जे खेत बेचै छी लऽ लैह। फेर जौं बेचब तँ तोरे देबह। मरिओ जाएब तैयो तोहर बेटा-पोता बाजत जे फँल्लाबला खेत छी। वेचारा माइयक सेवामे बेचलक।''

तपेसरक बात सुनि खुशीलालक हृदए पसीझ गेल। चुप-चाप घरसँ एटैची निकालि अनला। चाभीसँ खोलि पाँचो हजार रूपैआ निकालि तपेसरक आगूमे रखि कहलकनि-

''भैया, अखनि धरि ने केकरो कोनो चीज ठकलिऐ आ ने चोरा कऽ एकोटा खढ़ उठौलिऐ। दुनू हाथ उठा भगवानसँ कहै छियनि जे जहिना अखनि धरि निमाहलौं तहिना आगूओ पार लगाएब।''

गंगाजल जकाँ खुशीलालक विचार सुनि तपेसरक मनक बखारीक मुँह खुजि गेलनि। बजला-

''बौआ, सभ बुझै छथि जे जमीन जाल सदृश होइत। जाल बनौले जाइत अछि फँसबैले। तोहर हृदए सौदा कागत जकाँ छह। ऐपर प्रेमोकथा लिखल जा सकैए आ आपराधिक सेहो।

मुदा हम नै चाहब जे तोरा मनमे कनीओं गंदगी आबह। देखहक जमीनेक चलैत झूठ-फूससँ लऽ कऽ बेइमानी-शैतानी, मारि-पीट, केश-मोकदमा सभ होइत अछि। कियो जबुरिया लिखा बेइमानी करैए तँ कियो महदा लिखा। कियो दोसरसँ निशान लऽ दोसराक हड़पैए तँ कियो बलजोरी आड़ि तोड़ि अपनामे मिला लइए। केते कहबह?''

तपेसरक मुहसँ नव बात सुनि, जहिना तैयार खेतमे बागु कएल फसल अँकुरि धरतीसँ ऊपर अबैत तहिना खुशीलालक मनमे जिनगीक नव-नव अँकुर जनमए लगल। नव अँकुर देखि जहिना धरतीकेँ अपन निरोग कोखिक एहसास होइत तहिना खुशीलालक हृदैमे भेल। विह्वल होइत बजला-

''भैया, दुनियाँ किछु हउ आगि लगौ, पाथर खसौ मुदा मनुख अपने जिनगीक जवाबदेह होइत। एक्के गाछक एक डारिमे बाँझी लगलासँ बँझिया जाइत तँ दोसर चुट्टिआ जाइत। मुदा एकर माने ई नै ने जे ओकरामे फड़ैक शक्ति नै छै। फड़बो करैए। कियो किछु करैए करह, जहिना अखनि धरि ओना जिनगीमे कोनो लेन-देन नै भेल छल भाए-भैयारी जकाँ रहलौं तहिना जीता जिनगी रहब। अहाँ जेठ भाय तुल्य छी जे कहब करैले तैयार छी।''

खुशीलालक बात सुनि तपेसरोक हृदए परसाएल आम जकाँ पलपल करए लगलनि। बजला-

''बौआ, अपना गाममे चारि मेलक जमीन अछि। बाड़ी-घराड़ी, भीठ, मध्यम, धनहर आ चौर। एक गामक रहितो चारि तरहक दाम छै। कारणो छै उपजा आ उपयोगक। घराड़ीक जमीन ऊँचगर होइए जइसँ घर बनबैक काजमे अबैए। भीठ सीमापर अछि। घरो बनौल जा सकैत मुदा घर नै बनने उपजो-बाड़ी होइत आ बागो-बगीचा लगौल जाइत। मध्यम धनहरमे सिरिफ अन्ने उपजैत। जखनि कि नीच जमीन भेने चौरीक महत सभसँ कम होइ छै। कारण छै जे बेसी बर्खा भेने वा बाढ़ि एने दहा-

भँसिया जाइत। ने पानिक उपज होइत आ ने उपराड़िक। जौं ओकरा मुँह-कान बना पानिक वस्तु उपजौल जाए तँ ओहो ओहने मूल्यवान हएत जेहेन दोसर होइत। ओना ओहो धरतीए छी बनौलापर सभ तरहक बनि सकैए। मुदा केते कहबह। बड़ीखान घरसँ निकललौं, अखनि जाइ छी।''

तपेसरक दुनू बाँहि पकड़ि खुशीलाल बैसबैत कहलकनि-

''भैया, अहाँ पाबि बहुत पेलौं। आइ बूझि पड़ैए जे हमहूँ समाजक लोक छी। सोझहे गामक सीमानमे धर बान्हि रहने तँ नै, होइत तँ तखनि जखनि सबहक सुख-दुख मिलि जाए। जइसँ सभ एकबट्ट भऽ जिनगी बितौत। खाली हाथे केना जाएब? जँए एत्ते समए बितल तँए कनी आरो बितह। अहूँक एकटा काज भेल रहत।''

तपेसर कहलखिन-

''बौआ, खेत कोनो अन्न-पानि छी जे नापि-जोखि मूल्य बनत। एकर मूल्य आड़ि-पाटिक चुगलसँ होइत। सभ तरहक जमीनक लेन-देन समाजमे चलिते रहैए। अपना गामक चौरी खेत डेढ़ हजार रूपैए कट्ठा बिकाइत अछि दू कट्ठा खेत देबह तीन हजार रूपैआ दए।''

तीनू हजार रूपैआ गनि खुशीलाल तपेसरकेँ देलकनि। रूपैआ नेने विदा भेला। बाटमे हिसाब बैसबए लगला जे सभसँ बेसी जरूरी बुतातक अछि। मास भरिक बुतात कीनि लेब। बाँकि जे बँचत हाथ-मुट्ठीमे रखब। जखनि घरमे आगि लगले अछि तखनि कोन लुत्ती केम्हर उठत तेकर कोनो ठीक छै।

मास दिन बितलापर सुनयनाक हाथक पलस्तर काटि डाक्टर कहलकनि-

''भारी काज नै करब। ओना बूढ़क हड्डी छी तँए बच्चा जकाँ नहियेँ जूटत मुदा तैयो बँचा कऽ रहब तँ नीके रहत।''

डाक्टरक बात सुनि सुनयनाकेँ भेलनि जे जौं भारी काज नै करब तँ जिनगी भारी केना बनत। जिनगीमे हल्लुक-भारी सभ रंगक काज अबैए। मुदा जीते-जिनगी ने दुनियाँ देखै छी, आँखि मुनब सभ हरा जाएत। कहुना भेलौं तँ बुढ़े भेलौं मुदा जाबे पोता-पोती अपने जीबै जोकर हएत ताबतो जौं जीब जाएब तैयो नीके हएत।

शरीरसँ शरीरी धरि सुनयनाकेँ सोगसँ सुकुड़ए लगलनि। एक दिस बेटाक बेथासँ बेथित दोसर दिस मइटुग्गर पोता-पोतीक जिनगी देखि झखैत, तँ तेसर दिस जिनगी भरि पालल-पोसल -छाउर-गोबर- खेतकेँ बोहाइत देखैत, तँ चारिम दिस अपन देहक दुखसँ दुखी। ओना जीबैक आशा मनमे उत्साह जगबनि मुदा जेना डिबियाक इजोतकेँ घनगर अन्हार घेरैत-घेरैत छोट -कम प्रकाशित- बना दैत तहिना सुनयनाकेँ भऽ गेलनि। अन्हार छोड़ि दुनियाँमे किछु देखबे ने करै छेली। जेना खसैत जिनगी उठल जिनगीकेँ दाबि सवारी बना लेलकनि। जइसँ ओछाइन धऽ लेली। केतबो हूबा उठैक करथि मुदा उठि कऽ बेसी काल बैसल नै होनि। बिछानपर पड़ल-पड़ल पहुलका कएल काज भरि दिन पढ़ैत रहथि। जखनि कखनो केम्हरोसँ आबि तपेसर पुछनि जे माए, मन केहेन लगै छौ। तँ जहिना कोनो फल वा तरकारीमे गुण तँ रहैत मुदा कोनो रसक सुआद नै रहैत तहिना सुनयनाक मन बेरस हुअ लगलनि। बेरस होइत-होइत मरि गेली।

फगुआक तीन दिन उत्तर चैती बर्खा भेल। ओना कुमासक बर्खा भेल मुदा मौसमक रंग आरो हरिआ गेल। कनी-मनी जे तापसँ दुपहरमे पसेनाक आगमन हुअ लगल से एकाएक रूकि गेल। घूरक ओरियान जे बन्न हुअ लगल छल फेर दोबरा गेल। घरक राखल कम्मल, सीरक, सलगी, फेर निकलि गेल।

पहिल बर्खा भेने सबहक घर चूबल। शीतसँ भीजैत आएल चार रौद पड़ने, पएरक बेमाए जकाँ चिड़ी-चौंत भऽ फटि गेल। जइसँ बर्खामे बखूबी चूबल। चुबैक आरो कारण छेलै। चारमे फड़ल गराड़केँ तकैत-तकैत चिड़ै सभ तना-खोदिया देने जेना चौरी खेतमे धिया-पुता अनेरुआ केशौर उखाड़ैमे खुनैत। जइसँ छप्पर सभमे खाधि बनि गेल। मुदा पहिल

बर्खा होइक कारणे केकरो मुँह मलिन नै भेल। पहिल बर्खामे अहिना होइत आएल अछि, जे सभकेँ बूझल। मुदा जहिना चैत माससँ साल शुरू होइत तहिना बर्खाक शुरूआत सेहो चैतेसँ भेल। पहिल पानि भेलापर सबहक मनमे उठल जे जखने अँटिएलहा नार-खढ़ सूखत आकि घर छड़ा लेब। से भेल कहाँ। पहिल बर्खाक दोसरे दिन दोहरा गेल। दोहरेबे नै कएल जे दोहरबिते रहि गेल। गोटे दिन दोहरा कऽ, गोटे दिन नागा हुअ लगल। पूस-माघ-फागुनमे जे नार वा खढ़ चैत-बैशाख-जेठमे छाड़ैक उदेससँ अँटियाएल गेल ओ जाँकेमे भीज-भीज सड़ए लगल। जहिना एक बेर धारक नासी बाढ़िमे बोहैत-बोहैत सनमुख धार बनि जाइत तहिना चुबैत-चुबैत सबहक घर चूबाठ घर बनि गेल। चारक खढ़ो आ बत्तीओ-कोरो सड़ि-सड़ि खसए लगल। तहिना भीतक माटि धोखड़ि-धोखड़ि खसए लगल। थाल-कादोक घर बनि गेल। बर्खा हुअ लगै आकि कियो छिपली-बाटीसँ घरक पानि उपछैत कियो कोदारिसँ काटि-काटि भीतक खसल माटि हटबैत। खाएल अन्न पचब कठिन भऽ गेल।

अपन घरक दशा आ अपना परिवारकेँ अवग्रहमे फँसल देखि तपेसर भगवानकेँ सुमरि-सुमरि कहनि हे भगवान अपना देश लऽ चलू। किए नर्कमे घिसियौर कटबै छी। मुदा खाली कहनेटा सँ नै होइत लएओ गेनिहार ने चाही। अपन आगूक रस्ता बन्न देखि तपेसर पाछू घूमि देखथि तँ कनैत मन चिकड़ि-चकड़ि बजैत जे आनो जनमक पाप लोककेँ बिसाइ छै मुदा पछिलो जनमक पाप मन नै पड़ैत अछि। हारि-थाकि वेचारा अन्हारमे चलैत बटोही जकाँ आँखि मूनि थाहि-थाहि आगू डेग बढ़बए लगला। साल बितल, सबहक जान तँ बँचल मुदा रहैक घर रहैबला नै रहल।

धारक पानि जकाँ समए ससरल। दुनू भाए-बहिन धीरज पाँच बर्खक भऽ गेल। घरक छोट-छोट काजो आ खेतसँ बथुआ सागो तोड़ि-तोड़ि दुनू भाए-बहिन आनए लगल। आमक मासमे चटनी लेल गाछीसँ आमो बीछि-बीछि आनए लगल। जहिना गहुम-बदामक अँकुराकेँ कौआ उखाड़ि-उखाड़ि खाइत, से डर आब तपेसरकेँ दुनू बच्चाक प्रति नै रहलनि। गील माटिक बनल वर्तन वा मूरती जहिना रौद पाबि सकता जाइत तहिना दुनू भाए-बहिनक सकताइत शरीर देखि तपेसरक मनमे

खुशी भेलनि। नहियोँ माए छै तैयो दुनू उठि कऽ ठाढ़ भेल! आब तँ केकरो गाएओ-महिंस चरा गुजर कऽ सकैए। कहुना जीविए लेत। दुनियाँ देखबे करत। जौं मइटुग्गरो कलंक लगल छै तँ की बिआह दान नै हेतै? जरूर हेतै। जहिना हमर बेटा-बेटी मइटुग्गर अछि तहिना केतेकोकेँ हेतै। अपन कमैत भार देखि तपेसरक मन दुनूक -बेटा-बेटी- जिनगीपर पड़लनि स्कूल जाइ जोकर भऽ गेल। जुग-जमाना बदलि रहल अछि। तेहेन समए आबि रहल अछि जे बिनु पढ़ल-लिखल लोककेँ के पूछत? से नै तँ दुनूक नाओं स्कूलमे जरूर लिखा देब। स्कूल मनमे उठिते लत्ता-कपड़ा, सिलेट-पेन्सिलपर पड़लनि। खैर जे होउ, बरस्पति दिन जरूर नाओं लिखा देब। आँगुरपर दिन गनिते तेसरे दिन बरस्पति भेटलनि। परसू तँ नाउए लिखाएब तैबीच लत्तो-कपड़ा आ सिलेटो-पेन्सिल कीनि देबै।

दोसर दिन भोरे तपेसर रोटी सन्ना बनौलनि। तीनू गोटे खा बजार विदा भेला। दुइए कोस बजार उठैत-बैसैत साँझ तक घूमि आएब अपना डेगे नै ओकरे सबहक डेगे चलब। कहुना अछि तँ धिया-पुताक नवका पएर छिऐ किने, कुदिते-फनिते चलि जाएत। भूख लगतै तँ मुरही कचड़ी कीनि देबै। दू फक्का अपनो खा लेब। एकटा काज तँ भऽ जाएत किने। बजार पहुँच दुनू भाए-बहिनकेँ एक-एक जोड़ पेन्ट, एक-एक गंजी, एक-एक अंगाक संग एक-एक सिलेट कीनि डिब्बो भरि -एक दर्जन- पेन्सिल कीनि तीनू गोटे घूमि गेला।

सूर्योदयसँ पहिनहिए तपेसर उठि जलखैक ओरियान केलनि। भिनसुरका स्कूल। बेरू पहर नाओं लिखाएब ओते नीक नै। अखनि जे नाओं लिखा देबै तँ बेरसँ पढ़ैओले जाए लगत।

टेल्हूक बेटा-बेटी भेने तपेसरक जान हल्लुक भेलनि। आँगन बहारब, चुल्हि चिनमान नीपब आ थारी-लोटा घुरनी घुअ लगल। अँगनाक काज पतराइत देखि तपेसर सोचलनि जे खेती अपने करब। मुदा समए बदलने खेतीमे नव-नव ओजार आएल। जइसँ उपजो-बाड़ी बढ़ल आ हल्लुको भेल। जैठाम तीन-तीन-चरि-चरि गार करीन लगा लोक छह कट्ठा आठ कट्ठा खेत भरि दिनमे पटबै छल तैठाम दमकल बोरिंगसँ चारि कट्ठा

घंटा भरिमे पटैए। तहिना ट्रेक्टरसँ खेत जोतब, थ्रेशरसँ गहुम-धान दौन करब सेहो असान भऽ जाइत अछि।

एक चौथाइसँ बेसी खेत बीकि गेल। मुदा जे बँचल अछि ओकरे जौं नवका ढंगसँ खेती करब तँ पहिनेसँ केते गुणा बेसी उपजा हएत। जहिना नव-नव औजार बनल तहिना नव-नव किश्मक बीआ सेहो बनल। जे धान अदहा मनसँ लऽ कऽ कट्ठा मन उपजै छल से क्वीन्टल कट्ठा उपजए लगल। जेते आगू दिस नजरि तपेसर बढ़बै छला तेते आशाक प्रखर ज्योति आँखिक सोझमे आबए लगलनि। मुदा समस्यो तँ झमटगर अछि। बाध सभमे छिड़ियाएल खेत, नीच-ऊँच साइज माल-जालसँ लऽ कऽ बोनैआ जानवर, चिड़ै-चुनमुनीक संग मूसक उपद्रव, चोरा कऽ जजाति कटैसँ लऽ कऽ गाए-महिंससँ चोरा कऽ चरबै धरिक उपद्रव इत्यादि। ओझरी देखि तपेसरक मन ठमकि गेलनि।

जहिना सघन वोनमे लोक हरा जाइत, केम्हरो बढ़ैक साहसे ने होइत मुदा बिना निकलने जानो बँचैक संभावना नै रहैत तहिना तपेसरोकेँ भेलनि। ओझराएल मन संगी-सहयोगी ताकए लगलनि। संगी तँ जरूर अछि मुदा संगी दू तरहक भेटैए। पहिल, ओहन संगी जे जीवनक एक रस्ता बूझि अपनो कल्याण बुझैत आ दोसर, दोसराक कान्हपर बन्दूक रखि चलबए चाहैत। सोचैत-विचारैत तपेसरक नजरिपर तीनटा संगी पड़लनि पहिल समाजक -गौआँक- सहयोग, दोसर बैंक आ तेसर सरकारी।

समाजमे जाति-समप्रदाय ऐ रूपे पसरि गेल अछि जइमे केकरो कल्याण होएब कठिन अछि। सभ अपने ताले बेताल अछि। ने एक दोसरकेँ सोहाइत आ ने नीक देखए चाहैत। तहिना बैंकोक अछि। उचित सूदिपर कर्ज लइमे दौग-बरहा आ खर्च एते पड़ि जाइत अछि जइसँ लोकक मन टूटि जाइत अछि। सरकारी मदति -अनुदान- मात्र दिखाबा अछि। जहिना कनैत धिया-पुताकेँ माए-बाप रासि-रासिक लोभ देखा चुप करैत तहिना सरकारीओ अनुदानक अछि। फेर तपेसर ओझरा गेला। प्रश्न उठलनि, की कएल जाए? अपनो तँ पूजी अछि। पूजी दू रंगक पहिल, श्रम दोसर धन। नगद नै अछि। मुदा खेत तँ अछि। जहिना खेत बेचि

माएक सेवा आ दुनू बच्चाकेँ पाललौं-पोसलौं तहिना आरो बेचि लेब। जौं किछु जमीन कमबो करत तँ ओते उपजो बढ़त गामक स्कूलसँ धीरजो आ घुरनीओ पास कऽ निकलि गेल। दस बर्खक भेने दुनू बच्चा घर-अँगनाक काजसँ पितोक काममे हाथ बँटबए लगल। आगू पढ़ैक आशा ऐ लेल नै रहै जे लोअर प्राइमरी स्कूल तँ गाममे रहए मगर मिड्लसँ ऊपरक स्कूल दू कोस गामसँ हटल छै। सभ दिन चारि कोस चलि पढ़ब कठिन रहै तँए पढ़ाइ छोड़ि देलक। होस्टलक खर्च जुटा नै पबैत।

अखनि धरि तपेसर गिरहस्तीक रूपे-रेखा बदलि लेलनि। बाधे-बाध छिड़ियाएल खेतक घट्टो लगा-लगा एकठाम कऽ लेलनि। खेते बेचि कऽ बोरिंग-दमकल बड़द सेहो कीनि लेलनि। अपना हाथमे पानि एने सालो भरि खेती करए लगला। ओना चारिए मास -बरसात- केँ किसान खेतीक रीढ़ बुझैत। जौं बेसी बर्खा भेल, बाढ़ि आएल तँ दहार भेल। नै जौं कम बर्खा भेल तँ रौदी भेल।

दस बजेक समए। चारिटा मकइ बालि खेतसँ नेने आबि तपेसर डेढ़ियापर सँ बेटीकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

> "बुच्ची, चारू बालि ओराहि दूटा अहूँ दुनू भाए-बहिन लऽ लेब आ दूटा दलानपर नेने आउ।"

हँसैत घुरनी धीरजकेँ कहलक-

> "भाय, देखियो केहेन मकइ अछि। एहने मकइक मिठाइओ बनैए।"

मकइ बालि घुरनीकेँ दऽ तपेसर दरबज्जाक ओसारक खुट्टा लगा ओङठि कऽ बैस अपन जिनगीक सम्बन्धमे सोचए लगला। पेटक उपए भऽ गेल। मुदा पेटे जकाँ घरो अछि। ओना अखनि परिवारो नम्हर नहियेँ अछि। मुदा तैयो रहैले तँ घरे चाही। तहूमे गिरहस्तक परिवार छी। बोरिंग ने खेतमे गाड़ल अछि मुदा दमकल रखैले तँ घरे चाही। जौं से नै करब तँ बरसातमे बीझा जाएत। जइसँ केते पार्ट-पुरजा बिगड़ि जाएत। संगे बाहरमे रखने चोरो चोरा लेत। आब कि कोनो पहुलका चोर रहल जे ऊखरि-समाठ चोरौत। आब तँ यएह सभ- दमकल, ट्रेक्टर,

थ्रेशर इत्यादि- चोरौत। तहिना बड़दो लेल घर चाही। बेटो-बेटी ढेरबा भेल। काज केनिहार घरमे बढ़ने काजो बढ़बए पड़त। खेतसँ जोड़ल जे-जे काज अछि। वएह बढ़ाएब ने नीक हएत। अखनि दुइएटा गाए किनब। पहुलका तँ बूढ़ भऽ गेल। आब ओ थोड़े पाल खाएत। अन्नेक खेती नै तीमनो-तरकारी आ फलो-फलहरीक खेती करब। कोन चीज सस्ता अछि। जितियामे पचास रूपैए मरूआ चिक्कस आ नरक निवारण चतुर्दशी दिन चालीस रूपैए अल्हुआ-सुथनी बिकैए। बोरिंग लग सेहो इंजनबला पानि खसैए से जइसँ कट्ठा भरिमे कोनो उपजा नै होइए। ओना जौं मोथी रोपि दिऐ तँ सेहो हएत मुदा आब की लोक मोथीक बिछानपर सुतैए। आब तँ पलास्टिक जिनगी ओहन प्रेमी बनि गेल अछि जे दिन-राति संगे रहैए। तइसँ नीक जे कट्ठो भरि खुनि माछे पोसब। नै बेचै जोकर हएत, खाइओ जोकर तँ हेबे करत। जखनि एते मेहनति करै छी तँ नीक खेनाइ आ नीक घर बना नै रहब तँ धने लऽ कऽ की करब। आँखि मुनि तपेसर अपन अगिला जिनगीक संग पाछू दिस सोचए लगला। तखने घुरनी दुनू ओराहल मकइ बालि नेने आबि कहलकनि-

"बाबू, बाबू...।"

चौंकेत आँखि खोलि तपेसर कहलखिन-

"हँ।"

मकइ बालि हाथमे देखि पुछलखिन-

"नोन-तेल औंस देने छहक किने?"

"हँ।"

तखने उत्तरसँ दछिन मुहेँ जाइत चेतनाथ दरबज्जा सोझहे आबि ठाढ़ भऽ गेला। हाथमे बालि लऽ निहारि-निहारि तपेसर देखिते रहथि आकि आँखि बढ़ि चेतानाथपर गेलनि। चेतनाथकेँ ठाढ़ देखि कहलखिन-

"किए ठाढ़ छी। किनकासँ काज अछि?"

तपेसरक बात सुनि चेतनाथ बजला किछु नै, ससरि दरबज्जा दिस बढ़ला। लग अबैत देखि तपेसर दुनू बालि हाथमे नेनहि उठि कऽ ठाढ़

होइत बामा हाथक आँगुरसँ आँखि पोछि देखिते सिहरि गेला। माथक सोन-सन केश दाढ़ी मोंछ झबड़ल। देहक हड्डी झक-झक करैत, दाँत विहिन मुँह, मैलसँ कारी खट-खट देहक वस्त्र।

अनासुरती तपेसरक मुहसँ निकललनि-

''कने एक घोंट पानि पीब लिअ?''

पानि सुनि चेतनाथक मनमे उठलनि। जिनगी भरि परमात्माक सेवा केलौं, अंतिम अवस्थामे बिनु सेवाक फल केना खाएब-पीब? भूखसँ जरैत वायु -पेटक- हुमरि-हुमरि शान्त करैले कहनि। मुदा जिनगी भरिक तपल मन मानैले तैयार नै होन्हि। चेतनाथ तपेसरकँ पुछलखिन-

''परिवारमे के सभ छथि?''

चेतनाथक प्रश्न सुनि तपेसरक मन ठमकि गेलनि। ठमकल देखि चेतनाथ दोहरबैत पुछलखिन-

''चुप किए भेलौं?''

जेना पतझारक समए गाछमे कोनो-कोनो कलशक मुड़ी जहिना सुख-दुखक बीच अपन अस्तित्व जीवित रखए चाहैत तहिना तपेसरक मनमे भेलनि मिरिमरा कऽ कहलखिन-

''माएओ-बाप आ पत्नीओ मरि गेली। अपने छी आ दूटा बच्चा अछि।''

घुरनी लगेमे ठाढ़ रहनि। धीरज आँगनमे मकइ खाइत रहए। चेतनाथ कहलखिन-

''दुनू बच्चाकेँ सोर पाड़ियौ?''

घुरनीकेँ देखबैत तपेसर कहलखिन-

''एकटा यएह छी दोसर आँगनमे अछि।'' कहि धीरजकेँ सोर पाड़लखिन। दुनू बच्चाकेँ देखि चेतनाथ कहलखिन-

''एक शर्त्तपर पानि पीब सकै छी?''

"की?"

"जौं दुनू बच्चाकेँ पढ़बैक -संगीत कला- काज दी।"

जिनगी भरि कमा कऽ खेलौं मरैकाल एहेन अधर्म नै करब। अपन मनक विचार पाबि तपेसर खुशी भेला। अह्लादसँ हृदए ओलरि गेलनि। पेटमे गुद-गुदी लागए लगलनि। ठहाका मारि हँसैत कहलखिन-

"अपनेक शर्त्त सहर्ष स्वीकार अछि। पहिने पानि पीब लेल जाउ।"

अपन झड़ैत जिनगीमे आशाक किरिण उगैत देखि मुस्की दैत चेतनाथ कहलखिन-

"हँ, आब पानिए नै भोजनो करब।"

दुनू गोटे एक-एक मकइ ओरहा खा पानि पीब, गप-सप्प करए लगला।

चेतनाथ कहलखिन-

"आइएसँ दुनू बच्चाकेँ पढ़ाएब शुरू करब।"

तपेसर कहलकनि-

"आइ छोड़ि दियौ दसम बर्खक अंतिम दिन आइ छी। काल्हि एगारहम चढ़त। एगारहम जनम दिनक अवसरपर दसटा समाजोकेँ भोजन करेबनि आ दुनू बच्चाकेँ पढ़ाइओ शुरू करब। तैबीच अपने अपन जिनगीक किछु बात कहियौ।"

तपेसरक बात सुनि चेतनाथ विस्मित भऽ गेला। आइ धरि जे प्रश्न कियो ने पुछने छला ओइ प्रश्नक उत्तर दिअ पड़त। एक क्षण चुप भऽ सौंसे जिनगी देखि बाजए लगला-

"माता-पिता बहुत पहिने मरि गेला। पत्नीओ मरि गेली सखा-सन्तान नै भेल। असगरे छी। पाँच बर्ख पूर्ब धरि कहियो असगरुआ नै बूझि पड़ल। मुदा पाँच बर्खक बीच जे गति भेल ओ बजै जोकर नै अछि।"

तपेसर पुछलकनि-

"से, की?"

चेतनाथ कहलखिन-

"जहियासँ होश भेल तइ दिनसँ कहै छी- चारि भाए-बहिनक बीच सभसँ छोट छेलौं। माएक बड़ दुलारू। आठे-नअ बर्खक रही तहिएसँ नाच-तमाशा, कीर्तन भजन दिस मन लागए लगल। गाममे नाचो पार्टी रहै आ भजनिओ पार्टी। सभ मंगलकेँ महावीरजी स्थानमे साँझू पहरमे कीर्तन होइ। अपना गामक संग-संग आनो गाममे अष्टजामो आ नाचो करए पार्टी जाए। भाँज लगा-लगा हमहूँ जाए लगलौं। ओतैसँ गोटे-गोटे पाँति सीखने आबी। जेकरा भरि दिन गाबी। खौजरी बनबैक फूड़ल। फूटल घैलक कान हाँसूसँ काटि बेलक लस्सा लगा कागत साटि खौजरी बनेलौं।"

हँसैत धीरज पुछलकनि-

"कागतक खौजरी फुटबो करए?"

धीरजक बात सुनि चेतनाथकेँ क्रोध नै उठलनि। वात्सल्यक बाढ़िमे बहए लगला। कहलखिन-

"खूब फुटै। मुदा काजो बड़ भारी नहियेँ रहए जहिना अनेरुआ बेल भेटए तहिना दोकानक पुड़ियाक कागत। लगले फेर बना ली। गबैत-बजबैत साजपर हाथो बैस गेल आ बोलीओ सर्रास भेल। गाममे रामलीला आएल। आँगनमे खए ली आ भरि दिन-राति ओकरे सभ लग रही। जखनि जाए लगल हमहूँ संग पकड़ि लेलौं। साजो बजाएब सीख लेलौं आ पार्टो खेलए लगलौं। जेहने आवाज सुरिला रहए तेहने हरिमुनियाँपर हाथ। एक दिन ठीकादास देखलनि। ओ राजक गबैया छला। संगे लऽ गेला। हमहूँ राजक गबैया भऽ गेलौं जखनि राजशाही टुटलै तखनि उनटि कऽ गाम चलि एलौं। किछु दिन गामे-गाम उत्सव

सभमे जाए लगलौं। ओहो कमि गेल। तइ दिनसँ दिनो-दिन दशा बिगड़िते गेल।''



शंभुदास

जिनगीक ओइ सीमापर शंभुदास पहुँच गेल छथि जेतए पछिला जिनगीक बहुतो विचार आ काज स्वत: छुटि गेलनि। किछु नव जे मनमे उपकि रहल छन्हि ओ करैले जइ शक्ति आ सामर्थक जेते जरूरति छन्हि ओ तकनौं नै भेट रहल छन्हि। जेना आगिक चिंगोरा रसे-रसे पझा-पझा या तँ मोइल जकाँ ऊपर छाड़ने जा रहल छन्हि या झड़ि-झड़ि खसि रहल छन्हि। डंटीसँ टुटल पोखरिक कमल सदृश हवाक सिहकी वा पानिक कम्पन्नसँ दहैल रहल छन्हि। जे कहियो कामधेनु, फूल-फड़सँ लदल वृक्ष सदृश छेलनि वएह आइ ठाँठ वा पत्रहीन ठूठ बूझि पड़ि रहल छन्हि। जे कहियो राजभोगक बीच दिन बितबै छला आइ अन्न-वस्त्र विहिन भीखक घाटपर बैस अपन जिनगीक हिसाब-वारी जोड़ि रहल छथि। मन कहै छन्हि जे सभ दिन तँ गुनगुनाइत रहलौं- जे बच्चा कनैत ऐ धरतीपर अबैए आ हँसैत जाइक चाहिऐ, मुदा से कहाँ...? जे आत्मा बिनु विवेकक जिनगी टपि विवेकवान लग पहुँचल ओ आगू नै बढ़ि पाछू दिस किए ढड़कि रहल अछि। सोन-सन उज्जर धप-धप दाढ़ी-मोछक संग माथसँ पएरक आँगुर धरिक केश, आमील सन सुखाएल गालक संग अगिला भाग, सामर्थहीन हाथ-पएरक मुदा आँखिक ज्योति भोरक ध्रुवतारा जकाँ ललौन! मन उफनि उठलनि जे देवस्थान जकाँ तिरपेखनि ऐ दुनियाँक करब।

जहिना बाध-वोनक ओहन परती जैपर कहियो हर-कोदारि नै चलल सूखि-सूखि गाछि-बिरिछ खसि उस्सर भऽ जाइत, ओइ परतीपर या तँ चिड़ै-चुनमुनीक माध्यमसँ वा हवा-पानिक माध्यमसँ अनेरुआ फूल-फड़क गाछ जनमि रौद-वसात, पानि-पाथर, अन्हर-बिहाड़ि सहि अपन जुआनी पाबि छाती खोलि बाट-बटोहीकेँ अपन मीठ सुआदसँ तृप्ति करैत तहिना जमुना नदीक तटपर शंभुदासक जनम बँटाइ-किसान परिवारमे भेलनि। रवि दिन रहने समाजक दाय-माय शुभ दिन मानि शंभु नाओं रखलकनि। परदेशिया जकाँ तँ नै जे जनमसँ पहिने माए-बाप नामकरण कऽ लैत। छठम दिनसँ पूर्वक सभ कष्ट बिसरि शंभुदासक माए सुखनी अपन सुखैक निआसा छोड़ि देवस्थानक देवता पूजनमे हराएल। अपन मर्यादा गसि कऽ

पकड़ि शंभुक सेवामे जुटि गेली। परिवारक बोझक तर पिता! तँए बिलगा कऽ किछु नै सोचथि।

पाँच बर्ख पूर्ब धरि संतोखीदास आ सुखनी, खेतिहर बोनिहार छला। खेतीओ तँ मौसमेक हाथक खेलौना! बेठेकान! मुदा तैयो तँ सभ बुझैत जे जाड़, गरमी आ बरसात, सालक तीन अवस्था छी। भलहिं गोटे साल शीतलहरि पाबि जाड़ अपन बिकराल रूप देखबैत तँ रौदी पाबि गरमी। बर्खा पाबि बसात बाढ़िक संग नंगटे नचैत तँ झाँट पाबि ताण्डव करैत।

बजारवादक हवा सिहकल जे बिहाड़ि सदृश उठल मुदा पहाड़ आ वोनक टाट अँटकौलक। गतिकेँ कम केलक मुदा तैयो बहिते रहल। जाड़-रौदीक मारल किसानो आ बोनिहारो गाम -खेती-पथारी- छोड़ि बजार दिस विदा भेल। जहिना घर बनबैमे पातरसँ मोट खुट्टाक जरूरति होइत तहिना कारखाना चलबैले मजदूरसँ लऽ कऽ संचालक धरिक आवश्यकता भेल। उजड़ल-उपटल गामक रूखिमे बदलाउ आबए लगल। खेतमे काज केनिहार बोनिहारकेँ कारखानाक नव मजदूरी भेटए लगल। जइसँ जिनगीमे हरिअरी आबए लगलै। मुदा हवाक गति धीरे-धीरे तेज हुअ लगल। सस्त मजदूर पाबि रंग-बिरंगक कारोबार शहरमे जनम लिअ लगल। जइसँ श्रमिकक मांग बढ़ल। टुटैत गामक जिनगीसँ तंग भऽ बेबस श्रमिक जेर बना-बना बजारक बाट पकड़लक। श्रमक बिक्रीक कारोबार जोर पकड़लक। खुल्लम-खुल्ला बिक्री बट्टा हुअ लगल।

गामक श्रमिकक पड़ाइनसँ गामो हलचलाएल। खेतबलाकेँ कारखाना पहुँचने खेतीमे ठमकाउ आएल। श्रमिकक अभावमे खेती ठमकल। समाजक विचारधारामे बदलाउ आएल। एक विचारधारा -जे अखनो धरि सम्पतिकेँ प्रतिष्ठा बुझैत- जे पहुलके खेतीकेँ थोड़-थाड़ अन्न-पानि खुआ-पिआ जीवित रखलनि तँ दोसर विचारधारा -शहरी कारोबार देखि- खेत-पथार माने ग्रामीण सम्पतिकेँ पूजी बूझि आमद-खर्चक हिसाब जोड़ि विचारमे बदलाउ अनलनि। संग-संग बँटाइ खेतीक बीच नव-समस्या सेहो उठल। जैठाम अखनि धरि गामक जमीनदार खेतक उपजे बेर-टामे खेतक दर्शन करैत, ओ गामसँ बाहर भेने सालक-साल खेतक दर्शनसँ

बिमुख भेला। संग-संग गाममे श्रम-शक्तिक अभाव भेल। बटेदार वर्गक वृद्धि भेल। खेतक बँटाइ प्रथामे बदलाउ आएल। जइसँ आमक कन - फड़क हिसावसँ- उपजाक मनखप आ पोसियाँ माल-जालमे बदलाउ आएल। कोनो धरानी संतोखीदास एकटा बड़द बनौलक। दू परानीक हाथ-पएर आ एकटा बड़द पाबि संतोखीदास बटेदार किसानक रूपमे ठाढ़ भेल। पेट भरने परिवारमे खुशीक बाढ़ि तँ नै मुदा पटबी पानिक खुशी जरूर आबि गेल। संतोखीदास बीघा भरिक खेतिहर बनि गेला। नव आर्थिक विकास भेने परिवारक बच्चो सभमे मौलाहटि कमल। जइसँ बच्चाक मृत्युक संख्यामे कमी आएल। ओना अखनो धरि श्रमिक परिवारमे बेटा-बेटीमे अन्तर नै बूझल जाइत किएक तँ भगवानक अगम लीलाक बीच हस्तक्षेप नै करए चाहैत मुदा बजारक बिखाएल वयार तँ बहिए रहल अछि।

शंभुकेँ तीन बर्ख पूरिते जहिना शीतलहरिमे पोहु फटिते सुरूजक रोशनीक आशा जगैत, बदरीहन समए वादलकेँ छिड़ियाइते घरसँ बहराइक आशा जगैत तहिना संतोखीओदास आ सुखनीओकेँ भेलनि। जिनगी भरि लेल मनखप खेत भेटने किए नै दुनू परानीक मनमे आशा औत। तहूमे बाढ़ि-रौदीक सालक कोनो देनदारीए नै, रहल सुभयस्त समैक देनदारी। ओहो देनदारी की अन्तैसँ कमा कऽ आनए पड़त। धरती माता कामधेनु। जेते करब तेते पएब। जखनि मन हएत तखनि खाएब। दिन-राति ओंघराइत रहब।

अखनि धरि सुखनी शंभुक पाछू आँगनसँ नै निकलि पबै छेली मुदा आब तँ शंभु तीन सालक भऽ गेल। अगहन मासमे खेतक आड़िपर धानक खोंचड़िक घर बना देब ओइमे खेलेबो करत आ ओंघी लगतै तँ सूतबो करत। गरमी मासमे गाछक छाहरिमे रहत। लऽ दऽ कऽ बरसात रहल। तँ बरखो की लोककेँ बिना चेतौने अबैए। अबैसँ पहिने राजा-रजवार जकाँ समाद पठा दैत अछि। तहूमे बर्खा केहेन रूपमे औत सेहो तँ कहिए दैत अछि। जेठुआ बर्खामे जे दुइओ बेर देह धुआ जेतै तँ सालो भरि धुआएले रहतै। बच्चा कि कोनो सियान सैतान होइए जे भरि दिन डाँउ-डाँउ करत। ओकरा तँ अन्न-पानि भेट जाइ, भरि दिन बौआइत

रहत। जहिना नव दाँत जनमने मसुहरि किछु करैले सबसबाइत अछि तहिना बच्चोक मन।

जेठक दसहारा। बरस्पति दिन। गिरहस्तीक पतराएल काज। अटुट फड़ल आम-जामुनक गाछ। गामक-गाम लोकक मन गदगद। किए ने रहत। दू मास जे अमृत फल भेटत! बाधक चौबगली गाम अष्टयाम कीर्तनक मंत्रसँ अकास गनगनाइत। केम्हरो "सीताराम, सीताराम सीताराम जय सीताराम" तँ केम्हरो "काली दुर्गे राधे श्याम, गौरी शंकर सीताराम।" केम्हरो "हरे राम, हरे राम...।" तँ केम्हरो "हरे कृष्ण हरे कृष्ण।"

दसहारा रहने बरहम स्थानमे घोड़ा चढ़ौल-सजौल जाएत। ऐबेर तँ जहिना बरहम बाबा खुशी छथिन तहिना लोकोक मन। आन साल जकाँ की ऐबेर हल्लुक दामा टंगसुखा घोड़ा लोक चढ़ौत पहिने सए-पचास बेना दऽ दऽ सरैसो घोड़ासँ नीमन-नीमन चढ़ौत। दूध-पीठ खाइत-खाइत बरहमो बाबाक मन अकछा गेल छन्हि तँए ऐबेर सेरही, पन सेरही, दस सेरही, अध मनहीक संग मनही मुंगबा सेहो परदेसीआ सभ चढ़ौत।

दिनक एगारह बजैत। माटि-पानि तवने हबो तवि गेल। खेतक जे खढ़ अछि ओ रोहनि मिरगिसरामे नै सूखत तँ सालो भरि ओकर ओधि थोड़े सूखत। तँए संतोखीदास मरूआ खेत जोतए आ सुखनी खढ़ बीछए गेली। मुदा छोट बच्चा शंभुकेँ असगरे आँगनमे केना छोड़ि दितथि। शंभु लेल बाटीमे भात आ भरि डोल पानि नेने खेत गेली। अपनो सभकेँ पियास लगतनि तँ पीबैक खियालसँ। खेतसँ कट्ठा दुइएक हटि आड़िपर एकटा बज्जर केराइक अनेरुआ गाछ। जेकरा निच्चाँमे सघन छाहरि तँ नै मुदा छाहरि। जेतए शंभुकेँ खेलाइले छोड़ि अपने दुनू परानी संतोखीदास खेतमे काज करैत। काज लगिचाएल देखि, खाली हरबड़ी चौकी देब बाँकि, हर खोलि चौकी ठेकि संतोखीदास पत्नीकेँ कहलखिन-

> "रौदमे मन तबधि गेल हएत, कनीकाल छाहरिमे जिरा लइले चलू।"

सुखनी लगले सुरे बजली-

''सएह कहए चाहै छेलौं मुदा काज लगिचाएल देखि नै कहै छेलौं। जे काज ससरि जाइ छै ओते तँ जाने हल्लुक होइ छै किने।''

''हँ से तँ होइ छै। मुदा काजो की...?''

''से की?'' सुखनी पुछलकनि।

गैंचियाह नजरि पत्नीपर दैत संतोखीदास मुस्की दैत कहए लगलखिन-

''जहिना भाँग-गाँजा अपन सेवककेँ, वेश्या इश्कबाजकेँ, बौड़ा दैत तहिना ने काजो अपन कर्ताकेँ बाबला बना जान लइपर तुलल रहैत?''

''नै बुझलौं?''

''देखै नै छिऐ, दोकान सभमे लिखि कऽ टाँगल रहै छै जे, काज करैत चलू फलक आशा नै करू।' जखनि मनुख छी रोड-सड़ककेँ नापि मीलक पाथर गाड़ल रहैए तखनि केतए कोन रस्ता चलक चाही से तँ सोचए पड़ैत किने। आकि रस्ते भुतिया जाए। जे बाट नै देखल रहै छै ओही बाटमे ने लोक भुतियाइए। खैर, छोड़ू ऐ सभकेँ चलू कनी ठंढाइओ लेब, दू घोंट पानिओ पीब लेब आ तमाकुलो खा लेब।''

दुनू परानी बज्जरकेराइक गाछसँ फड़िक्के देखलनि जे शंभु पूबारि पारक अष्टयामक मंत्र- ''हरे कृष्णा, हरे कृष्णा, कृष्णा-कृष्णा हरे-हरे'' एक ताले छठिक ढोल जकाँ थोपड़ी बजबैत गबैत रहए। बेटापर नजरि पड़िते सुखनी अधखिल्लू फूल जकाँ बिहुँसैत पतिकेँ कहलनि-

''देखियौ ऐ छौंड़ाकेँ। आन धिया-पुता रहैत तँ माए-माए करैत। केहेन मगन भेल अछि।''

पत्नीक बात सुनि संतोखीदास बजला-

''रौदमे तबधि तँ ने गेल अछि?''

“तबधल बच्चा थोपड़ी बजा गौत आकि अहोंछिया काटत?” सुखनी पुछलकनि।

संतोखीदास मुड़ी डोलबैत कहलखिन-

“हँ से तँ ठीके।”

जहिना तत्व चिन्तक आत्माक तार जोड़ि ब्रह्मतत्वक अन्वेषण करैत तहिना शंभु कृष्ण मंत्रसँ अपन मनक तार जोड़ि अष्टयामक धूनमे बेसुधि भेल मीरा जकाँ गाबि रहल अछि।

जहिना एक्के फुलवाड़ी वा गाछीमे भिन्न-भिन्न रंगक फूल वा फल ताधरि अपन परिचएसँ हराएल रहैत जाधरि बच्चा सदृश पालल-पोसल जाइत, मुदा जखनि अपन गुण वा रूप देखबै जोकर भऽ जाइत तखनि एकठाम रहितो बेड़ाए लगैत तहिना छह बर्ख अबैत-अबैत शंभुओ बेड़ाए लगल। परिवारमे अनेको रंगक वस्तु-जात रहितो ओतबे सिनेह रखैत जेते काजक वस्तु बुझैत। जइ वस्तुक प्रयोजन आन-आन रूपकेँ आन-आन काजमे होइत तइसँ भिन्न ओइ वस्तुक उपयोग अपन काज देखि करए लगल।

अपना खेत-पथार नै रहितो संतोखीदासक परिवार गामक किसान परिवारक खाढ़ीमे आबि चुकल छेलनि। जहिना किसान परिवारमे वाइस-बेरहट कऽ कऽ खाइत अछि तहिना संतोखीओदासक परिवारमे चलए लगलनि। ओना ई गति लगातार नै चलि पबैत किएक तँ किसान परिवार डेंगी नाह जकाँ सदति ऊपर-निच्चाँ होइत रहैत। जइ साल खढ़चट्टा वा दहार समए भेल तइ साल सभ धुआ-पोछा गेल। मुदा जइ साल सुभितगर समए भेल तइ साल पुन: नव-पुरानक चालि पकड़ि लैत। नवे-पुरानक चालि ने रसगरो आ सुअदगरो होइए, अगिला-पछिला बाट देखि कऽ चलनाइए ने दिसा दैत। जेना एक्के आमक चटनी टटका नीक होइत तँ अचार बसिया। जेते- पुरान तेते रसगर। मुदा चटनी तँ लगले अरुआ जाइत। तहिना नवका कुरथीक दालि आ पुरान राहड़िक दालि।

अखनि धरि शंभु, परिवारकेँ खाली खाइ-पीबै, माता-पिताक संग रहैक टा बुझैत। किएक तँ बाल-बोध बूझि, ने माता-पिता किछु करैले

अढ़बैत आ ने शंभु परिवारक काजकेँ अपन काज बुझैत। सदति धैनसन। सोलहन्नी वैरागी जकाँ। मुदा तँए कि शंभु भरि दिन ओछाइनेपर ओँघराएल रहैत सेहो बात नै। जौं किछु नै करैत तँ दिन-राति केना कटै छै।

अखनो धरि गामक किसान धरतीसँ अकास धरिक स्मरण साँझ-भोर जरूर करैए। भोरमे धरतीक स्मरण तँ साँझमे अकास विचरण जरूर करैए। आने परिवार जकाँ संतोखीओ दासक परिवार। परिवारमे शंभुक कोनो मोजरे नै। मात्र खाइ-पीबै आ सुतैबेर माता-पिता सिर चढ़बैत। बाँकि समए साँढ़-पारा जकाँ अनेर बौआइत ढहनाइत। तँए कि सींग-नाङरिबला पशु जकाँ की शंभुकेँ थइर-पगहाक जरूरति हएत? 'अनेर गाएकेँ धरम रखबार'।

भोरमे जखनि संतोखीदास खेत-तमैक विचार करए लगथि तँ नचैत हृदैक घुंघरूक कम्पन्न ठोठक स्वर होइत खापड़िक मकइ-जनेरक लाबा जकाँ कूदि-कूदि निच्चाँ खसए लगनि जइसँ संतोखीओ दासक मुहसँ रंग-बिरंगक मौसमक संग मौसमी सिनेह छिड़ियाए लगैत। जेकरा बीछि-बीछि शंभु खेलेबो करैत आ तहिया-तहिया सीनाक डायरीमे लिखि-लिखि रखबो करैत। हृदयांगम करैत। मुदा बच्चाक कचिया डायरी रहने किछु लिखेबो करैत आ किछु नहियोँ लिखाइत। मुदा प्रति भोर आ साँझक स्वर 'सीताराम-सीताराम', 'राधेश्याम-राधेश्याम' डायरीक ऊपरेक पन्नामे लिखा गेल। जेकरा भरि दिन शंभु गो-मुखी रूद्राक्षक माला बना जपैत रहैत। कामधेनु गाए जकाँ सदति दूधक ढारसँ नव-नव राग-रागिनी स्वत: आबए लगल। कंठक स्वर-लहरी हाथकेँ थिरकबए लगल। जइसँ कखनो दुनू हाथ मिलि ताल मिलबैत तँ कखनो पल्था मारि बैस ठेहुनपर ताल मिलबए लगल।

घर-अँगना एक रहने पिताक संग आ माएओक पाछू-पाछू आँगन बहारैत समए, चुल्हि-चिनमार नीपैक समए, जाँत-ढेकी चलबैक समए शंभु नाचए-गाबए लगल। बेटाक बौराइत मन देखि माएओ आत्म-विभोर भऽ झूमि-झूमि शंभुक आँखिमे आँखि गाड़ि फड़ैत-फुलाइत फुलवाड़ीमे हरा जाइ छेली।

माता-पिताक उसकैत हाथ देखि शंभुओक हाथ खाइबला बाटीपर उसकए लगल। खौजरी जकाँ ओकरा बजाएब शुरू केलक। केना नै करैत। कामेसँ राम आ रामेसँ काम ने चलैए? मुदा भारी द्रव्यक बाटी रहने हाड़-मासुक हाथक आँगुर केते काल ठठत। जे बात शंभु तँ नै बूझि सकल मुदा संतोखीदास बूझि गेलखिन। सोचलनि जे जौं खौजरी बना दिऐ तँ चौबीसो घंटा शंभु आनन्दमे मगन रहत। बेटाक प्रति पिताक दायित्वे की? यएह ने जे हँसी-खुखीसँ दिन-राति चलैत रहए। मन मानि गेलनि जे बेटाकेँ खौजरी बना देबै। एकलव्य जकाँ साजमे खौजरीओ ने अछि। ने ओकरा दोसर संगीक जरूरति होइत आ ने कखनो अपनाकेँ असगर बुझैत। जहिना हवामे उड़ैत रोग लोककेँ पकड़ि लैत, लगन अबिते बर-कन्याकेँ पकड़ए लगैत, तीर्थ-व्रतक डोरी लगैत तहिना शंभुओकेँ गीत-नादक माने संगीतक राग पकड़ि लेलक। जइसँ पिताकेँ हर जोतैत, कोदारि पाड़ैत, धान-रोपैत कालक गुनगुनीक संग आँगन बाहरैत, धान कुटैत, जत्ता चलबैत कालक गुनगुनी पकड़ि लेलक। जेकरा संग शंभु भरि दिन मगन भऽ गारा-जोड़ी केने बुलए-भाँगए लगल। मुदा तँए कि शंभु एतबेमे ओझराएल रहल? नै! ने ओकरा गामक आन घर अनभुआर आ ने लोक अनठिया बूझि पड़ैत। तहूमे एकठाम रहने जखनि माए-बापक संग बाध-वोन दिस जाए तँ वएह घर वएह लोक देखए। समाज तँ ओहन सरोवर छी जइमे घोंघा-सितुआसँ लऽ कऽ कमल धरि फुलाइत अछि। देवस्थानमे साँझ-भोर घड़ीघंट आ शंखक अवाज तथा खड़िहाँनमे धान फटकैत सूपक अवाज अकासमे उड़ैत। काठपर ओँघराइत टेंगारी-कुड़हरि गर्द करैत तँ चुल्हिपर चढ़ल बरतनक अदहन झ-झ-काली करैत रहैत।

छह बर्खक बेटा शंभु लेल संतोखीदास खौजरीक ओरियान करैक विचार केलनि। ओना हाट-बजारमे खौजरी तँ नै बिकाइत अछि मुदा हरिहरक्षेत्र, सिहेश्वर, जनकपुर आ देवघरमे तँ बिकाइते अछि। मुदा ओतएसँ औत केना? अखनि तँ ओम्हर मुहेँ जाइक निआर नै अछि। ओना गामोमे बरही लकड़ीक कठरा बनबैए। सरिसोबा सनगोहि मारि मघैया खेबो करैए आ ओकर छाल बेचबो करैए। अगर जौं कठरा बनबा लेब आ सनगोहिक छाल कीनि लेब तँ तेबखाक बेसनसँ अपनो छाड़ि लेब। हम सभ कि कोनो शहर-बजारक लोक छी जे बेटा-बेटीकेँ पेस्तौल

बम-बारूद-छुड़छुडी-फटाका- खेलाइले देबै। जौं खेत-खड़िहाँन दिसक मन देखितिऐ तँ खिएलहा हँसुआ-खुरपी खेलाइले दैतिऐ जौं से नै देखै छिऐ तँ एकरा खौजरीएक ओरियान कऽ देबै। सएह केलनि।

जहिना हाथमे औजार ऐने श्रमिक बड़का-बड़का इंजिन बना चलबैत तहिना हाथमे खौजरी ऐने शंभुओ परिवारक संग समाजक कीर्तन, भजन, यज्ञ इत्यादिमे शामील हुअ लगल।

छह बर्ख बीतैत-बीतैत शंभुक हाथ खौजरीपर बैस गेल। जइसँ असगरे आँगनक ओसारपर बैस जाधरि हाथक आँगुर नै दुखाए लगै ताधरि एकताले सीता-राम सीता-राम, राधेश्याम, राधेश्याम खजुरिक अवाजक संग अपन कंठक अवाज मिला उन्मत्त भऽ गबैत रहैत।

भगवानोक लीला अजीव छन्हि। एक्के मनुख वा पशु-पक्षीक गोटे बच्चाकेँ उम्रसँ बेसीए बना दइ छथिन आ कोनोकेँ कम बना दइ छथिन। कियो पाँचे बर्खमे पनरह बर्खक बुधि-ज्ञान अरजि लैत अछि तँ कियो पनरहो बर्खमे पाँचो बर्खसँ निच्चेँ रहैए। जेना शंभुओकेँ भेल। छबे बर्खमे पनरह बर्खक बच्चाक कान काटए लगल। तहूमे तेहेन समाजक स्कूल अछि जे जेते मेहनति करए चाहत ओते फलो भेटबे करतै।

सदिकाल केतौ-ने-केतौ कोनो-ने-कोनो उत्सव समाजमे होइते रहैए। देवस्थानसँ परिवार धरि केतौ अष्टयाम-कीर्तन तँ केतौ बच्चाक मूड़न, केतौ सत्यनारायण भगवानक पूजा तँ केतौ बिआह-दुरागमन। शुभ काज तँए शुभ वातावरण बनबैले शुभ-शुभ क्रिया-कलाप। शुभ क्रिया-कलाप लेल केतौ ढोलक-झालि-हरिमुनियाँक संग रामधुन चलैत तँ केतौ ढोल-पिपहिक संग गीत-नाद। तेतबे नै, संग-संग परिवारक उत्सवमे समबेत स्वर माए-बहिनक गीत-नाद सेहो चलबे करैए। जहिना पाँच बर्खक बच्चा स्कूलमे नाओं लिखा दोसर-तेसर बच्चा संग पढ़ैत तहिना शंभुओ समाजमे केतौ ढोलक-झालि वा ढोल-पिपहिक अवाज सुनिते ठोकले ओइ जगहपर पहुँच, वेद पाठी जकाँ आँखि-कान समेटि ताधरि देखैत-सुनैत रहैत जाधरि विश्राम करैले बन्न नै होइत। शंभुक क्रिया-कलापसँ दुनू परानी संतोखीदास सेहो निचेन भऽ अपन काज करैत रहैत। काजमे मस्त रहैत। किएक तँ दुनू परानी बूझि गेला जे जेतए ढोल-पिपही बजैत हएत शंभु ओतए जरूर

हएत। तँए जखनि खेत-पथारसँ काज कऽ घुमैत तँ ठोकले ओइ स्थानपर पहुँच शंभुकेँ ताकि अनैत।

समाजो तँ ओहन बाट बना चलैत जइसँ हँसैत-खेलैत जिनगी बिनु थकनहि सदति चलैत रहए। केना नै चलत? धार केकर आशा-बाटक प्रतिक्षा करैए? जहिना अपना गतिए दिन-राति चलैत रहैत तहिना ने समाजो अपना गतिए सदैत चलैत रहैए।

नवम् बर्ख चढ़ैत-चढ़ैत शंभुआ शंभु बनि गेल। कारण भेल जे आन-आन बच्चासँ भिन्न काजक प्रति झुकाव हुअ लगलै। जहिना जीवनी -जीवनक पारखी- वोन-झाड़ वा गाछी-बिरछीमे, बरसातोपरान्त आसिन-कातिकमे नव-नव गाछकेँ माटिसँ ऊपर होइते डारि-पातसँ परखि लैत जे ई फॅल्ला वस्तुक गाछ छी मुदा अनाड़ी नै परखि पबैत तहिना समाजोक पारखी शंभुकेँ परखए लगल। छोट बच्चा जहिना लत्ती-फत्तीमे फड़ल हरिअर चारि पएरबलाकेँ, जेकर मुँह घोड़ा सदृश नमगर होइत ओकरा घोड़ा मानि पकड़ि अपन खेलक एक भाग, सर्कश जकाँ, बना खेलैत तहिना कीर्तन मंडलीक बीच शंभुओ एक अंग बनि गेल। ओना अदौसँ लोक किछु समटल किछु बिनु समटल जे लोकक वोन-झाड़मे हराएल रहल, केँ चिन्हैत आबि रहल अछि। जौं से नै रहैत तँ किछु बनैया किए शिकारक पात्र बनैत। मनुखक लगौल खेती-बाड़ी वा माल-जालकेँ जौं बोनैया नष्ट करए चाहत तँ किए लगौनिहार अपना सोझहामे अपन श्रमकेँ नष्ट होइत देखत। एहनो-एहनो पारखी लगमे रहनिहार अपन -मनुखक- बच्चाकेँ नै परखि पबैत। केना परखत? मनुख तँ गाछ-विरीछ नै जे डारिक रंग-रूप आ पातक सिरखारसँ परखि लेत, मुदा मनुख तँ जीवक श्रेणी -जिनगीक पाँति- मे रहितो आनसँ अधिक नमगर-चौड़गर, फूल-फलसँ लदल दुनियाँबला छी। जे बाहर नै भीतर छिपा कऽ रखने रहैए। रखने अछि की राखल छै ओ भिन्न बात।

जे शंभु अखनि धरि मनुखक मेलाक बच्चाक जेरमे नुकाएल छल ओ नमैर धान-गहुमक गाछ जकाँ बेदरंग हुअ लगल। मुदा रंग-रूप अधिक गाढ़ नै भेने ने अपने देखए आ ने आनेक नजरिक सोझ पड़ए। भलहिं उम्मस भरल भादोमे पुरबा-पछियाक लपकी नै बूझि पड़ैत मुदा

ओहन लपकी तँ माघमे जरूर अपन रूपक दर्शन करबिते अछि। तहिना शंभुओक भेल। एक आँखिसँ दोसर आँखि, एक कानसँ दोसर कान बीआ-बान हुअ लगल। मुदा बीआ तँ बीआ छी, कोनो फले बीआ, तँ कोनो आँठीए। कोनो पाते बीआ तँ कोनो डारिए। तहिना जेते मन तेते खेत। जेते खेत तेते रंगक गाछ। जेते गाछ तेते रंगक फल-फूलक आश। मुदा मनुखक बीआ तँ सभसँ बेढंग -अजीब- अछि। जेहेन-जेते खेत तेहेन तेते रंगक बीआ खसि तेते रंगक गाछ संगे जनमैत। गाछ देखि कियो बजैत-

> "शंभुक सिनेह संगीतसँ तेते भेल जाइ छै जे कहीं घर-परिवार छोड़ि ओकरे संगे ने चलि जाए।"
>
> तँ कियो बजैत-
>
> "भगवान अपने बेटा जकाँ लुइर-बुइध देने जाइ छथिन एक-ने-एक दिन लगमे बजाइए लेथिन।"

ज्ञान स्वरूप देवत्व प्राप्त करैले प्रेमास्पदक बाट धड़ए पड़ैत। जे बिनु बुझने शंभुमे आबए लगल। जहिना एक माटि एक पानि जगह पाबि अपन भिन्न-भिन्न रूप बना भिन्न-भिन्न गुण पसारैत तहिना तँ समाजो अछि। माटिक आड़ि बनि-बनि बाध बँटल अछि, घेरा पाबि-पाबि पानि बँटल अछि तहिना ने समाजो अछि। समाजोक तँ भिन्न-भिन्न रूप आ भिन्न-भिन्न अर्थ अछि। केतौ गामक सीमान मानि समाज मानल जाइत अछि तँ केतौ जाति। केतौ कर्मक हिसाबसँ समाज बनैए तँ केतौ बेवसायिक। कीर्तन मंडलीक समाज ओहन अछि जइमे घर-परिवार सम्हारि लोक -मंडलीक- भगवानोक दरबार पहुँच अपन नीक-अधला -उचिति-विनती- बात सेहो कहैए। तइले ने संगी-साथीक जरूरति आ ने साज-बाजक। थोपड़ी बजा वा चुटकी बजा वा बिनु बजेनौ मुँह खोलि वा बिनु मुहोँ खोलने जेतबे समए पबैत ओतबेमे राधा जकाँ कृष्णक संग रमि जाइत।

नवम् बर्ख खटियाइत-खटियाइत शंभु गामक कीर्तन मंडलीक सदस्य बनि गेल। तइले ने नाओं लिखबैक जरूरति भेलै आ ने कोनो रजिष्टरक। मनक डायरीमे विचारक कलम चललै। मुदा दुनूकेँ -शंभुओ

आ मंडलीओक- आगू चलैक बाटो आ संगीओ भेटलै। संगी पाबि जहिना शंभुकेँ, घरक छप्परसँ खसैत धरियाएल पानि आगू बढ़ि धारमे पहुँच जाइत, तहिना भेल। मंडलीओक फुलवाड़ीमे एकटा नव फूलक गाछ पोनगल। जहिना नम्हर थैरमे नव गाए-महिंसकेँ जातिक समाज भेटलासँ अपन खुशहाल जिनगीक खुशी होइत तहिना शंभुओक सम्बन्ध रंग-बिरंगक कला-प्रेमीसँ भेलै। जहिना टाला-कोदारि लऽ बोनिहार, रिंच-हथौरी लऽ मिस्त्री अपन सेवा दइले जाइत तहिना खौजरीक संग शंभुओ मंडलीक बीच सेवा दिअ लगल। अठबारे मंगलकेँ महावीरजी स्थान आ अठबारे रविकेँ महादेव स्थानमे साँझू पहरमे कीर्तन होइत। जइमे कीर्तन मंडलीक समाजक संग भक्त प्रेमी सभ सेहो एकत्रित भऽ खाइ-पीबै राति धरि मगन भऽ भजनो-कीर्तन करैत आ सुनिनिहारो संगीक संग समुद्रमे दहलाइत-उधियाइत। मुदा बाल-बोध शंभु ने दिनक ठेकान बुझैत आ ने मासक। मंगल केना घूमि-घूमि अबै छै ने से बुझैत आ ने रवि। तँए अन्हारमे बौआइत। मुदा जहिना अगिला बाट भेटने शंकाक समाधान भऽ जाइत तहिना शंभुओ मंगल आ रविकेँ भँजियाबए लगल। खोजनिहार जहिना घनगर वोन-झार सँ कोनो जड़ी वा जरूरतिक गाछ ताकि कऽ लऽ अबैत तहिना शंभुओ मंगल आ रविकेँ भँजियौलक। सातो दिन आ बारहो मासक गुण-अवगुण भँजिया मनमे रोपि लेलक। जइसँ तीसो दिन मासक बीचक तीर्थ आ सातो दिनक आठो पहरक बोध भऽ गेलै। राति-दिनक बीच घरक काज कखनि कएल जाए आ बाहरक कखनि, ऐ लेल तँ पहरे पहरा करैए। वसन्ती-वयार तँ गोटि-पङरा लेल नै सबहक लेल समान सोहनगर अछि भलहिं कियो कुम्हकर्णी नीनक मस्ती लिअ आकि ब्रह्मलोक पहुँच कुम्हारक चाक चलबए। जाधरि चाक नै चलत ताधरि नव बर्तन केना गढ़ल हएत? ओहन खेत वा पोखरि जकाँ शंभुक मन दिन-राति छिछलए लगल जेहेन पोखरिक किनछरिमे ठाढ़ भऽ चौरगर खपटा वा झुटका पानिक ऊपर फेकलासँ ऊपरे-ऊपर छिछलैत दूर तक जाइत, जहिना अनगर लबल धानक सीसपर होइत मन छिछलैत एक आड़िसँ दोसर धरि छिछैल-छिछैल देखि-देखि खुशी होइत, तहिना। भोरमे नीन टुटिते शंभु ओछाइनेपर दिन भरिक जिनगीक बाट जोहए लगैत। साँझ परैत-परैत जहिना कृष्ण संगी-साथीक संग आबि माए जशोदाकेँ अपन

लकुटि कमरिया सुमझा संध्या बंधन करए विदा होथि तहिना शंभुओ उगैत सुरूजक संग दुनियाँ देखैक उपक्रम सोचए लगैत। भगवानक नजरि तँ पहिने ओइ पुजेगरीपर ने पड़ैत जे नव-नव फूल-अछतसँ सजल सिक्कीक नव फुलडालीमे नव गाछक फूल लऽ रहैत। बाँकिकेँ तँ गिनती कऽ कऽ रखि लेल जाइत। गाछमे सबुरक फलक सिरखार, कटहर जकाँ देखि पड़ैत। दिन भरि समए बँचल अछि जखने बाध-वोन दिस जाएब तँ कोनो-ने-कोनो भेटबे करत। जौं भेट गेल तँ बड़बढ़ियाँ नै तँ उचिति-विनती कऽ आर्त्त भऽ थारीमे रूइक बत्ती नेसि कानि-कलपि कहबनि। अनकर जौं सुनैत हेथिन तँ हमरो सुनता नै तँ केकरो नै सुनथिन। अपना-अपना करमे-भागे लोक जीब लेत।

चौदहो भुवन -चौदहो लोक- सदृश समाजमे चित्र-कुटक घाट जकाँ अनेको घाट। कम वा बेसी सबहक मनमे भगवानक प्रति आस्था भलहिं आत्मा, जीव आ मायाक तात्विक रूप नै बुझैत हुअए। से सिरिफ पुरुखेटा मे नै महिलोमे। समरपित भऽ निअम-निष्ठासँ आठ घंटासँ लऽ कऽ बहत्तरि घंटा तकक उपवास हँसैत-मुस्कीआइत कऽ लैत। एहेन पत्नीए की जे अपन पतिकेँ देवालय जाइसँ रोकती। समाजक भीतर समबेत स्वरे अष्टयाम, नवाह, नाचक संग आनो-आन सामाजिकता होइत जे मंचपर बैस सामूहिक रूपे गबैत। तहिना माएओ-बहिनिक बीच छन्हि। मूड़न हुअए आकि उपनैन, कुमार गीत हुअए वा बिआह, छठि हुअए वा फगुआ, सामूहिक रूपे सभ एकठाम भऽ गबै छथि। नव-नव गायिकाक सिरजनो होइत आ अवसरो भेटैत। किएक तँ दादी-बाबी उदारतासँ कहै छथिन जे आब बूढ़ भेलौं, कफ घेरने रहैए तँए नवतुरिएकेँ गाबए दहक। सामाजिक वातावरणमे श्रद्धा, प्रेमक संग भाइचाराक बेवहारिक पक्ष अखनो अछि। एकर अर्थ ईहो नै जे आपराधिक वृत्ति दबल अछि। अगुआएल छल, बहुत अगुआएल अछि। आँखिक सोझमे बहिन-बेटीक संग दुरबेवहार बाड़ी-झाड़ीक वस्तु बलजोरी तोड़ि लेब, खेतक फसल क्षति कऽ देब इत्यादि-इत्यादि। एक नै अनेक आपरधिक वृत्त अपन शक्तिसँ समाजकेँ दबने अछि। मुदा तँए कि जिनगीकेँ आश नै छै, छै धर्मक संग प्रेमसँ छै। जौं से नै छेलै तँ बाड़ी-झाड़ी वा खेत-पथारमे काज-करैत किसान किए गौओं-घरूआ आ बाट चलैत बटोहीकेँ दूटा आम खाइले कहै छथिन?

एकटा सजमनि अगुआ कऽ दइ छथिन जे धिया-पुताकेँ तरकारी बना देबै। कहाँ मनमे छन्हि जे दस रूपैआ बूड़ि रहल अछि। रोपैइए काल दू-दूटा फलक गाछ लगबै छथि जे एकटा परिवार लेल, दोसर समाज लेल। जौं परिवार-परिवारमे एहेन वृत्ति अपनौल गेल रहैत तँ की सामाजिक सम्बन्धमे औझ्रुके टूटान अबैत??

रवि-मंगलकेँ देवस्थानमे कीर्तन अनिवार्य रूपे चलिते छल, जहिना विद्यालयक कार्य-दिवस। अनदिना सेहो दरबज्जे-दरबज्जे होइते रहै छल। जेना सबहक जिनगी बन्हाएल चलैत होइ। भरि दिन खेत-पथारसँ माल-जालक पाछू लगल रहै छला आ साँझ पड़िते कीर्तन-मंडलीक बीच पहुँच जाइ छला जे खाइ-पीबै राति धरि चलै छल। खेला-पीला पछाति सुतै छला। कहाँ कखनो समाजक प्रतिकूल बात सोचैक समए भेटै छेलनि। जे लोकनि मंडलीकेँ हकार दऽ अपना ऐठाम कीर्तन कराबथि ओ अपन विभवक अनुकूल भोजनो आ साजो-समानक ओरियान कऽ दइ छेलखिन।

पहिल दिन शंभुओकेँ सवा हाथ वस्त्र आ सवा-आना पाइ भेटलै। खा कऽ जखनि शंभु विदा हुअ लगल तँ गरे ने अँटै। दू हाथमे तीन समान -पाइ, वस्त्र, खौजरी- अन्हार रातिमे केना लऽ कऽ जाएब। पाइकेँ जौं वस्त्रमे बान्हि एक हाथमे लऽ लेब आ दोसर हाथमे खौजरी लऽ लेब, से भऽ सकैए। मुदा दुनू हाथ अजबाड़ि रातिमे चलब केना? ढिमका-ढिमकीक रस्तामे केतए ठेंस लगत केतए नै। जौं घरवारीएकेँ संग चलैले कहबनि सेहो उचित नै। हमरा सन-सन केते गोरे छथि। किनका-किनका संग पुरथिन। जौं कन्हपर आकि डाँड़मे वस्त्र लगा लेब तँ पहिरौठ भऽ जाएत। केना बाबूकेँ पहिरोठ वस्त्र देबनि। गुन-धुनमे पड़ल शंभु एक गोटेकेँ अपना घर दिस जाइत देखि पिताकेँ समाद पठौलक-

> “बाबूकेँ कहि देबनि जे डलना तेहेन चोटगर बनल छेलै जे इच्छासँ बेसीए खुआ गेल। तैपर तीन-तीनटा वस्तु लऽ कऽ अन्हारमे केना आएल हएत तँए आबि कऽ लऽ जाथि।”

एगारहम बर्ख पूरैत-पूरैत शंभुक गिनती गामक भजनियाँक संग भगवानक भक्तोमे हुअ लगल। तहूमे ओहन भक्त जे बिनु बिआहल हुअए। ब्रह्मचारी। ओना शंभुक स्वभावमे सेहो सामान्य बच्चाक अपेक्षा

विशेष गुण छेलै जे सभ देखै छला। जहिना कियो पनरह बर्खक उमेर बितेला पछाइतो पाँचो बर्खसँ कम उमेरक बच्चासँ पछुआएल -लूरि-बुधिमे- रहैत आ कोनो-कोनो बच्चा दसे बर्खमे सियान जकाँ भऽ जाइत। मुदा समाज तँ अथाह समुद्र छी। जेहेन पारखी तेहेन परख। डोका-काँकोड़सँ लऽ कऽ हीरा-मोती धरि समेटिनिहार समुद्र सदृश समाज। एहनो पारखी जे एक तरहक जानवर -गाए-महिंस इत्यादि- पोसि दोसरो-दोसरो तरहक जानवरक जिनगीकेँ दूर धरि देखैत आ एहनो जे सभ दिन सोझहामे रहितो किछु ने -जिबैक रस्ता- देखैत। तहिना पारखी शंभुओकेँ परखलनि। कीर्तन मंडलीक ऊपर श्रेणीक कीर्तनीआँमे शंभुक गिनती हुअ लगल। गुरु तँ सदति शिष्य तकैत। शिष्य-गुरुकेँ एकठाम भेनहि ने जिनगी आगू ससरैए। जाधरि से नै होइत ताधरि मिश्री कुसियारक पानिमे डुमल रहैत आ शिष्य सरपतक श्रेणीक गाछ बूझल जाइत। शंभुकेँ एक संग दू गुरु भेटल। एक अगुआ -वजन्त्रीसँ गौनिहार- मुरते आ दोसर साज-बाज। जहिना रंग-बिरंगक कोठीमे रंग-बिरंगक अन्न-पानि देखि गृहस्वामिनीक मन सदति हरियाएल रहैत तहिना शंभुओ हरियाएल।

अखनि धरि शंभुक गिनती माए-बापक बीच, ओहन बच्चा सदृश छल जेहेनकेँ काजक भार तँ नै मुदा जिनगीकेँ जिआ रखब माए-बापक कर्तव्य-कर्मक श्रेणीमे रहैत। जइसँ बिनु पगहाक पशु जकाँ शंभुओ। तहूमे आब शंभु छेँटगर भऽ गेल। जखने भूख लगतै तखने दौगल औत नै तँ भरि दिन भुखलो रहि सकैए। तँए कि शंभुक खाइ-पीबैक आ रहैक ठौरो बिला गेल? नै! ओ सभ रहबे कएल। हँ! एते जरूर भेल जे कखनि आबए आकि जाए से पुछिनिहार नै रहल। सुखनीए संतोखीदासकेँ कहि देने रहनि जे बाल-बोधकेँ पाछूसँ नै आगूसँ टोकल जाइत अछि। जहिना राहड़िक गाछक बुट्टीकेँ चारू भागसँ सिर पकड़ने रहैत तहिना तँ मनुक्खोक अछि। मुदा जीवनी तँ गर लगा कोदारिक छह मारैत जे अपन पएरो बँचै आ बुटो उखड़ै। तँए उत्तम कोटिक काज वएह ने जे साँपो मरए आ लाठीओ ने टुटए।

घरक कोनो काजक भार शंभुकेँ नै रहैक कारण छल जे माए-बापक हृदए घेराएल रहनि जे माए-बाप अछैत जौं बेटा-बेटीकेँ कोनो भार पड़त तँ खिच्चा गाछ जकाँ वा केराक गाछ जकाँ पिचा कऽ थकुचा भऽ

जाएत। जइसँ शरीर खिलचि जेतै। जखने शरीर खिलचतै तखने जिनगी खिलचि जेतै। जइसँ रोगाएल गाछ जकाँ सभ दिन खिद-खिद करैत रहत। जौं एहेन जिनगी बेटा-बेटीक भेल तँ ओ परिवार केते दिन आगू मुहेँ ससरत। तँए, जाधरि बाल-बच्चाकेँ निरोग बना नै रखब ताधरि वंशकेँ आगू मुहेँ ससारब कोरी-कल्पना हएत। जइसँ ने माए-बाप -सुखनी-संतोखीदास- शंभुकेँ कोनो काज अढ़बैत आ ने शंभु किछु करैत। सभ किछु अपन रहितो शंभु अपन किछु नै बुझैत। तँए, धैनसन! परिवारक काजक तहमे पहुँचलापर ने कियो बुझैत जे ऐ काजकेँ नै भेने परिवारमे की नोकसान हएत। ई जिनगीए तँ बर्खा-पानिक बुलबुला जकाँ अछि। लगले बनत, चमकत आ फूटि जाएत। एहेन जौं क्षणभंगुरोसँ क्षणभंगुर जिनगी अछि, जेकर कोनो बिसवास नै अछि तेकरा पाछू पड़नाइए नादानी हएत। भने ने जनकजी ऐ बातकेँ बूझि भोगो-विलासकेँ अधला नै बुझै छला। भलहिं शंभुक मनमे जे होइ मुदा माए-बापक मनमे जरूर रहनि जे जाबे थेहगर छी ताबे जौं काजसँ देह चोराएब तँ परिवारक प्रति अन्याय करब हएत। बुढ़ाड़ीमे झुनाएल धान जकाँ सीसक टूर तूइ-तूइ जहिना खसैए तहिना ने शरीरक अंगो -आँखि, कान इत्यादि- खसबे करत। जखनि देह भंग हुअ लगत तखनि तँ बेटे-बेटी ने श्रवण कुमार जकाँ भारपर टाँगि तीर्थ-स्थान घुमौत। एहेन काज तँ ओकरा ऊपर लधले छै तखनि मुर्दा जकाँ नअ मन बोझ लधनाइ उचित नै। की करत वएह वेचारा, एक दिस माए-बापक बोझ पड़तै अपनो जिनगी रहतै तैपरसँ बाल-बच्चाक कोनो ठेकान छै जे भगवान केते देथिन केते नै। हुनका थोड़े बूझल छन्हि जे अन्न-पानि केते महग भऽ गेल अछि। जेतए मरूआ बरबरि माछ बिकै छल ओतए मरूआ धिना कऽ देश छोड़ि देलक मुदा माँछ सिमटीक चिनमारपर गिरथानि बनि अजबारि कऽ बैसल अछि।

ढेरबा बच्चा रहितो शंभु समैसँ दोस्ती केलक। दोस्ती निमाहैले मंडलीक संग पूरि जखनि सभ सूतए ओछाइनपर जाइत तखनि शंभु साइकिल सीखैत बच्चा जकाँ पहिने हरिमुनियाँ, ढोलक, झालि इत्यादिकेँ निहारि-निहारि देखए। जहिना युवक-युवती पहिल नजरिमे पहिल रूप देखैत तहिना शंभुओ देखलक। देखलक जे एक नै अनेको जुगलजोड़ीक संयोगसँ समाज ठाढ़ अछि। जइमे अपन-अपन गुणकेँ मिज्झर भऽ कऽ

मिलि-जुलि चलि उकरू-सँ-उकरू बाट टपि श्रृंगी ऋृषिक फुलवाड़ी देखैत। एकपेरिया झालि केना टुक-टुक जोड़क बनल हरिमुनियाँ संग ठिठिया-ठिठिया चलैए। शंभुक सिनेह समूहसँ भेल।

पाँचिम दशकसँ पूर्ब, अष्टयाम कीर्तनक मूलमंत्र ''सीताराम, सीताराम'' छल। कारणो स्पष्ट अछि। जगत जननी जानकीक मिथिला, जिनक संकल्प पूर केनिहार राम। सीताराम मंत्रमे शंभुकेँ ऋृतानुसार सभसँ भेटए लगल। जहिना जखनि जेहेन मन तखनि तेहेन विचार, तहिना। भोरमे प्रभाती बेर 'सीताराम'मे शंभुकेँ वसन्ती वा ब्रह्मणी रस भेटैत जखनि कि दिन-रातिक गतिए रसोक रस बदलए लगैत। मुदा मंत्रमे कोनो बदलाउ नै होइ। बाल-बोध रहितो शंभु जीवनी जकाँ सिर सजमनिक भाँज बुझैत। हनुमानजी जकाँ नै। जे छोटो काज लेल नम्हर अस्त्रक प्रयोग करब। आ ने अनाड़ी-धुनाड़ी जकाँ पराती बेर साँझ आ साँझक बेर पराती गबैत। जौं गेबो करैत तँ जहिना हलुआइ चीनीक चासनीमे रंग-बिरंगक वस्तु बना ओइमे बोड़ि मधुर बनबैत। एहने सन शंभुओक मनमे उपजै। ओना जेते रंगक मंत्रक जरूरति होइत तेते एबो ने करै। नै अबै तहूमे ओकर दोख नै। दोखो किए हेतै एक तँ वेचारा पशु जकाँ असगरे खुट्टा धेने, तैपर बाल-बोध। मुदा तैयो बकरी बच्चा जकाँ नै जे दूध पीविते छड़पए-कुदए लगैत।

हड़लै-ने-फुड़लै शंभु घरसँ पड़ा गेल। दुनू बेकती संतोखीदास खेतमे काज करए गेल रहथि। तँए भरि दिन कोनो भाँजे नै लगलनि। कारणो रहए। दुपहर तक तँ आनो दिन हटले-हटले रहै छला। साँझमे खोज करै छेलखिन। दिन तँ घुमै-फिरैक होइ छै मुदा राति तँ ठौर पकड़ैक होइ छै, तँए।

घरसँ निकलिते शंभु घरक सभ किछु बिसरि गेल। खौजरीओ बिसरि गेल। बिसरि नै गेल मनसँ हटि गेलै। नवका चानक -तीर्थानुसार- नव ज्योति भेटलै। जहिना ताड़ी देनिहार खजुर, लपकि कऽ ताड़ पकड़ि लैत तहिना शंभुक खौजरी, तबला पकड़ि लेलक। तबला पकैड़िते खौजरीएक हाथसँ बजबए लगल। बजबैत केते दूर गेल तेकर बोध नै रहलै। दुनियाँक बीच हरा गेल। जेम्हर देखैत दिन छोड़ि किछु ने

देखैत। बाध-वोन, गाछ-बिरिछ, पोखरि-झाँखड़ि, हल्लुक-सुखाएल धार-धूर तँ सभ गाममे रहिते छै। आड़ि-धूर बनौनिहार आकि नक्शा-खतियान देखनिहार ने खेत-पथार, गाम-घरक बात बुझैत, जे नै बुझैत ओ दिन-राति छोड़ि आरो की बूझत, तहिना शंभुओ। बीच बाटपर शंभुक मनकें हुदकबए लगलै। गामक कीर्तन मंडलीक अगुआकें मुँहक बात मन पड़लै जे पचगछियामे बड़का-बड़का बजो छै आ बजोनिहारो। खाइओ-पीबैले देल जाइ छै आ रहैओक बेवस्था छै। जहिना कोनो बीज भूमिकें छेदि अँकुरि ऊपर आबि अपनाकें वृक्षक पूर्ब रूप बूझि इतराइत तहिना ने बच्चोक बुधिक अँकुर जगैत, तहिना शंभुओकें भेल। उत्साहित भऽ घरसँ निकलि विदा भऽ गेल मुदा खास जगहपर पहुँचैले जानकारीक जरूरति होइत। ओना जौं खास जगह नै, आम जगह देखए चाहब तँ कोनो परिचएक जरूरति नै होइत। जएह देखब, जेतबे देखब, जेतए देखब सहए दुनियाँ। जेहेन आँखिक ज्योति तेहने रंगक दुनियाँ। मुदा पंचगछिया जाइले तँ जानकारी बनाएब जरूरी अछि। मनमे उठलै पूछि-पाछि लोक केतए-सँ-केतए चलि जाइत अछि। तखनि किए ने जा सकै छी। जहिना आन बाट-घाट टपि लोक अपन स्थानपर पहुँचैए तहिना किए ने पहुँचब। पेटक भूखक संग मनोक भूख कमलै। भूख कमिते संकल्प शक्तिक उदय भेलै।

पचगछियाक रायबहादुर लक्ष्मीनारायणजी जेहने संगीत कलाक मर्मज्ञ तेहने साधको। संगीत कलाक सिनेही रहने 'संगीत कला केन्द्र' स्थापित केने छथि। जइसँ मिथिलांचलक अनेको गायक, वादक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति पौने छथि।

एगारह-बारह बर्खक शंभुकें केन्द्र लग पहुँचलोपर भीतर जाइक हिऔए ने डटै। कातमे ओइ भूखल-पियासल मरूभूमिक चिड़ै जकाँ दूर-दूर धरि अन्न-पानिक छूति नै देखैत। समुद्रक ओइ सीप सदृश शंभु मुँह बाबि ठाढ़ भेल जे स्वाती नक्षत्रक बूनक आसमे रहैत। तखने मांगन मण्डल निकलला। अन्तर्राष्ट्रीय स्तरक संगीत ममज्ञ। शंभुपर नजरि पड़िते आँखि आकर्षित केलकनि। मुदा चेहरा अपन भूख देखौलकनि। बिना किछु पुछने-आछने शंभुक बामा बाँहि पकड़ि केन्द्रक भीतर आनि

खुऔलनि। खेनाइ खेलापर शंभुक मन असथिर भेलै।
मांगन पुछलखिन-

"बाउ, की नाओं छी?"

"शंभु।"

"परिवारमे के सभ छथि?"

"बाबू, माए।"

"भाएओ-बहिन छथि?"

"हँ।"

"आइ रहि जाउ काल्हि निचेनसँ गप करब।"

"बड़बढ़ियाँ।"

दिन बितल साँझ आएल। बाहर दिससँ अन्हार आबए लगल। जेना-जेना अबैत तेना-तेना करियाएल जाइत। करियाइत-करियाइत ओते करिया गेल जे अपन आँखि हाथो ने देखैत। जे जेतए से तेतए गबदी मारैक ओरियानमे लगि गेल। मात्र दूटा पिपनी लगल कपाट कखनो खुजै कखनो बन्न भऽ जाए। डर सन्हियाए लगलै। जेना-जेना डर अपन पैठ बनबैत जाए तेना-तेना शंभुकेँ डरौन लागए लगलै। कानए लगल। कनिते मनमे उठलै माए-बाप, संगी-साथी, गाम-घर। केना नै मन पड़ैत? माटिक बनल रस्तो अन्हारमे बजैत- भाय ऐठाम कटारि अछि, आगू हुच्ची। भलहिं रस्ता हिसाबसँ ओकाइत कम अछि मुदा खुरलुच्ची सबहक खुनल छी तँए रस्ता बगलि कऽ टपब। पुन: उठलै माएक कएल भानस। खाइ-पीबै राति भऽ गेल। भानस कऽ कऽ माए तकैले बौआइत हएत। मोने-मन कहैत हएत साँझ भऽ गेल अखनो धरि किए ने आएल। चारि बेर सोर पाड़ि बाबूओ अकछि कऽ अपनो खेनाइ छोड़ि ओछाइनपर ओंघरा गेल हेता।

मन केतौ तन केतौ शंभुक जहलक कैदी जकाँ। हुचकी बढ़ितो गेलै आ जोरो केलक। आगूमे ठाढ़ भेल मांगन असमंजसमे पड़ल रहथि। केना नै पड़ितथि? जिनगीक पहिल दिन पहिल दृश्य। तँए नाटकक बिनु

देखल दृश्यक सदृश। सोलहन्नी नव! जहिना परीक्षा फीस नै रहने विद्यार्थीकेँ फार्म भरैक अंतिम चारि बजे, नम्हर बिमारी एने परिवारक, जेठुआ दुपहरियामे पीआकक मन बौरा जाइत तहिना मांगनकेँ सेहो भेलनि। एक दिस हुअबला जिनगीक प्रश्न अछि तँ दोसर दिस असगरे ओइ जगहपर पहुँच गेल अछि जेतए सभ अपरिचिते छै। मन नाचि भगवान रामपर गेलनि। अयोध्याक राजक बदला वोन भेटलनि। मुदा अयोध्यासँ निकलि गंगा पार होइते कोनो-ने-कोनो ऋृषि-मुनिक आश्रम भेटिते गेलनि, तखनि वोन की भेलनि? मुदा लगले मन उनटि गामक बूढ़ माएपर गेलनि। वेचारीकेँ जही दिन नातिनक जनम भेने बेटी मरि गेलनि। नानीसँ माए बनि वेचारी मरनी बेटी दुलारूक नाओं नातिनक रखलनि। उत्साह जगलनि। मन बाजि उठलनि- ऐ बच्चाकेँ नै बौआए देबै। भलहिं राति किए ने जागि कऽ बितबए पड़ए। मुदा शंको तँ जीविते अछि। लगले मनमे उठलनि जे हो-न-हो अनचोकेमे नीन चलि आबए आ तहीकाल पड़ा जाए। झाड़ी वोन जकाँ मांगनकेँ रस्ता भेटबे ने करनि। जौं भेटबो करनि तँ कोशिकन्हाक खट्टा-पटेरक रस्ता। लगले ओरा जाएत। ओरेबो केना नै करैत? भूख-पिआस, नीन केकरो पूछि कऽ अबैए। भलहिं ओकरा सुति कऽ आकि खा-पी कऽ भगौल जा सकैए। आगूक बाट भेटिते मांगन कोठरीक केबाड़मे लगल तालाक कुन्जी सिरमामे रखि लेलनि। मुदा तैयो शंका दबिते रहनि जे जखनि नीनभेर भऽ सूतब आ शंभु पड़ाए चाहत तँ की सिरमाक चाभी नै निकालि सकैए।

धीरे-धीरे शंभुक कनैक अवाजमे मिठापन आबए लगल। भरिसक नीनक आगमन भऽ रहल छै। मिठासे कानब ने सुखोक एकटा कारण छिऐ। मुदा तैयो मांगनक मन उचटिते जान्हि। घर-बाहरक वा तीर्थ यात्रा आ तीर्थस्थानक सीमापर जहिना संकल्पक उदय होइत तहिना मांगनकेँ सेहो भेलनि। तकैत आँखिए काल्हका सुरूज देखब। मुदा असगर तँ रातिओ काटब असान नहियेँ। समुद्रक अगम पानिमे डुमए लगला। मुदा लगले नाचक हरही बुढ़ियापर नजरि पड़लनि। नजरि पड़िते उठलनि ओहो बुढ़िया गामक युग पारखीए छी। आन-आनकेँ देखै छी जे लोकक लाटमे राति बितबए चाहैए आ ओकरा कियो लाटमे रहै ने दिअए चाहैए। मुदा बुढ़िया तँ बुढ़िए छी, कियो ओकर बात सुनै वा नै सुनै भरि राति

बड़बड़ाइते रहैए। भलहिं साँझकेँ भोर कहै आकि भोरकेँ साँझ। जखनि जे मन फुड़ैत तखनि से पहरिया नोकर जकाँ भरि राति ठाढ़ करैत। अस-विस करैत बरिआतीकेँ जहिना खिस्सकर रंग-रंगक चसगर चासनीमे डुमबैत तहिना मांगन मण्डलक मन बड़बड़ाए लगलनि। बिसरए लगला शंभुकेँ आ अपन कर्तव्य-कर्ममे डुमए लगला। हाथ-पएर मारि अन्हारे-अन्हार नीन आबि शंभुकेँ गोंति देलक। जहिना अथाह पानिक तरमे मुँहक बोल पानिएमे बिलीन भऽ जाइत तहिना शंभुक कानब भेल। नाकक साँसक अवाजसँ मांगनकेँ बिसवास भऽ गेलनि जे शंभुकेँ नीन आबि गेल। असथिर भेला। मुदा फेर लगले उठलनि जे चहाएल मन कखनो चहा कऽ उठि सकैए। जौं कहीं शंभुक नीन देखि अपनो नीन पड़ि गेलौं तखनि तँ सभ चौपट भऽ जाएत। ओना दुनियाँ देखैबलाक छी। देखैबला दुनियाँक बीच हराएत किए। जखनि सभ मिला दुनियाँ अछि तखनि हराइक प्रश्न केतए अछि? मुदा लोककेँ दिसांशो तँ लगै छै। दिसांशे लगलापर ने कियो पूबकेँ पछिम आ उत्तरकेँ दछिन बुझै छै मुदा अकासकेँ पताल आ पतालकेँ अकास कहाँ बुझै छै? लगले ओइ सीमानपर पहुँच गेल। जेतए बाल-बोधक रच्छा होएत। बाल-बोधक रच्छा तखने भऽ सकैए जखनि ओकरापर नजरि राखल जाए। तैबीच मनमे उठलनि अपन आ अपन संगीक संग संस्थाक महत। मन बुदबुदाए लगलनि।

मनुखक जीवन तँ तखने ने जीवन जखनि जीवनक वोन लगा दिअए। ओना एक बारगी एहेन शक्तिक उदय संभव नै, मुदा डारि पात, सिर, फड़, फूल इत्यादिक एक-एक अंगक तात्विक बोध होइ। केतेको बेकती ऐठाम -संगीत केन्द्र- सँ गायक, वादक बनि-बनि अपन शक्तिक प्रदर्शन करैत आबि रहल छथि। ओइ आम-जामुनकेँ किए ने सबुर हेतै जे अपन बाल-बच्चाक -गाछी- संग शरीर त्यागत। जहिना आइ धरि, घर-परिवार बसबै पाछू लगल रहलौं तहिना जाबे घटमे घटवार अछि, नाह खेबैत रहब। भिनसरमे जखनि शंभुक संग गाम पहुँचाबए जाएब तखनि सोझहे घूमि कऽ चलि नै आएब। बहुत दिन भेँट भेना सरियादासीनसँ भऽ गेल। स्वर्गक गायिका मुदा से नै पाहि लगा एकठामसँ शुरू करब आ सबहक भेँट करबनि। हँ, जरूर करबनि। मुदा गुरुओजी मानथि तखनि ने। जहाँ एकसँ दोसर दिन हएत आकि हकबाहि करए लगता। समाद-

पर-समाद पठबए लगता। ओहो तँ जरूरीए अछि। नै रहने अपन सुन्नर फुलवाड़ीक ताम-कोर के करत? खैर जे होइ, बाल गोविन्द जीक ऐठाम जरूर जाएब। बड़ागामक लहलहाइत बगीचाक ओगरवाही तँ वएह ने कए रहला अछि। ओना अपने सिख-लिखक समांग महेन्द्र सेहो छथि। महेन्द्र, बालानन्द, शंकर, संजीव, रामनारायण, विनय, बेचन ओइठामसँ राम प्रसाद महतो ऐठाम होइते आगू बढ़ब। नै जाएब सेहो उचित नहियेँ हएत। मनुख तँ कौछु नै छी जे अंडा दैत पड़ाएल जाएब। मुदा काँकोड़ो तँ नहियेँ छी जे जेकरा पेटमे रखलौं ओ पेटे खोखरि खा लिअए। शीतनारायण सुरेन्द्र आ अजयसँ सेहो भेँट कइए लेब। ओना भेँट हएत कि नै सेहो ठेकान नहियेँ अछि, किएक तँ उड़ंतबाज सभ ने बनि गेला अछि। हदसँ अधिक पीतमरू राम प्रसाद। प्रेमकेँ जहिना प्रेमास्पदक बाट भेटिते विश्वास भऽ जाइत जे प्रेमी संगे-संग चलि रहल छथि तहिना राम प्रसादो ने। मुदा बेसी लटारममे केतौ नै पड़ब। लटारममे पड़ब तखने ने बेसी दिन लगत। जौं से नै करब तँ किए बेसी समए लगत। हँ तखनि एकटा करब जे जखनि कियो भेँट हेता तँ हुनको गुरुजीसँ मोबाइलपर भेँट करा देबनि। जखने भेँट हेतनि तखने ने बुझथिन जे परिवार आ संयास की छिऐ। जखनि ओम्हर जाएब तखनि हिताइ दास, बेचन मण्डल, राम गुलाम दास, रामायणी देवी, छठू दास, दरवारी दास, बतहू मण्डल, लखन दास, राधेश्यामजी, रामजी दास, बौआ झा, राम भजनसँ भेँट नै करियनि तँ जिनगी भरि उपरागक मोटरी कपारपर चढ़ल रहत। जौं कहियो भेँट हेता तखनो आ समदियो दिया समाद पठा कहता जे एम्हर एलौं हमरा छोड़ि देलौं। मनमे उठलनि माटिए पानिक संयोगसँ ने जीवधारीक सिरजन होइए। गंगा-ब्रह्मपुरक बीचक धरती मिथिला। एकलब्य सदृश एक-सँ-एक योद्धा कर्मरत् छथि। एक लपकन अमतो चलिए जाएब। राधाकृष्ण आ कारतारामक लगौल फुलवाड़ी। ध्रुपदक विशेष चमत्कारी शैलीक फुलवाड़ी। पद्मश्री राम चतुरजी, विदुर, अभय, रामकुमार, रमेश आ पाठक जीक भेँट सेहो कइए लेबनि। मन बिलमलनि। रातिक बारह बजि गेल। कोठरीसँ निकलि अकास दिस तकलखिन तँ बूझि पड़लनि जे अन्हार ओससँ सिक्त भऽ शीतल बना रहल अछि। साँझसँ दबाएल इजोत अन्हारक सोझ आबि ठाढ़ भऽ गेल अछि। अदहे राति तँ आब जगैक

अछि। एक दिन बितने तँ माघ सन जाड़कँ पिहकारी दऽ भगौल जा सकैए तँ अदहा रातिकँ एकटा धुनो ठेल सकैए। पुन: कोठरी आबि शंभुकँ देखि ओछाइनपर ओँङठि गेला।

ओङठिते मन पड़लनि पानिचोभ। जखनि अमता जेबे करब तखनि एक लपकन पनिचोभो चलिए जाएब। ओना जखने पनिचोभ जाएब तँ ओ दिन गुनैत-गुनैत सात दिनसँ पहिने नहियेँ छोड़ता मुदा ओत्ते नै अँटकब। एम्हर अँटकब तँ अपन बोहिओ जाएब। अबध जीक लगौल गाछी कोन तरहेँ रामचन्द्र, दिनेश्वर, राजकुमार मंगनू, फुलानन्द, भूपेन्द्र ओगरबाहि कऽ रहल छथि सेहो बिना गेने केना देखब। ओम्हरसँ बनारसक गुरु-शिष्य परम्पराक जीवित रखनिहार खरबान जीक ऐठाम सेहो जेबे करब। मनसा मिश्र आ डीही मिश्रक लगौल कृष्ण लीला आ रामकथाक वृक्ष कोन तरहेँ सीतू, हीरा, भगत, रामजी, परमेश्वरी, अनन्त, दम्मन, सत्यनारायण आ रामवृक्ष सिंह पालि-पोसि रहला अछि सेहो देखि लेब। ओना बीच बाटपर दरवारी दास सेहो पड़ता मुदा ओ घुमन्तू लोक, भेँट हेता आकि नै! खैर, गाम तँ कम-सँ-कम देखि लेब। आगू कहियो दोखी तँ नै हएब।

भोर होइते चारू दिसक गाछी-कलम बँसबाड़िसँ चिड़ै सबहक अवाज उठए लगल। कियो अपन संगीकेँ कहैत जे भोरूका नीन बेसी सोहनगर होइ छै तँए एक नीन ओरो लगा लिअ। तँ कियो कहैत सुरूज उगलापर तँ दुनियाँक एक-कोनसँ दोसर कोण धरि उड़ैक समए रहैए तँए ओइसँ पहिने जेते उड़ि लेब ओते अगुआएल रहब। चिड़ैक अवाज सुनि मांगनक मनमे सबुर भेलनि जे भरिसक भोर होइपर अछि। राति बित गेल एकोबेर नीन कहाँ आएल। आब जौं शंभु उठबो करत तँ रतुका डर थोड़े खेहारतै। मुदा प्रश्न उठलनि- भरि राति जगैक प्रयोजन की?
जहिना गाछपर रहैबला चिड़ै-चुनमुनी हुअए आकि पोखरिमे रहैबला, माटिमे रहैबला जीव-जन्तु हुअए चाहे पाथरमे बास करैबला हुअए, सबहक माए-बाप ताधरि ओगरबाहि करैत जाधरि ओ स्वतंत्र भऽ जिनगी नै प्राप्त कऽ लैत।

शंभुकँ गाम पहुँचा मांगन आगू बढ़ि गेला।

राति भरिक चिन्ता संतोखीदास आ सुखनीकेँ शंभुपर नजरि पड़िते उड़ि गेलनि। पुछैक प्रयोजने ने बूझि पड़लनि जे पुछिऐ राति केतए रहए। ओना दुनू परानीकेँ पहिनेसँ बूझल जे कीर्तन मंडलीक संग रहैए, भगवानक भजन कीर्तन करैए। मुदा तैयो शंभुपर नजरि पड़िते मन खुशी भेलनि। मनमे उठलनि जे माल-जाल जकाँ थोड़े बान्हल जा सकैए। जेना-जेना सरकैत जाएत तेना-तेना अपने ने जिनगीक बान्ह लगैत जेतै। आह्लादित भऽ संतोखीदास पुछलखिन-

"बौआ, काल्हिएसँ नै देखने छेलिअ। केतौ अनतए गेल छेलह?"

पिताक सिनेह शंभुक सिनेहकेँ सेहो जगा देलक। बाजल-

"बाबू, काल्हि भोरेसँ मन औनाए लगल। केतबो असथिर हुअ चाही से हेबे ने करी। घूमि-फिर पचगछिए मन पड़ि जाए।"

संतोखीदास पुछलखिन-

"पचगछिया केना बुझलहक?"

शंभु कहलखिन-

"कीर्तन मण्डलीमे बेसी काल चरचा होइ छै। जेना सभ किछु बिसरि गेलौं। हरल-ने-फुड़ल विदा भऽ गेलौं। ओतइ चलि गेल छेलौं। बड़का-बड़का गवैया, वजन्त्री सभ ओइठीन छै।"

संतोखीदास पुछलखिन-

"अइले एते दूर जाइक कोन खगता अछि। सुनै छी अपने गाममे महिना दिन रमलीला चलत। केते देखबहक?"

शंभु बाजल-

"केते दिनमे औत?"

संतोखीदास कहलखिन-

"अगिला मास औत। अखनि आसिन-कातिक छिऐ ने रजो-महराजक बखारी खलिया जाइ छै। तैपर दुनू मास तेहेन अछि

जे सभ दिन पावनिए-पावनि अछि। अगिला मास धानोक लड़ती-चड़ती शुरू भऽ जाएत आ पानिओ-बुन्नी ठमकि जाएत।''

शंभु पुछलकनि-

''सिनेमा जकाँ एक्के सभ दिन हएत?''

संतोखीदास कहलखिन-

''नइ, जहिना बच्चाक जनम होइ छै, आ लागल-लागल ठेहुनिया दइ छै, खसैत-पड़ैत उठैए। उठि कऽ चलै छै। पढ़ै-लिखै छै बिआह-दुरागमन होइ छै, घर-परिवार होइ छै। ताबे माएओ-बाप बूढ़ भऽ जाइ छै। ओकरो सेवा-बरदासि करैए। तहिना रमलीलोमे होइ छै। सभ दिन सभ रंगक होइ छै। जइसँ बेसी खरचो होइ छै आ समैओ लगै छै। तँए भरि मन देखबो करैए। जइ काजमे जेते समए, मेहनति आ खर्च लगत ओ काज ओते नम्हरो आ नीको होइ छै।''

शंभु पुछलकनि-

''अपना गाममे कहियो भेलो छै?''

संतोखीदास कहलखिन-

''नइ। रमलीला कोनो अद्दी-गुद्दी छी जे सभ गौआँ कऽ लेत। दुर्गापूजा जकाँ छी। जहिना पावनि-तिहार, पूजा-पाठ तँ घरे-घर होइए मुदा दुर्गोपूजा करैमे गौआँकेँ डोराडोरि सक्कत कऽ कऽ बान्हए पड़ै छै।''

छठिक परातेसँ झट्टा-पिट्टा शुरू भेल। बाधक रंग बदलए लगल। एक तँ रंग-रंगक धानक चास, तैपरसँ धानक बदलैत रंग। बेरूपहर जौं किसान भरल चास देखैत ओ भिनसर सेहो देखैक उदेससँ खुशी होइत घरपर अबैत आ जे भिनसरू पहर ओसमे नहाएल देखैत ओ बेरू पहर फेर देखैक आससँ अबैत। जहिना भरल-पूरल परिवारमे देहक सभ अंग भरल-पूरल चलैत तहिना सुभ्यस्त समए भेने शुरूहेसँ धानोक भेल।

जहिना खेतमे काज करैकाल किसान हरा जाइत तहिना अगहनमे बोनिहार। के नै दुइओ-चारि कट्ठा खेती केने रहैए।

कातिकक पूर्णिमाक परातसँ रामलीला शुरू हएत। तँए अबैसँ आठ-नअ दिन पहिने रहुआक कमल नारायण, गरीब झा, जलेसर आ दयाकान्त बेर टगैत -करीब तीन बजे- गाम पहुँचला। ओना गामक लोक पनरह-बीस दिन पहिनेसँ बुझैत जे रामलीला हएत। मुदा बिआह-दुरागमनक लगने जकाँ लोकक मनमे। असल लग्न तँ तखनि ने शुरू होएत जखनि बर-कन्याक देखा-सुनी हुअ लगैत। गाम पहुँचिते जेना हवाक संगे अबैक समाचारो पसरल। सीमाकातक आमक गाछक निच्चाँमे ठाढ़े-ठाढे चारू गोटे विचार करए लगला जे गौआँ सभसँ गप-सप्प केना हएत? बिना गप-सप्प भेने आगू काज नै ससरत। मुदा गौआँसँ मुखातीब केना हएब? ईहो तँ नान्हिटा काज नै अखनो समाजमे ओहन लोकक कमी नै जे बिना आग्रह केने बरो-बिमारी आकि मुरदो डाहए नै जेता। तैठाम अनगौआँक संग की करता ई तँ कठिन प्रश्न अछि। मुदा एकटा तँ अखनो अछि जे नव लोक वा नव चीज गाममे एने लोक बिनु कहनौं देखए जाइत। भलहिं बाधे दिस जाइक बहाना किए ने करैत। कमल नारायण गरीब झाकेँ पुछलखिन-

"गाम तँ आबि गेलौं, आगू की सभ हएत?"

कमल नारायणक बात सुनि गरीब झा गाम दिस आँखि उठौलनि तँ देखलनि जे एक्के-दुइए आगू-पाछू लोक सभ धरियाएल आबि रहल छथि। लोककेँ देखबैत गरीब झा बजला-

> "जहिना अपना सभ गौआँकेँ रामलीला देखबए चाहै छियनि तहिना ने गौआँ सभ देखैक ओरियान करता। एहेन-एहेन काज अगुतेने होइ छै।"

अखनि धरि गाममे रामलीला नै होइक कारण रहल जे गाममे ने एक्कोटा जमीन्दार आ ने जेठ-रैयत। कम आँट-पेटक किसान। जिनका अपने जिनगी पहाड़। बाढ़ि-रौदीक इलाका। एक सालक बाढ़ि वा रौदी किसानकेँ पाँच बर्ख पाछू धकेल दैत अछि। तैठाम दुर्गापूजा आकि

रामलीला लोकक मनमे उठत केना। मुदा गामक एकटा गौरव अछि- दू सए बर्ख पहिने जेते लोक आ परिवार छल ओइमे दस गुणाक वृद्धि भेल अछि। ओना ई बात नै जे ओइ गामक लोक बम्बै, कलकत्ता, दिल्लीक आमदनी नै बुझैत, बुझैत! मुदा गामक सिनेह आ विश्वामित्र सदृश जिबठगर। किए ने जिबठगर रहत? कोनो की आइए रौदी, बाढ़ि आकि अन्हर-बिहाड़ि, भुमकम भेल अछि आकि सभ दिनसँ होइत आएल अछि आ होइत रहत। तरहत्थीक मैल जकाँ दू बेर रगड़ि देबै छूटि जाएत। तेतबे नै, गामक ईहो गौरव अछि जे बरहबरना माने बारहो वरनक गाम रहितो ने कहियो अपनामे लाठी-फराठी निकलल आ ने कोट-कचहरीक दछिना भरए पड़ल अछि।

रामलीलो पार्टी आ गौआँक बीच गप-सप्पक क्रममे तँइ भेल जे बरहम स्थान सार्वजनिक जगह छी, ओ तँ ओत्तै बैस अगिला गप-सप्प हुअए। सएह भेल।

लोकक बीच कमल जीक हृदए उमड़ि गेलनि। कला-सिनेही। विह्वल भऽ बजला-

> "आइ धरि एहेन गाम नै देखने छेलौं जैठाम एहेन हृदैक मिलान भेल। अखनि धरि जेहेन-जेहेन गाम देखलौं तइसँ भिन्न गाम बूझि पड़ैए। ऐ रूपे कहाँ कोनो गाममे रामलीलाक प्रति आकर्षण छै।"

मुदा लगले मन आगू बढ़ि गेलनि। भगवान रामक प्रति लोकक विश्वासक कारण अछि आकि मनोरंजनक? मनोरंजनो तँ जीवनक संगे चलैबला सहचरीए छी आकि जिनगीसँ अलग चलैबला? कर्म-आनन्द मिलि लीला करैए। सभ सबहक मुँह देखैत जे के की बजै छथि। कारणो अछि। सभ अपनकेँ नव बूझि नव फूलक सुगंध लिअए चाहैत। सभकेँ चूप देखि पुन: कमलजी बजला-

> "अही बेरटा नै जहिया कहियो लीला देखबैक अवसर देब तहिया जरूर आगूओ देखबैत रहब।"

बजैले आगू रहबे करनि आकि बिच्चेमे गरीब झा टपकैले उठला। जहिना राज-दरबारमे किछु गोटेकेँ बजैले परमीशन नै लिअए पड़ैत तहिना रामलीला मेड़ियाक बीच गरीब जीकेँ रहनि। जहिना गरीब नाओं तहिना एक चेराक चेहरा। भीतर-बाहर एक्के रंग। ने गमहारिक चेरा जकाँ अमेरिकन आ ने कटहरक चेरा जकाँ यूरोपीयन। बस-बस सोलहो आना आमक चेरा जकाँ इन्डियन। चौबीसो घंटा शरीरसँ कला छिटकैत रहनि। मुस्की दैत बजला-

> "भाय, सर-समाज जहिना कमल भाइक संग पाबि गरीबो झा जलेसरो आ दयाकान्तो कलाकारक पात्र बनि सेवा लेल एलौं तहिना अहूँ सभ गारा-जोड़ी कए संगी बनब। -हँसैत- जेना हिजरा-हिजरनियाँ सभकेँ देखै छिऐ जे कोनो-गाम कोनो समाज ओकरा बान्हि कऽ नै रखैत तहिना हमरो-सभसँ छिपाएब नै।"

कहि पुन: बजला-

"होउ भाय, आब अपन अगिला विचार कहियनु।"

गरीब झाक विचारकेँ कमलजी मनमे औंटैत-पौड़ैत रहथि। मनमे हौंड़ैत रहनि जे भरिसक अपना इलाकामे जेते रामलीला पार्टी छथि ओ सभ भरिसक एक सीमाक भीतरे चक्कर कटैत रहला। जइसँ सभकेँ उठैक समान वातावरण नै भेट सकल। भरिसक गनल-गूथल गाम आ गनल-गूथल समाजक भीतरे रहि गेला। मुदा ईहो तँ झूठ नहियेँ जे जेते रामलीला देखै-देखबैक जरूरति अछि ओते मेड़िया अछिओ नै। तँए कि लोक नै देखैए सेहो बात नै। जहिना पचमहलो कोठामे मनुखे रहैए आ बाधमे बनल रखबारक खोपड़ीमे सेहो मनुखे रहैए। रामलीलाक अतिरिक्तो नाटक, नौटंकी, थिएटर, रास, ऑरकेस्ट्रा, लोक नाच, विषय-कीर्तन, कौव्वाली, इत्यादि तँ चलिते अछि। रामलीलामे जहिना रामकथा चलैए तहिना लोको नाचमे तँ चलिते अछि। मुस्कीआइत कमल बजला-

"आइ अहाँ सबहक अतिथि-अभ्यागती भेल। हम सभ गाछी-बिरछीमे रहैबला छी तँए भारो कम्मे देब। रातिमे निचेनसँ सभ एकठाम बैस हबगब करब। अखनि एतबे कहू जे हृदैसँ चाहै छी आकि नै।"

एक तँ गामक पहिले-पहिल रामलीला हएत तेकर खुशी तैपर उपजल गामक गदगदी। एक स्वरे सभ हूँहकारी भरि देलकनि।

दिसा-मैदान दिस टहलि दोसरि साँझमे सभ कियो एकठाम बैसला। लोकक खुशीकेँ अपना दिस खींचैत गरीब झा ठाढ़ भऽ बाजए लगला-

> ''अहाँ सभकेँ बुझले हएत जे रामलीलाक स्टेज बनत। स्टेजक पाछू कलाकारक बेवस्था रहत आ आगूमे देखनिहारक। स्टेज आ स्टेजक पाछूक बेवस्था लेल तँ बासो-बेलन आ परदो अछिए। रहल स्टेजक आगूक बेवस्थाक। से तँ समाजे करब।''

गरीब झाक बात सुनि संतोखीदास दोहरबैत कहलखिन-

> ''कनी फड़िछा कऽ कहियौ गरीबबाबू। नीक-नहाँति नै बूझि सकलौं?''

गरीब झा कहलखिन-

> ''केते गाममे रामलीला खेलेलौं हेन। सभ गाममे किछु-ने-किछु तफरका रहिते अछि। जेना केते गाममे पुरुख दर्शक लेल अलग आ महिला लेल अलग ढाठ गाड़ि बेवस्था कएल जाइत अछि। तँ कोनो-कोनो गाममे से नै होइए।''

संतोखीदास मुस्कीआइत कहलखिन-

> ''गरीब भाय, देखनिहारसँ पहिने खेलेनिहारक चर्च करू जे खेलेनिहारक बीच ने तँ...?''

संतोखीदासक प्रश्न सुनि गरीब झा सकपकेला। ओना पेटक बात ओँढ़ मारि गोंगिया-गोंगिया निकलए चाहनि। मुदा अपनाकेँ एक कलाकार मानि सहमि जाथि। दुनू गोटेक बीचक सबाल-जवाब सुनि कमल जीकेँ नै रहल गेलनि। मुदा नजरि गाम -समाज- दिस नै अपन मेड़ियापर पड़लनि। सभ एकठाम बैस खाइ-पीबै आ सुतै-बैसै छी। घर-गिरहस्तीक संग घरवाली बाल-बच्चाक संग कला-साहित्यपर विचार करैत गति-मुक्तीक विचार-विमर्श करै छी, तखनि एहेन प्रश्न किए उठल। पचपन-साठि बर्खक,

अगिला दाँत टुटल, केश पाकल, छड़गड़ देह, कमलबाबूक मनमे झटका लगलनि। मनमे उठलनि जहिना गाए लेल गोशाला तीर्थस्थान होइत, विद्यार्थी लेल विद्यालय, रोगी लेल अस्पताल तहिना ने कला प्रेमी लेल रंगमंच। यएह गरीब झा छथि जे प्राथमिक विद्यालयमे शिक्षक छला। दरमाहाक पाइ कहियो परिवारमे नै दइ छेलखिन। सभ दिन सिनेमे, नाटकक चक्करमे घुमैत रहला। जखनि अपन पार्टी ठाढ़ भेल तखनि विद्यालय छोड़ि एला। तहिना दयाकान्तो छथि। बनारसमे रहि शास्त्रीय, उपशास्त्रीय संगीत सिखने छथि। तहिना जलेसर सेहो मनचोभिया नाचसँ आएल छथि। अपनो पचगछिया कुटुमक संसर्गमे रहल छी। अर्जुनो छकड़बाजीसँ आएल अछि। पुन: मनमे उठलनि

सच्चामे कच्चा की। उफनि बजला-

"सभ काजक सीमा होइ छै। अहाँ सबहक जे सीमा अछि तेकर भार अहाँ सभपर आ हमर सबहक जे सीमा अछि तेकर भार हमरा सभपर। द्वारपाल बनि अपन-अपन सेवा जौं इमानदारीसँ देब तँ कोनो तरहक गंदगी नै औत।"

कमल नारायण जीक विचार सुनि संतोखीदास बाजल-

"आइ धरि ऐ गाममे रामलीला भेबे नै कएल अछि तखनि अनुमानसँ किछु सोचब आ बूझबमे केतौ-ने-केतौ कमी रहिए जाएत। मुदा ईहो नै कहब जे ओ अनिवार्ये अछि नहियोँ भऽ सकैए। ई निर्भर करैए गामक बेवस्थापर। जइ गामक जेहेन बेवस्था रहत तइ गाममे तेहेन काज हएत। ओना गामक भीतर काँकोड़ वा मकड़ा जकाँ गामक जाल पसरल अछि। एहनो नाच वा पूजा अछि जे खास जातिक प्रवेश आ खास जातिक निषेध अछि। जखनि कि मूल प्रश्न अछि कला आ धर्मक। तहिना मनुखक संग देवतो आ कलो बँटाएल अछि। जइसँ जबरदस टाट लगि गेल अछि।"

संतोखीदासक बात सुनि गरीब झा ठहाका मारि पुछलखिन-

"तखनि?"

गरीब झाक जिज्ञासा देखि संतोखीदास मुस्की दैत कहलखिन-

“जेकरा कोनो गाछक जड़िक बोध हएत वएह ओइ गाछक गुण बूझि सकैए। मुदा ऐठाम तँ अखनि गाछ जनमैक सुरे-सार भऽ रहल अछि तखनि तँ प्रश्न उठैक समैओ नै बनल अछि।”

गरीब झा पुछलखिन-

“तखनि?”

संतोखीदास कहलखिन-

“हँ, अखनि घरसँ बाहर धरिक छी तँए अखने आगू लेल रस्ताक निर्माण कऽ लेब, नीक हएत। ओना कोनो निअम अस्थाइ नै भऽ सकैए। कारण जे, समैक संग समाज चलैए तँ निअमोक संग चलए पड़त। जइसँ किछु नै किछु सुधार होइते चलत। जे समैक अनुकूल हेतै। हमर समाज ओहन अछि जइमे टोल-टोलक आठ-नअ बर्खक बच्चासँ लऽ कऽ चेतन, बूढ़-पुरान धरि संगे बाध-वोनमे एकठाम भऽ घास छिलैत तीन-तीन चारि-चारि घंटा संगे बितबैए। खेतमे संगे रोपैन-कमठौन करैए। ढेरबासँ जुआन धरि संगे साइकिलसँ दस-दस किलोमीटर स्कूल-कौलेज जाइत अछि। तैठाम रामलीला सन जगहमे खाढ़ी बनए! ई केहेन...?”

संतोखीदासक प्रश्न सुनि कमल गरीब दिस कनडेरिए आँखिए झँकलनि आ गरीब जलेसर दिस तहिना जलेसर कमल दिस। तीनूक-तीनू विपरीत दिसामे बौआए लगला। एक-दोसराक बीच नजरिक मिलान हेबे ने करैत। जहिना छोट बच्चा केशौरक ऊपरका भाग देखि हाथेसँ खोधिया उखाड़ए चाहैत तहिना तीनूक बीच मनमे हुअ लगलनि। मुदा से गरे ने लगनि। दयाकान्त लेल धैनसन। मोने-मन पावसक विसर्जन करैत समदौन ताल-मात्रा मिलबैत। तखने कमल नारायण पूछि देलखिन-

“की दया?”

जहिना कियो अनचोकमे कोनो प्रश्नक उत्तर किछु दऽ दैत तहिना दयाकान्त मुड़ीक ताल मिलबैत धाँइ दऽ बाजि उठला-

"हँ, हँ, सभ नीके।"

मुदा लगले जखनि भक्क टुटलनि तँ मनमे उठए लगलनि जे भायकेँ की उत्तर दऽ देलियनि। ओ राय पुछलनि आ हम ओइ बच्चा जकाँ कहि देलियनि जे कोनो भौंतियाइत यात्रीकेँ बिसवासक संग बिनु देखल रस्ता बता दैत। तहिना भेल। अखनि समदौनक मात्रा मिलबैक समए नै छल जे मृत्यु पछातिक वएह मात्रा जनमकालक केना हएत। किए ने हएत। जनम-मृत्युमे अन्तरे की छै। खेतक आड़ि जकाँ थोड़े अछि जे खेतसँ ऊपर होइमे वा आड़िपर चढ़ैमे डाँड़पर हाथ लिअ पड़त। ई तँ ईंटाक खरन्जाक बाट छी जे फूटलाहा छोड़ि-छोड़ि सौंसकापर पएर दैत चली।

दयाकान्तक उत्तर सुनि कमल आरो भौंतियाए लगला। जे, सभ नीक तँ अधला की? जौं अधला नै तँ राक्षसक जनम किए। जौं राक्षस नै तँ मनुखक देहमे मासु-खुन किए नै? मुदा तैकाल गरीबो झा आ जलेसरो अपन भाँज पुरबैले कमल दिस तकलनि। बजैले दुनूक मुँह लुसफुसाइत। मुदा पहिने केना बाजब। जलेसरक मनमे गरीब भायकेँ गुरु बुझै छियनि। अखनो बहुत सिखबै छथि। जखनि कि गरीब झाक मनमे उठैत जे कलाकारक रूपमे भलहिं दुनू गोटेक एक जिनगी अछि मुदा गाम-समाजक बंधनमे तँ दू छी। तँए पहिने जलेसरक विचार जरूरी। जौं से नै, अगर पच्चीस तरहक रोगसँ ग्रस्त रोगीक इलाज पहिने नै भऽ एक बिमारीबलाक इलाज हएत तँ निश्चित रूपेँ अधिक बिमारीबला रोगी मरबे करत। मुदा से नै, जौं पच्चीस बिमारीक इलाज उपलब्ध हएत तँ एक बिमारीक इलाज एकटा कोरामिनोसँ भऽ जाएत। आँखिक इशारासँ जलेसर गरीबकेँ आग्रह केलखिन। शिक्षक गरीब झा, जे रामलीलाक विदूषककेँ मनमे बिजलोका जकाँ तड़कलनि जे रोगीक रोगक इलाज केम्हरसँ कएल जाए? जालेसर आ गरीब झा दुनूक तत्-मती देखि कमल नारायण जीक मनमे उठलनि जे केतौ जरूर नम्हर खाधि अछि। विचार बदलैत हँसैत बजला-

''जिनगीक पहिल दिन एहेन आनन्दक अवसर भेटल।'' कहि चुप भऽ गेला। मनमे उठलनि जहिना घरमे आगि लगलापर आन्हरो भागए चाहैत मुदा आँखि नै रहने ढिमका-ढिमकीमे ठेंसिया-ठेंसिया खसैत, कोनो टंगटुट्टाकेँ कियो आभास पाबि जान बँचबए कहतै तँ ओ टंगटुट्टा यएह ने कहत जे भाय केकरा के देखै छै जे तोरा हम देखबह आकि तूँ हमरा। तोरा आँखि नै छह जे देखि कऽ चलबह आ हमरा टाँग नै अछि जे देखतो एको डेग चलब।

कमल सदृश खिलैत कमल जीकेँ संतोखीदास कहलकनि-

''भाय, जेतेकाल अहाँ स्टेजपर रहब ओतेकाल अहाँ राम, हनुमान आकि रावणक रूप बना रहब मुदा तेकर पछाति जेते समए बँचत ओ तँ समाजेक भाय-भैयारीमे बनि रहब किने? बारह-तेरह बर्खक एकटा बेटा हमरो अछि। ऐठाम अछिओ। जाबे धरि ऐठाम रहब ताबे धरि ओ सेवामे लगल रहत।''

हँसैत कमल बजला-

''सेवाक फल मेवा होइ छै।''

जे रोगीकेँ मन भाबए से वैदा फरमाबए। अपन नाओं सुनिते शंभु फुड़फुड़ा कऽ उठि कमल जीकेँ गोड़ लगलकनि। मुदा जाबे कमलजी असिरवाद दितएथिन तइसँ पहिने गरीबो, जलेसरो आ दयाकान्तोकेँ गोड़ लागि समाज दिस घूमि पहिने पिता संतोखीदासकेँ गोड़ लागि पाहि लगा सभकेँ गोड़ लागए लगल। मनमे बेहद खुशी! ओहन खुशी जेहेन दुरगमनियाँ बहिन, पहुलका समाजसँ आगू बढ़ैत नव समाज दिस डेग उठबैत। अखनि धरि शंभुकेँ असिरवाद दइक विचार कमलजी करिते रहथि। कारणो भेल, जखनि शंभु गोड़ लगलकनि तखनि कमल योगासनमे बैसले रहथि। जइसँ दहिना पएर पोन तर दबल आ बामा बाहर रहनि। तँए असीरवाद दइमे पहिल देरी भेलनि, दोसर देरी भेलनि जाबे असीरवाद देथिन ताबे शंभु तीनू गोटेकेँ गोड़ि लागि लेलकनि। जइसँ कमल असमंजसमे पड़ि गेला। स्कूल-कौजेजमे विद्यार्थीक प्रवेश दिन जौं

शिक्षकक बीच हुअए आ ओही दिन शिक्षक विद्यार्थीक बीच प्रवेश पर्व होइ जइ दिन सभ विद्यार्थी-शिक्षक रंगमंचक कलाकार जकाँ नव-नव चेहरा सजा, नव-नव कला देखबैत। जइसँ एक-कलाकारकेँ जहिना एक संगी भेटलापर नन्द रूप आनन्दक रूपमे बढ़ैत, तहिना ने ओहू पर्वमे हएत। सभकेँ तत्-मत् करैत देखि गरीब टपकि उठला-

''आइ शंभु ओइ सीमापर आबि अँटकि गेल जैठामसँ दिसा बदलैत। बहुत पैघ आश समाजमे भेटल। मुदा सबुर कहाँ भेल। सबुर हएत तखनि जखनि भरि पोख काज अहाँ सभ लेब। शंभुए किए, एहेन-एहेन शंभु समाजक फुलवाड़ीमे छिड़ियाएल अछि।''

गरीब झाक विचार सुनि संतोखीदास बजला-

''गरीब भाय, आन जे होथि, नै बूझल अछि मुदा अहाँ प्राइमरी शिक्षकसँ कलाकार भेल छी। तँए जहिना देवपूजन लेल फुलवाड़ीक फूल बर्जित नै अछि, पुस्तकालयक पुस्तक बर्जित नै अछि तहिना, निरविकार भऽ अहूँ समाजक फुलवाड़ीमे घूमि-फिरि अपन पूजाक फूल चुनि पूजा-पाठ -तामि-कोड़ि- सेवामे लगा सकै छी।''

छठिक तेसरा दिन, अकासक चान अपन प्रवेश देखि मधुरिया मुस्की दैत। ठंढ़-गर्मक सीमान जेहने मोहक होइत तेहने मोहक दुनू समाजक मनमे। एकक मनमे जे दस गोटे एकठाम बैस रामलीलाक आनन्द लेब तँ दोसराक मनमे नव समाजक बीच जौं नव-कलाक प्रदर्शन नै हएत तँ समाजकेँ जे भेटौन मुदा कलाकार तँ शंखे डोलबैत रहि जेता। अपन सताइसो मेड़ियाक संग दू बजे, बेरू पहर टाएरगाड़ीपर साज-बाज, पर्दा-पोस, बाँस-बेलन नेने पहुँचला। स्कूलक बगलक गाछीक जगह बूझले रहनि। एक्के-दुइए गौआँ सेहो पहुँचए लगला। जाबे टाएरक सामान उतारि परतीपर रखैत ताबे लोको गोलिया गेल। देखले गरीब झा आ देखले संतोखीदास। नजरि पड़िते संतोखीदास पुछलकनि-

''भाय, शंभुकेँ डटि कऽ पहुँनाइ करौलिऐ?''

संतोखीदासक बात सुनि गरीब झा कहलखिन-

“एते दिन शंभुक संग रहितो नै परखि सकलौं जे शंभु की चाहैए।”

संतोखीदास पुछलकनि-

“मतलब?”

गरीब कहलखिन-

“यएह जे केकरो शुरूहेसँ बाजा दिस नजरि रहल तँ केकरो नाच दिस तँ केकरो गान दिस। ई शंभु तँ अद्भुत अछि जे बजो दिस ओहने झुकाउ देखै छिऐ आ अवाजक चर्चे की?”

संतोखी पुछलखिन-

“आब तँ गप-सप्प होइते रहत। जखनि आबि गेलौं तखनि-अङस-मङस नहियेँ हएब नीक। की विचार अछि?”

गरीब झा कहलकनि-

“अखनि धरिक यएह रहल जे आइ खुट्टा-खुट्टी गाड़ि लेब। काल्हि परदा-पोस लगा लीला शुरू कऽ देब।”

“हद करै छी गरीब भाय। अहाँ सभ खाली देखबैत रहियौ गौआँ सभ एक्के घंटामे सभटा तैयार कऽ देत। मुदा जखनि गाम आबि गेलौं तखनि एको दिन नागा करब समैक संग धूर्ते हएत?”

तैबीच समाजमे एकटा हवा उठि गेल। हवा ई जे कियो बाजि देलकै जे जइ गौआँकेँ पच्चीस-पच्चीस अनगौआँक भोज करबैक इज्जत छै ओ दसटा ब्राह्मणकेँ भोजन नै करा सकैए। मुदा गामे छी। खड़ौआ जौरक बान्हसँ बनल घर-सभ। एहेन खुऔनिहार चारि गोटे। चारू तैयार जे असगरे देब। नवका विवाद चारू गोटेक बीच। गरमा-गरमीक हवा वहए लगल। कियो भोजक संग बुधियारी जोड़ि बजैत तँ कियो बाप-दादाक खुनेलहा पोखरि जोड़ि बजैत। कियो जातिक भगैत गबैत तँ कियो हाकिम बेटाक। चारू बात सुनि-सुनि गौआँक मन घोर-मट्ठा। जे ई चारू

केहेन बेर परहक भदबा बनि गेल। केहेन सुन्नर सभ कियो एकठाम बैस रामलीला देखतौं तँ चारू कोट-कचहरीक बाट पकड़ैपर उताहुल। जे गाम कहियो ने देखने छल से देखैले तनफन करैत।

मुदा चारू, गौआँ-अनगौआँ मिलि पनचैती मानि लेलक। सबहक बीचमे चारू गोटे पहुँचला। गौआँ सभ दोहरी लाभ देखि अनगौआँक आदर आ गौआँमे देखारसँ बाँचब! गरीब झाकेँ मानि लेलनि। मोने-मन गरीब झा सोचलनि जे कोन बड़का पहाड़ अछि जे सभ पाछू ससरि रहल छथि। कियो पहाड़ देखि डरैत तँ कियो बच्चा माए-बापक संग खुरपीसँ खाधि खुनि खेलाइत। मुदा लगले मन घुमलनि जे जौं चारू गोटेकेँ कहि दियनि एक-रंग कऽ सभ चीज दऽ दियौ तखनि तँ खीड़ाक फाँक बनि जाएत। ऊपरसँ चिक्कन आ भीतर फाँक। नीक हएत जे हुनके सभकेँ पूछि-पूछि बाँटि दियनि। मुस्की दैत बजला-

> "भाय, अनगौआँ छी तँए ई नै कहब जे छठूसँ छठुपाना केलक। जिनका जे चीज छन्हि ओ ओ चीज देथुन। अपना खेतमे जिनका सतरिया-बासमती धान भेल होन्हि ओ चाउर देथुन। जिनका बाड़ीमे तरकारी उपजैत होन्हि ओ तरकारी देथुन। जनका खुट्टापर गाए-महिंस होन्हि ओ दूध-दही देथुन।"

सभ किछुक जोगार घंटे भरिमे भऽ गेल। आइसँ रामलीला हएत ई समाचार जेना सबहक छाती धड़कबए लगल। जिनगी विषयक कथाक रंगमंच मास दिन धरि गौआँ देखता। किएक ने खुशीक हिलकोर उठतनि। आरती चढ़ौआक बर्खा सोहे बरिसबे करत।

मास दिन शंभु संगे-संग खटल। आइ समाप्त भऽ रहल अछि। काल्हि सभ कियो दोसर गाम चलि जेता। आड़िपर शंभु ठाढ़ भेल सोचि रहल अछि। समाज बदलि कहाँ रहल अछि, बढ़ि कहाँ रहल अछि संतोखीदासक मनमे उठैत जे छोटसँ पैघ दुनियोमे प्रवेश केनिहार -जाइबला- केँ किछु कहब कठिन अछि। तहूमे आब तँ सहजे नेनासँ चफलगर भेल।

जाइकाल कमल जीक नोर टघरि रहल छन्हि। वएह नोर जे सासुर जाइवालीक रहै छै।

साल भरि बितैत-बितैत शंभु रामलीलाक प्रमुख कलाकारक श्रेणीमे आबि गेल। ओना प्रमुखताक कारण उत्कृष्टता होइत मुदा शंभुक प्रमुखताक कारण भेल बहुआयामी। जहिना अदराक पहिल बर्खामे ओहन किसानक मन अधिक छटपटाइत जेकरा एक संग अनेको खेती करैक रहै छै। फसल लगबैले मन छटपटाए लगै छै जे अगहनी धानोक बीआ आ चौरीओ खेत अछि, गरमा धानक सहो रंग-रंगक बीआ अछि, जे मौसमक हिसावसँ नै समैक हिसाबसँ होइत अछि। जौं ओ बिआ समैपर नै उखारि लगौल जाएत तँ उपजा प्रभावित हएत। मुदा बर्खा चटकने तँ चौड़ीक खेतीए बूड़ि जाएत। मुदा शंभुकेँ से नै भेल। ढोलक, हरिमुनियाँ बजबैसँ लऽ कऽ नचनाइ पार्ट खेलनाइ तकमे शामील भेल। जइसँ पार्टीक भीतर शंभुक महत बढ़ि गेल। कोनो आदमीक-अभिनयकलासँ लऽ कऽ वाद्यकला धरिक- अनुपस्थितिक पूर्ति शंभु करए लगल।

कमलजीक रामलीला पाटीमे शंभु सात बर्ख रहल। ओना अधिक उमेर भेने कमल नरायण पार्टी खसा लेलनि। गामोक स्थितिमे ठनका खसलनि। सन्मुख कोसीक मुँह पछिम मुहेँ जोर केलक। जइसँ गामक छिड़ियाएल बास समटा कऽ घोदिया गेल। खेतबलाक स्थिति बिगड़ि गेलनि। केतेको परिवार गाम छोड़ि परदेश रहए लगला।

बीस बर्खक शंभु अपन ओकाइत -लम्बाई-चौड़ाइ- बुझए लगल। मनमे रंग-रंगक विचार उठए लगलै। मुदा सभ गुण होइतो शंभुक मन उपशास्त्रीय संगीत दिस अधिक झूकल। जेहने स्वर तेहने कला। सामंत सबहक टुटैत स्थिति शास्त्रीय संगीतकेँ प्रभावित केलक। ओना प्रभावित उपशास्त्रीय सेहो भेल मुदा कम। दरवारी दासक लाट पकड़ि शंभु राजक गबैया बनि विभूषित भऽ गेला।

हजारो लोकक भीड़मे जहिना कियो अपन प्रेमी देखि सभ किछु बिसरि जाइत तहिना संगीत प्रेमी शंभुदास घर-परिवार बिसरि बिआह नै केला। ढहैत बेवस्थाक तरमे शंभुओदास पड़ि गेला।

बेवस्थाक बेवस्था चलैत मिथिलाक धरतीए जकाँ मिथिलाक कला सेहो राँइ-बाँइ भऽ छिड़िया-बितिआ टूटि-फाटि गेल।



फाँसी

काल्हि बारह बजे बलदेवकेँ फाँसी हएत, रेडियो-अखबार कान-कान जना देलक अछि। जहिना बलदेव बुझैत तहिना जहलक उत्तराधिकारीओ बुझैए। जहिना बलदेवक परिवार बुझैत तहिना सर-समाज, दोस-महिम सेहो। सबहक मन बारह बजेपर अँटकल। वएह बारह बजे दिन वा राति अपन प्रखर रूपमे दिसा दिस मैदानक रस्ता धड़ैए।

जहलक एक नम्बर सेल घर। जे घर ओइ अपराधीकेँ ओइ बीच भेटैए जखनि न्यायालयसँ फाँसीक तिथि निर्धारित होइत अछि। सेलक बुनाबटिओ आन सेलो आ वार्डोसँ भिन्न अछि। ओना सेलक बुनाबटि विचित्र अछि मुदा आनसँ अलग तँ अछिए। कोठरीनुमा घर कोठरीएक आँट-पेट सेहो अछि। एक कोठरी ओहन होइत जे नम्हर घरमे बनैत आ एक कोठरी ओहन होइत जे घरे कहबैत। एक नम्बर सेलो तहिना बनल अछि। चिमनीक एक नम्बर ईंटा, क्यूल-लक्खीसरायक बीचक पथराएल बालु, दू-एक सिमटीक जोगसँ देबाल बनल अछि। सात एस्क्वाइर फुटक घर जे घरक कोठरीओसँ हीने अछि। पौने दू फुट आगूक दरबज्जा, खिड़की दरबज्जा नै जे भीतर-बाहर अबैत-जाइत अछि। लोहाक बनल केबाड़ लगल अछि। शेष कोनो देबालमे ने खिड़की-खोलिया अछि आ ने पूब-पछिम दिसा देखबैक कोनो दोसर साधन अछि। एक तँ ओहुना जैठाम सभ किछु -दिसा-वोधक- रहैए तहूठाम दिसांश लगि जाइ छै जेइसँ पूबकेँ पछिम पछिमकेँ पूब कहए लगै छै। जिनगीक पूर्ण लीला बलदेवकेँ ओइ कोठरीनुमा घरमे पनरह दिनसँ होइत अछि। ओना तइसँ पहिनौं -१५ दिनसँ पहिने- सेहो सात नम्बर सेलमे तीन सालसँ रहैत आबि रहल अछि।

ओना एक नम्बर सेलमे एलापर एतेक सुविधा जरूर भेट गेल छेलै जे पहिनेसँ नीक भोजन नीक, ओढ़ना-बिछौना छेलै। भलहिं घरमे नहियेँ बिजलीक तार आ ने बौल लागल मुदा दरबज्जा सोझहे एहेन बौल लागल छेलै जइसँ कोठरीओक भीतर इजोत पहुँचै छल। मुदा कोठरीक बाहर स्पेशल सिपाहीक बेवस्था सेहो भऽ गेलै।

बारह बजे रातिक घंटी टावरक मुरेड़ापर बजल। राति-दिनक पाशा बदलैक समए भऽ गेल। जहिना भूत-वर्तमान आ वर्तमान भविसमे बदलैए सएह मुहूर्त अछि। राति-दिनक बाट पकड़त मुदा दूत-भूत एतेक प्रबल जे आरो बेसी उग्र बनैए। जहिना रातिक जनमल बच्चा दिनेक होइत तहिना बलदेवक राति सेहो दिने भऽ गेलै। राति-दिन भऽ गेलै आकि निनियेँ देवी विध्नवादिनीक संग डरे पड़ा गेलखिन से नै कहि। ओछाइनपर पड़ल बलदेव उठि कऽ बैस कोठरीक चारू देबाल दिस तकलक। अन्हारमे सभ हराएल बूझि पड़ल किएक तँ बाहरक बिजलीक इजोत सेहो अन्हारक चद्दरि ओढ़ि ओहन भऽ गेल जे अपनो भरि नै देखि पड़ैत। देह दिस तकलक। हाथ-हाथ नै सुझैत बलदेव अजमा कऽ घरक मुँह लग ससरि कऽ पहुँचल। हाथ बढ़ा देखलक तँ बूझि पड़लै जे यएह घरक मुँह छी। घरक मुँह देखि मनमे बिसवास जगलै जे ऐठामसँ अन्हार-इजोतक सभ किछु देखब। हिया कऽ बिजली खुट्टामे लटकल बौलपर नजरि देलक। मरियाएल इजोत तैपर असंख्य मच्छर-माछी जान गमबैले तैयार नाचि रहल अछि। खुट्टापर गिरगीटक झूण्ड। मुँह बाबि खाइले तैयार भऽ आसन लगौने अछि। निच्चाँमे बेंगक जेर कुदैत। तैबीच मच्छरक जेर गीत गबैत फाटक टपि भीतर पहुँचल। मुदा बलदेवक धियान मच्छरपर नै गेल। जहिना शरीरमे अनेको रोग रहलापर बड़का रोग छोटकाकेँ चापि रखैत तहिना बलदेव बाहरक मच्छरक भोगकेँ दाबि देलक। केना नै दाबैत, जैठाम जिनगीक खूनक कोनो महत नै तैठाम मच्छर केते पीबे करत। मुदा तहूसँ बेसी बलदेवक मनमे जागि गेल जे जखनि बारह बजे अन्ते भऽ रहल छी तैबीच जौं कनीओं उपकार दोसरक भऽ जाइ छै तँ ओहो धर्मे छी किने? बलदेवक मनमे पनपए लगलै।

तखने पएर दाबि सिपाहीक झूण्ड सेलक चारूकात चक्कर काटए लगल। अन्हारमे सभ हराएल। पएरक धमकसँ बलदेव बूझि गेल। जहिना गाए-महिंस मनुखक संग कुत्तो-बिलाइक चालि अन्हारोमे परखि लैत तहिना बलदेवो परेखलक। मुदा सभ चुप्प। बलदेवक मनमे उठलै- जखनि कि बारह बजेमे फाँसीएपर चढ़ब तखनि किए एते ओगरबाहिक जरूरति छै। एक तँ ओहिना बड़का छहर-देबालीक बीच जेल बनल अछि, तैबीच वार्ड-सेल बनल छै, तैबीच एते ओगरबाहिक कोन खगता? मुदा लगले

विचार बदलि गेलै। वार्ड सबहक कैदी तँ अबैत-जाइत रहैए। सभ दिन दू-चारि एबो करैए आ निकलबो करैए। मुदा हम तँ आब निकलि नै पएब। निकलबे नै करब आकि जिनगीए अंत भऽ रहल अछि। आँखि उठा आगू तकलक तँ बूझि पड़लै जे साल-महिनाक कोन गप जे मात्र किछु घंटा लेल छी। जइ दिन फाँसीक आदेश न्यायालयसँ भेल ओही दिन किए ने फाँसीओ भऽ गेल। अनेरे कोन सोग-सन्ताप देखै-भोगैले पनरह दिन जीआ कऽ राखल गेल अछि। मन शान्त केलक। शान्त होइते, जहिना पोखरिक अगम पानिकेँ पूर्बा-पछबा हवा डोलबैत रहैए तहिना मन डोललै। डोलिते उठलै, फाँसी किए हएत? प्रश्नपर नजरि अँटकिते उठलै जे फाँसीपर सपूत-कपूत दुनू चढ़ैए। फेर उठलै जे तइ सपूत-कपूतमे हम की छी?

अन्हर उठैसँ पहिने जहिना हवा खसि पड़ैए, वायुमंडल शान्त भऽ जाइत अछि तहिना बलदेवक मन सेहो शान्त भऽ गेलै। कोनो तरहक तरंग नै। मुदा लगले मनमे उठलै जे जिनगीक अंतिम सीमापर पहुँच गेल छी। जहिना गामक सीमा टपिते दोसर गाम आबि जाइत अछि तहिना जीवनलोकसँ मृत्युलोक चलि जाएब। मुदा एते तँ हेबे करत जे अखनि ठेकानल जिनगी अछि पछाति बेठेकानलमे पहुँच जाएब। फेर उठलै, जीवनलोक तँ खाली मृत्युक लोक नै छी। जीवनो तँ लोक छी। जहिना कोनो जंगलसँ पड़ाएल जानवर दोसर जंगलक सीमापर पहुँचिते चारूकात नजरि उठा कऽ देखैत जे रहै जोकर अछि वा नै, तहिना जीवन-मृत्युक सीमापर बलदेवक मन अँटकि गेलै। धरतीपर जहिना एक-दिसासँ दोसर दिस बोहैत धार रस्ताकेँ बाधित कऽ दैत तहिना बलदेवकेँ जीवन धार बाधित कऽ देलक। आगू टपैक आशा नै देखि बलदेव बामा-दहिना दिसा पकड़ैक विचार केलक। एक दिस पहाड़सँ निकलैत धार धरती टपैत समुद्रमे मिलैत तँ दोसर धरती टपि समुद्रमे मिलैत। आगू तँ किछु घंटा शेष अछि मुदा पाछू तँ सौंसे जिनगी पड़ल अछि। की एक बेरक फाँसी फाँसी छी आकि फाँस चढ़ल जिनगीक फँसरी फाँसी छी? मन ठमकि गेलै। मुदा लगले मनमे उठलै जे गुमसुम भऽ समए काटब नीक नै। केतेकाल पहिने बारह बजेक घंटी बजल। जहिना धरतीपर आएल बच्चा आस्ते-आस्ते सकताए लगैत तहिना बलदेवक मन सेहो सकताए लगलै।

मन पड़लै पनरह दिन पहुलका फाँसीक सजए। मनमे खौंझ उठलै जखनि फाँसीक आदेश भेल तखनि फेर पनरह दिन जहल किए भेल? कोन अपराधक फल भेटल। जौं ओही दिन फाँसी भऽ जाइत तँ पनरह दिन जे सोग-सन्ताप भेल से तँ नै होइताए। तेतबे नै, अपनो ऊपर अनेरे भार किए बढ़ौलक? फेर मनमे उठलै जे अनेरे ओझराइ छी। मन शान्त केलक। शान्त होइते मनमे उपकलै, सपूत बनि दुनियाँ छोड़ब आकि कपूत बनि। कियो हिलसैत, पुलसैत दुनियाँ छोड़ैए आ कियो विलखैत, डुमैत दुनियाँ छोड़ैए। मुदा जे हिलसैत-फुलसैत छोड़ैए ओ छोड़ैत कहाँ अछि? ओ तँ जीवात्माकेँ एहेन चुहुटि कऽ पकड़ैए जे छोड़ौनौं नै छुटैए। मुदा हम तँ से नै छी। फेर मन घुमलै। दुनियाँ बड़ीटा अछि.., बड़ छोट अछि...।

बड़कीटा ओकरा लेल छै जे बड़ी पाबए चाहैए। मुदा बड़ी तँ भोजोक अंतिम पराव नै घरक मध्य सेहो छी। तखनि किए ओकरा लिअ चाहैए। फेर मन ठमकि गेलै। अनेरे अछाहे कुकुर भूकब नीक नै। अपनो तँ संसार अछि। जइमे अकास-पताल, चान-सुरूज, नदी-सरोवर सभ किछु अछि। तखनि अपन छोड़ि दोसराक देखब अपनासँ दूर हएब हएत। अपन कर्म, अपन धर्मक मर्म बूझब उचित हएत। जाबे से बूझि दुनियाँक रंगमंचमे नै उतरब ताबे कौआ कान नेने जाइत अछि, तइ पाछू दौगब हएत। अपन रंगमंच आ अपन अभिनय लग अबिते मन ठमकि कऽ ठाढ़ भऽ गेलै। ठाढ़ होइते अनासुरती मनमे उठलै। अभिनाइओ तँ देखिनिहारो लेल आ संसारो लेल रंग-बिरंगक, केतेक स्तरक होइत अछि। मुदा कहल तँ अभिनाइए जाइ छै। कियो लीला रचि अभिनय करैत तँ कियो गुण-गुणाइत अभिनय करैए। कियो मूक भऽ करैए तँ कियो प्रेमावेशमे करैए। केना एकरा बिलगाएब? एक दिस चित्र-विचित्र बनल अछि तँ दोसर दिस कुचित्र सेहो बनल अछि। ओझराइत मन झमान भऽ झमा उठलै। अनेरे ओझरेने समए ससरि जाएत। गनल कुटिया नापल झोर जकाँ समए बँचल अछि, तेकरा जौं ओझरौठेमे रखब सेहो नीक नै। बारह बजेक घंटी केतेखान पहिने बाजि चुकल अछि। हाथमे जौं घड़ी रहैत तँ ठीक-ठीक समैओक बोध होइत, सेहो नहियेँ अछि। जइ दिन जेलमे प्रवेश केलौं तही दिन जहलक मुँहपर जमा कऽ

लेलक। जइ दिन निकलब तइ दिन देत। मुदा निकलब कहिया? आइ तँ फाँसीएपर लटैक जिनगीक विसर्जन करब तखनि घड़ी केना लेब आ पहिरि कऽ समए बूझब? मुदा तँए कि जइ गाममे मुर्गी नै रहै छै तइ गाममे भोर नै होइ छै? पाँच-दस मिनट आगू-पाछू, अनुमान तँ कऽ सकै छी। मुदा काजक संग जे समए चलैए ओकर अनुभव आ बिनु काजक अनुभवोमे तँ अन्तर होइते अछि। काजक दौड़क अनुभव बेसी बढ़ियाँ होइ छै। किएक तँ काजक संग समए सटि चलैए। मुदा हमरा तँ सेहो ने अछि। बस दू बेर खाइ छी, ढेंग जकाँ ओंघराएल पड़ल रहै छी। कखनि जगल रहै छी आकि सूतल रहै छी, से आनक कोन बात जे अपनो नै बूझि पबै छी। पछतेनौं तँ किछु ने भेटत। फेर मनमे उठलै-

"फाँसी किए?"

किछु समए गुम्म रहला पछाति अनासुरती मनमे उठलै जौं भक्ति-भावसँ समए कटने रहितौं तँ हँसी-खुशीसँ चढ़ितौं, से नै केलौं तँ कुहरि-कलपि चढ़ब। जहिना शक्तिक स्रोत ज्ञान छी तहिना ने भक्तिक स्रोत श्रमो छी। फेर मन ठमकलै। जौं भक्तिक स्रोत श्रम छी तँ हमहूँ तँ श्रमिक छीहे। जौं से नै रहितौं तँ एत्ते खेल केना केलौं। अचताइत-पचताइत मुहसँ निकललै। से तँ जरूर केलौं। एक पसीना पत्थर तोड़ैमे चुबैए, दोसर पत्थर बनबैमे चुबैए। हँ से तँ दुनूमे चुबैए। मुदा की दुनूक मिठास एक्के रंग छै? से तँ नै छै। तखनि श्रम -सेवा- केकरा कहबै? फेर बलदेवक मन ठमकि नजरि उठा-उठा चौकन्ना होइत चारू दिस ताकए लगल। मुदा अन्हारमे किछु देखबे ने करए। मनमे उठलै, अनेरे श्रमक पाछू बौआइ छी। गेल जमाना फेर नै लौटए। आब तँ जिनगीक अंतिम खाढ़ीपर चलि एलौं। ने श्रमिक छी आ ने श्रमक सिरजन कर्ता। अनेरे अनका पाछू बौआ रहल छी। सभकँ अपन-अपन जिनगी छै। अपन-अपन जगह छै, जे समैओक आ प्रकृतोक प्रभावसँ प्रभावित होइत रहै छै तँए अपन बात जेना लोक अपने बुझैए तेना आन थोड़े बूझत। चारू दिससँ घुमैत-फिड़ैत मन अपना लग बलदेवकँ एलै। मनमे खौंझ उठलै। यएह मन छी जेकर किरदानीसँ कियो भगवान बनि जाइत अछि आ कियो हत्यारा बनि दुनियाँक सोझहामे फाँसीपर लटैक जाइए। मुदा

कहबै केकरा आ सुनत के? मन ठमकलै। हत्यारा के? हत्या की? आ के पैदा करैए? जहिना कम माछी-मच्छर रहने खेबो काल आ सूतबो काल ओते परेशानी नै होइत जेते अधिक रहने होइत। बलदेवक मन फेर ओझरा गेलै। ओझरी छुटिते अपनापर ग्लानि हुअ लगलै। हमहूँ तँ दुनियाँक चुनल अपराधीमे छी। जिनगी भरि अपनेमे बेहाल रहलौं मुदा बेहाले केना रहि गेलौं, से कहाँ बूझि पेलौं। जहिना धरतीकेँ बेहाल भेने सृजन शक्ति कमि जाइ छै तहिना ने हमरो भेल। मन उफनि गेलै। चिचियाइत बाजल-

> ''हम अपराधी छी, अपराध केने छी। डकैतीक संग हत्या केने छी। अखने हमरा फाँसी हुअए?''

पितोक मास्चर्य ओइ बेटासँ ओही दिनसँ कमए लगै छै जइ दिन सुपात्रसँ कुपात्र दिस जाइत देखै छै। तहिना बलदेवक कलपैत आत्मा मनसँ हटि रहल छै। अनधुन मुँह पटैक रहल छै। अपराधी छी, अपराध केलौं। एक अपराध नै, अनेको, एक दिन नै जिनगीओ भरि। बहुत विलमि कऽ फाँसी भऽ रहल अछि। बहुत पहिनहि भऽ जाइक चाहै छल। मुदा भेल किए नै?

एकाएक मुँहमे पर्दा लगल हुमड़ैत मन पाछू दिस ससरलै। अंतिम हत्या आ डकैतीक फल फाँसी छी, मुदा आरो जे जिनगी भरि केलौं, तेकर की भेल?

मध्यमासक स्नान जहिना आन मासक स्नानसँ अधिक सुन्नर, अधिक शीतल होइत तहिना जिनगीक अपराधक बीच बलदेवक मन अँटकि गेलै। एक दिस जिनगी दोसर दिस अपराध। शीतल भेल शान्त मनमे उठलै, की हमर जनम अपराधीए बनैले भेल छल जे अपराधीक जिनगी बितेलौं। मुदा बुझिओ कहाँ पेलौं जे अपराध करै छी, अपराधी बनै छी। ओझराइत मनकेँ सोझरबैत बलदेव जिनगीक एक-एक दिन आ एक-एक घटना मोन पाड़ए लगल। मुहसँ निकललै-

> ''अपन जिनगीक बात जेते अपना मनमे अछि ओत्ते थोड़े दोसराकेँ हेतइ। सिरिफ हत्ये-लूट टा तँ नै केने छी, माए-बहिनिक सम्बन्ध सेहो तोड़ने छी।''

मन कलपि कऽ बजलै-

"एक बेर नै हजार बेर फाँसी हेबाक चाही।"

मन बेकल हुअ लगलै। केकरा लेल केलौं? ई बात मनमे उठिते धियान परिवार दिस बढ़लै। अंतिम दिन पत्नी आ बेटाक दर्शन हएत? ओ सभ बेचैनीसँ भेँट करए जरूर औत। मुदा की जहिना परिवारमे भेँट होइ छल तहिना हएत? से केना हएत? सिपाहीक घेरावंदीमे हम रहब आ ओ सभ हटि कऽ कातमे ठाढ़ रहत। मन घुमलै। अनेरे किए कियो भेँट करए औत? कोन मुँह देखत आ कोन देखौत। तइसँ नीक जे भने हमहूँ हराएल छी आ ओहो सभ हराएले रहए। दुनियाँक सभ तँ नै ने चिन्हतै-जनतै। जौं समाजमे लोक आँगुर देखौतै तँ समाज छोड़ि दोसर समाजमे चलि जाएत। जखने एक समाजसँ दोसर समाजमे जाइए तखने पछिला समाजक बान्ह टूटि जाइ छै। बान्हक भीतर बनल समाज अपन हितक बात सौचैए। मुदा समाज तँ समुद्र छी, जइमे घोंघा-घोंघीसँ लऽ कऽ गोहि-गमार तक छै। बलदेवक मन ठमकि गेल।

जहिना जनम-जन्मान्तरसँ वा कुरीति-कुसमए पाबि बाँसक छाँहमे जनमल लतामक गाछ सेहो समए पाबि कलशि जाइत तहिना बलदेवक मन कलशल। अबोध बच्चाक हाथसँ गिरल ऐना, माए-बापक दुख जकाँ नै मुदा तैयो टुकड़ी बीछि-बीछि जोड़ैक कोशिश करैए तहिना बलदेवक कलशल मनमे उपकलै। तीन बर्ख जहल एला भऽ गेल। राता-राती घरसँ पकड़ा बन्दूकक हाथे जहल आएल रही। नव-नव लोक, नव-नव जगहसँ भेँट भेल। जहिना देशक मिथिलांचलोक वासी दुनियाँक कोण-कोणक बीच बसि अपन पूर्ब परिवारक स्मरण करै छथि तहिना बलदेवक मनमे परिवार सेहो आएल। मुदा लगले जहलक परिवार अगुआ गेलै। एक-फाटक टपि दोसरमे घेराएल रही। तलाशीक संग सभ किछु घेरा गेल। बाहरसँ औत नै, अपने घेराइए गेलौं। मुदा तैयो नव-नव चेहरासँ भेँट भेल। भीतर अबिते -वार्डमे- घुस्सा-मुक्काक सलामी भेल। जहिना अखड़ाहापर उतरैत खलीफाकेँ पानि उतरए लगैत तहिना उतरल। जिनगीक पहिल बेर जहल देखलौं। स्वागत पछाति मेट लग पहुँचौल गेलौं। अखड़ाहा बदलने खलीफाक पानिओ बदलि जाइ छै। मुदा...। मेटक रजिष्टरमे नाओं चढ़िते

ढेर हुकुम एक संग उठल। झाडू लगबैक ड्यूटी, पैखानामे पानि पहुँचाबैक ड्यूटी इत्यादि-इत्यादि। काजक भारसँ मन दबाइत जा रहल छल आकि मसलनपर पसरल मेटक हुकुम भेल-

''एम्हर आ, पहिने जाँत तखनि दोसर काज हेतइ।''

अवग्रहमे फँसल मन हल्लुक भेल। मनमे खुशी उपकल जे कनीओं-कनीओं कान अँइठैत तँ काने उखड़ि जइतए। जान बँचल तँ लाख उपए। एक करोट घुमैत मेटक मैनजन बाजल-

''पहिल दिन छिऔ, आइ तोरा खेनाइ नै भेटतौ।''

जहिना मुर्दापर अस्सी मनसँ नब्बे मन जारनि चढ़ि जाइए तहिना चढ़ि गेल। असबिसो नै कऽ सकलौं। मुदा तैयो सबुर भेल जे नै खाइले देत, सुतैक तँ जगह भेट गेल किने। तैबीच मैनजन हुकुम फेकलक-

''कोन केसमे एले हेन?''

केसक नाओं सूनि मन दलदल भऽ गेल। जहिना सोग-पीड़ामे नोर बहा केकरो सान्त्वना दैत काल होइत, तहिना। जहलसँ निकलैक आशाक अँकुर बलदेवकँ जगलै। हलसि कऽ बाजल-

''सरकार, डकैती आ खून संगे छै।''

डकैतीक संग खून सूनि मेटक मन ठमकल। अधिक दिनक संगी हएत। तँए दोस्तीए करब नीक। पड़ले-पड़ल हुकुम चलौलक-

''नवका कैदीकँ खइओ आ सुतैओले दिहक।''

जहिना जिनगीक सुख, खाएब-सूतबमे अबै छै तहिना सूतबक आश देखि बलदेवक मनमे खुशी उपकलै। खुशी उपकिते मन बौआए लगलै। तही बीच मेटक मुहसँ फुटलै-

''तेलक शीशी छेबे करौ, काल्हिसँ गोदामे सँ लऽ लऽ अनिहेँ।''

गोदामक नाओं सुनिते वार्डमे गल-गूल शुरू भेल।

''नवका कैदीकँ गोदाम केना जाए देब। ई अन्याय छी।''

एक कैदी ठीकेदारकेँ पुछलक-

''की बात छिऐ हौ ठीकेदार भैया? एना किए हड़बिड़ों केने छह?''

ठीकेदार कहलकै-

''तूँ अखनि तड़ी-घटी नै बुझबिही।''

''से किए हौ भैया, सुनने लोक सुनबो करैए आ नहियोँ सुनैए। बुझौने लोक बुझबो करैए आ नहियोँ बुझैए। पहिने बजबहक तब ने?''

''रौ बूड़िबक, सभ गप सभठीम बाजब नीक थोड़े होइ छै। नीको अधला भऽ जाइ छै आ अधलो नीक भऽ जाइ छै।''

''एक बेर अजमा कऽ देखहक। नरकोमे ठेलम-ठेल करै छह। बहरामे लोक किछु करैए तँ भीतर -जहल- अबैए। ऐठामसँ केतए जाएत। बाजह, तोरा की बूझि पड़ै छह जे हम ओहिना आएल छी। आकि किछु कए कऽ आएल छी।''

ठीकेदारक बढ़ैत संगी देखि कठहँसी हँसि मेट बाजल-

''की रे ठीकेदरबा, कथीक बमकी धेने छौ। सुन...।''

एक दिस ठीकेदारकेँ अपन घटैत आमदनी मनमे नचैत तँ दोसर दिस मेटक आदेश। घुसुकि कऽ ठीकेदार लगमे आबि फुसफुसा कऽ बाजल-

''मेट भैया, अहाँसँ कि कोनो बात छिपल रहैए। बुझिते छिऐ जे दू पाइ बँचा कऽ गाम पठबै छी।''

ठीकेदारक बातसँ मेटक मनक आगि नै ठंढ़ाएल। मुदा हवाक लहकी जकाँ जरूर लागल। मनमे उठलै दस लंठ तखनि ने महंथ, जौं से नै तँ असगर बरस्पतिओ फूसि। जहिना गुलाबी लाल आल-अड़हुल बनि जाइत, रंग बदलि अपराजित उज्जर-कारी बनि जाइत, दिन-रातिक खेलमे पूर्णिमा अमावस्या आ अमावस्या पूनो बनि जाइत अछि तहिना बलदेवक मनमे जिनगीक जुआरि उठए लगलै। मुदा बिनु जारनिक आगि जहिना, पियासल बिनु पानि जहिना, खेतिहर बिनु खेत जहिना शक्ति

रहितो हीनशक्तिका बनि जाइत अछि तहिना जिनगीकेँ सुता कऽ रखब छी। मुदा प्रश्नो तँ अजनव अछि। नीक भोजन, नीक नीन इन्द्रासनक मुख्य द्वार छी, तखनि जिनगी...?

जिनगीक आवश्यक तत्वमे सूतबो -नीन- तँ अनिवार्य छी। तखनि अधला केना भेल? मुदा जखनि दस कोठरी बहारैक, साफ करैक भार रहत तखनि एक्के कोठरी बहारबो तँ उचित नै। मेटक मन ठमकल। ने आगूक बाट देखै आ ने पाछू घूमि ताकब नीक बुझै। मनमे पुन: उठलै, कियो जोग क्रियामे जोगी बनि जोगिया जाइत अछि, कियो भोगी बनि भोगिया जाइत अछि तहिना तँ कियो काजोमे कजिया जाइए। मुदा कज्जी भेने तँ अबाहो भइए जाइत अछि। जैठाम निरोगक बलि प्रदान होइत तैठाम अबाहक पूछ केतेक?

सामंजस करैत मेट भाव-विह्वल भऽ बाजल-

''बौआ ठीकेदार, ई दुनियाँक खेल छी। अपना सभ जहलमे तीत-मीठ करै छी, आ कियो खुलल धरती-अकास बीच खूलि कऽ खेलाइए। तैठाम तोहीं कहअ जे की नीक हेतइ?''

जहिना चोरोक भरमार अछि, किसिम-किसिमक चोर अछि, तहिना ने एकरंगाहो चोरक भरमार अछि। अमती काँटमे ओझराएल जकाँ ठीकेदार ओझरा गेल। जौं चोर चोरि कए कऽ आनए आ जरूरतिमन्द लोककेँ दऽ दइ तखनि ओकरा की कहब? चोरि तँ ओ ने होइत जे चुपचाप आनि चुपचाप रही। जइसँ कियो बुझबो ने करत आ तरे-तर मखड़ैत रहब। ठीकेदारकेँ गुम देखि मेट पुछलक-

''गुम किए छह, ठीकेदार? तोरेपर छोड़ि देलिअ जे जे तूँ कहबह सएह करब। जाधरि प्रेम-प्रेमसँ नै मिलि, आत्मा-आत्मासँ नै मिलि, मन-मनसँ मिलि कऽ नै चलत ताधरि भरि मन सिनेह केतए सिंगार करत?''

जवाबक तगेदा सुनि ठीकेदारक मनकेँ नै रहल गेलै बाजल-

''मेट भाय, जखनि किलो-किलो तेल अहाँकेँ पहुँचबिते छी, तखनि नवका कैदीकेँ किए गोदाम जाइले कहलिऐ?''

"बौआ, मालीमे तेल हौंथरैत देखलिऐ, तँए बजा गेल।"

अपन बढ़ैत पक्ष देखि ठीकेदारक मनमे खुशी पनपल। खुशियाएल मन बजलै-

"जे आदमी आइए जहल आएल अछि ओकरा सोझहे गोदाम पठाएब नीक नै। चोर अछि आकि छूलाह अछि से अखनि लगले केना बूझि जेबै? जखनि हमरे हाथमे गोदाम अछि तखनि अहाँकेँ अभाव नै हएत सएह ने?"

ठीकेदारक बात सुनिते मेटक मन तीआइर जालमे फँसल माछ जकाँ ओझरा गेल। चोर तँ चोर भेल, मुदा छुलाह की भेल? मुदा मेट भऽ पुछनाइओ नीक नै। जेकरे हाथ सभ किछु, सएह नै बुझहै, मेटक मनकेँ घुरियबए लगल। एते दिनसँ जहलमे छी, ठीकेदारक हिसाबे छुलाहोक संख्या कम नै अछि, मुदा नै बूझि पेलौं से केहेन भेल?

शब्दक मोड़ बदलैत मेट पुछलक-

"केते रंगक छुलाह जहलमे हएत ठीकेदार?"

जहिना नारद धरतीक रिपोर्ट अकासमे करैत तहिना ठीकेदार अपनाकेँ महसूस करैत बाजल-

"भाय साहैब, तेहेन घुरछी लगल सबाल अछि जे औगताइमे छूटि जाएत। तँए बिहिया कऽ देखए पड़त। पान-सात दिनमे पूरा-पूरी कहि देब।"

बलदेवक मनमे जहलक पहिल दिन नाचए लगलै। पुन: मनमे उठलै, मात्र किछु घंटा लेल दुनियाँमे छी, तखनि एक्के दिनक काजमे घेराएल रहब नीक नै। मुदा कहबो केकरा करबै आ सुनबो के करत। आगू बढ़िते मनमे उठलै, जिनगीमे जे किछु जे करैए ओ आन देखौ, बुझौ आकि नै देखौ-बुझौ मुदा केनिहार तँ जरूर देखबो करैए आ बुझबो करैए। मनमे ग्लानि उठए लगलै। जहिना बर्खाक बोहैत बूनक बेग, घेरामे घेरा जमा हुअ लगैए तहिना जिनगीक चलैत चक्रक चालि बलदेवक मनमे समटाए लगलै। केते भारी अपराधी छी जे धरतीक भार बनि गेल छी,

जौं हमरा सन अपराधीकेँ फाँसी नै होइ, सेहो अनुचित हएत। मन असथिर भऽ गेलै। मनुखे ने मानवो आ दानवो बनैए। दुनियाँक ऐ रंगमंचपर कियो वीर बनि तँ कियो कायर बनि पार्ट अदा करैए। मन ठमकलै। पुन: उठलै, जइ धरतीक भार उठबए आएल छेलौं ओइ धरतीक भार बनि गेलौं!! एना किए भेल? की जिनगी भरि हाथ-पएर मारि रहलौं, सेहो तँ नै अछि। चलबैत आएल छी। तखनि भार किए बनि गेलौं। मन अँटकि गेलै। आइ जरूर बूझि पड़ैए जे जिनगी भरि विपरीत -बे-पीरित- दिसा चलि कुमार्ग पकड़ि लेलौं मुदा से ओइ दिन कहाँ बुझलिऐ जे कुमार्ग छी आकि सुमार्ग। काजोमे केतौ बाधा कहाँ उपस्थित भेल? जहिना धारक धारा सिरासँ भट्ठा दिस धड़धड़ाइत चलैए मुदा भट्ठाकेँ सिरा दिस ससरैमे सामना करए पड़ै छै। केना-पानिए पानिकेँ रोकैत रहैए। मुदा बीचमे एकटा तँ होइ छै सिरोक पानि आ भट्ठोक पानि एक-दोसरसँ रोकाइत, ठाढ़ हुअ लगैत। ताधरि ठाढ़ होइत जाइत जाधरि धारसँ ऊपर उठि धरतीपर नै छिड़ियाए लगैत। मुदा धरतीओपर तँ दिसा अवरूद्ध करिते अछि। आइ धरि जे नै बूझि सकलौं ओ अपने केना बूझि पएब। मुदा नै, जिनगीक अंतिम छोरपर भलहिं सभ बात नै बूझि सकिऐ, मुदा किछु नव तँ जरूर बूझि पाबि रहल छी। जौं से नै, तँ कहियो नै बूझि पेलौं जे फाँसी हएत? हमहीं नै, सभ एहने वृत्ति करैए मुदा सभकेँ फाँसीए कहाँ होइ छै। जैठाम पुरजा-पुरजी मनुखक अंग बनल अछि, सभ अंगमे गुण-दोष छै, तैठाम केना जोड़ि कऽ चलौल जा सकैए। समए पाबि कियो दौड़ए लगैए आ कुसमए पाबि थकथका जाइत अछि। तैठाम सौंसे मनुख बनब धिया-पुताक खेलौना नै छी। समए अनुकूल बनए-बनबए पड़ै छै, से नै तँ रग्गड़मे लोक रगड़ाए किए जाइत अछि।

बिसरि गेल बलदेव बारह बजेक फाँसी। मन आगू दिस बढ़लै। जैठाम अधिकांश फूल ओहन अछि जे अनेको रंगक होइए। गंध, रूप आ आकार समान रहितो एक-दोसराक अनुकूलो आ प्रतिकूलो अछि। तहिना गुलाबी आ लाल आलो-लाल आ गाढ़ो लाल बनैए तहिना तँ अपराजित कारीओ बनैए आ उजरो। आ जौं उजरोपर कारीए रंग चढ़ि जाए जेना एक-दोसरपर चढ़ैए। भलहिं थलकमल उज्जरसँ लाल भऽ जाए मुदा सभ तँ थलकमले ने छी।

जहिना फुलवाड़ी फलवाड़ी वा वंशबाड़ी टहलला पछाति छाहरिमे बैसैक मन होइए तहिना बलदेवकेँ सेहो भेल। दुनियाँक दृश्य देखि मन हहिआए लगलै। ऐठाम के देत? केकरासँ मंगबै? जौं मंगबो करबै तँ जरूरी नै अछि जे नीके देत। अधलोकेँ नीक कहि दैत अछि।

जुग-जुगसँ रंग-बिरंगक फूल-फलक गाछ रहितो अखनो हराएल अछि आ हराइओ रहल अछि। भरिसक हराइ-जीताइक खेले ने तँ चलैए? बलदेवकेँ अपने-आपपर शंका उठलै। अखनि जहलक सेलमे छी, अकलबेड़ामे फाँसीपर चढ़ब, कहीं बुइधे तँ ने भगंठि रहल अछि। भंगठले बुधि ने बताह कहबै छै। मुदा बिनु भंगठलोकेँ तँ बताह कहै छै! जहिना धान-रब्बीक रग्गड़सँ हाँसू मुरछि जाइए तहिना बलदेवक मन मुरछि गेलै। किछु समए निकलिते मनमे उठलै अझुका पछाति के हमरा मोन रखत। कोनो कि हम असगरे मृत्युदंड पेलौं आकि पबै छी। कियो गाछपर सँ खसि कऽ तँ कियो पानिमे डूमि, कियो बीखहा दबाइ पीब तँ कियो विषैला साँपकट्टीसँ...!!

मुदा हम तँ ओइ सभसँ भिन्न छी? दुनियाँक बीच अपराधी छी, ओहन अपराधी जेकरा दुनियाँ थूक फेक भगबैए। मनमे हुमड़ैत वायुक दरद बूझि पड़लै। केकरा लेल एते अपराध केलौं? की अपना लेल आकि परिवार लेल। आइ के हमरा संग फाँसीपर चढ़त? जौं अपना लेल केलौं तँ की हाथ-पएर नै अछि? मनमे एकाएक समुद्रक शीतल समीरक झटका लगलै। झटका लगिते मुहसँ निकलए लगलै-

> "ओ फाँसी केहेन होइए जे हँसैत अपने हाथे गरदनिमे लगबैए। ओहिना हँसैत मुँह लोकक सोझहामे हँसैत रहैए। आ ओ फाँसी केहेन जेकरा थूक फेक लोक आँखि मूनि लइए। कियो सपूत बनि फाँसीपर चढ़ि अमर ज्योति जरबैए आ कियो करियाएल इजोतमे अन्हराएल रहैए। ऐ धरतीपर केकरो संग कियो नै जाइत अछि। सभ अपन-अपन स्वार्थक पाछाँ रहैए। मन ठमकलै। मनमे उठलै केना नै जाइत अछि। आत्माक संग आत्मा जरूर जाइत अछि। नीकक संग नीक आ अधलाक संग अधला तँ जाइते अछि।"

रातिक अंतिम पहर। एक दिस राति उसरैक बेर तँ दोसर दिस दिन चढ़ैक समए। अर्द्धचेत बलदेवक भक्क तखनि पुन: खुजलै जखनि अन्हारमे हराएल परुकी संगीक बीच अपन उपस्थिति दर्ज करबैले घुटकल। अपन-अपन आवेशी अवाजमे गामसँ आन गाम आ एकसँ अनेक किसिमक गाछपर एक जुटताक अवाज देलक-

> “यएह समए छी जे गौतमो ऋृषिकेँ चन्द्रमा धोखा देलकनि। सराप चाहे गौतम जे देलखिन मुदा एते तँ भेबे केलनि जे आत्मासँ खसि देहलोकमे उतरि गेला। चन्द्रमामे जखनि गहन लागि जेतै तखनि अन्हारमे धरतीपर केकरा के चिन्हत?”

परुकी सबहक अवाज सुनिते बलदेवक मनमे जहिना तरेगन रहितो भुरुकबा तरेगन आल-लाल ज्योति धरतीपर हँसैत आबि प्रकाशित करक परियास करैत, तहिना बलदेवक मनमे सेहो पतराएल प्रकाशक आगमन भेलै। ज्योतिक आगमन होइते उठलै, कोनो कि हमरेटा फाँसी हएत आकि अदौसँ होइते एलै आ भविसोमे होइत रहतै। मुदा हमरा जिनगीमे फाँसी चढ़ैक बाट पकड़ाएल कहिया?

बलदेव पाछू उनटि ताकए लगल। हम तँ ओही दिन फाँसीक बाट पकड़ि लेलौं जइ दिन डगर छोड़ि डगहर पकड़ि लेलौं। डगरक तँ सीमा-सरहद होइ छै, निश्चित जगहसँ निश्चित जगह पहुँचैए, मुदा डगहर तँ से नै होइत। घुरिया-फिड़िया बौअबैत रहैए। मनुखक तँ डगर होइ छै डगहर तँ पशु लेल होइ छै जे जंगलमे चरैले जाइ छै। की हमहूँ पशुए भऽ गेलौं। मुदा पशुओ तँ जीबे छी आ मनुखो जीबे छी। दुनूक बीच आत्माक बास होइ छै। मुदा आत्माक बास रहितो पशु कहाँ बूझि पबै छै जे हमरा बीच आत्माक बास अछि। मुदा मनुखकेँ तँ से नै होइ छै। मनुखे ने जीव-जन्तुओसँ प्रेम करैए आ प्रेम पबैए। सहयोगी बनि जिनगीमे सहयोगो करैए आ सहयोगक अपेक्षो रखैए। जौं से नै तँ ओ अपन रहैक बेवस्था किए ने कऽ पबैए। जेकरा रहैक बेवस्था नै हेतै तेकर जिनगीक गारन्टी की भऽ सकै छै। भलहिं बौआ-ढहना घास-पात वा अन्य भोज्य पदार्थ ताकि पेट भरि लिअए मुदा मनुख जकाँ तँ जिनगी जीबैक गारन्टी नै कऽ सकैए। मनुख तँ पातालसँ पानि आनि पीब सकैए, धरतीसँ

भोज्य-पदार्थ उपजा सकैए। फेर मन ठमकलै। सोचती बन्न भेलै! सोचनशक्ति रूकलै!

जहिना कटल वा टुटल रस्ता देखि राही ठमकि जाइत जे ओइ पार केना जाएब। मुदा कटबो आकि टुटबो तँ रंग-बिरंगक होइत अछि। एक टुटब ओहन होइत अछि जइमे पानि-थाल-कीच होइए आ दोसर ओहन होइत जे सुखले रहैए। जइमे सावधानीसँ निच्चाँ उतरि पार कएल जाइए। तहिना तँ पनियाएलो-थलाहमे होइत। केतौ अगम होइत केतौ कम होइत जैठाम कम होइत तैठाम कनी कठीने सही मुदा पार तँ कएल जा सकैए। मुदा अगममे तँ डुमबोक आ गड़बोक संभावना बनले रहै छै। फाँसी लगा, गरदनि दाबि हमर प्राण लेत मुदा फँसरीओ लगा तँ लोक मरिते अछि। एहेन-एहेन परिस्थिति पैदा कऽ दैत जे बेवस भऽ लोक अपन गरदनिमे फँसरी लगा प्राण गमबैए। कर ओ अपराधी छी आकि अपराधीक सजा पबैए! जखनि ओ अपराधी नै छी, तखनि अपराधीक सजा किए भेटलै?

वोनक बाघ सिंह किए दोसराक प्राण लऽ लऽ खून पीबैए? ओकर की दोख छै? यएह ने जे ओकरा आगू ओ अब्बल अछि। फेर मन ठमकलै। कियो इनार-पोखरिमे डूमि मरैए, कियो आगि, पानि-पाथर आ विर्ड़ोमे मरैए। तेतबे नै, कियो गाछपर सँ खसि मरैए, तँ कियो गाछपर चढ़ैत-उतरैत काल खसि मरैए। प्रकृतिक तँ अद्भुत लीला अछि। क्षण-क्षण पल-पल बाटो पकड़बैए आ धकेल-धकेल निच्चोँ करैए। ऊपर-निच्चाँक खाढ़ा बना जीवन-मृत्युक सीमा बनौनै अछि। एक तँ ओहिना आगिमे अगियाएल अछि, पानिमे पनियाएल अछि, हवामे हवियाएल अछि, तखनि केना परखि पएब? परखैले जेहेन आँखिक इजोत चाही? तेहेन, ने करियाएल वादलमे अछि जे बर्खासँ सिक्त करत आ ने डभियाएल धरतीमे अछि जे धरतीक परतकँ तेना सिर गछाड़ने अछि जे शक्तिहीन बना देने छै। सूखल माएक छातीमे दूध कहाँ अछि जे चाहिओ कऽ वेचारी दऽ सकती। अन्हारो रातिमे, जखनि हाथ-हाथ नै सुझैत, जखनि अपन देहो हरा जाइत, देहक सभ अंग निष्क्रिय भऽ जाइत, तखनो तँ किछु रहिते अछि जे हौंथोइरो-हँथोरि किछु दूर धरि लइए जाइए। मुदा हम तँ सोलहन्नी आन्हरा गेलौं। जहिना पीबैओबला पानि बसिया गेने फेका जाइत,

तहिना आइ दुनियाँसँ फेका रहल छी। अपन फेकाइत जिनगीपर नजरि पड़िते बलदेवक मन सहमि गेलै। ने आगूक बाट देखैत आ ने पाछू घुसुकि पाबए। जहिना जिनगीक ओइ मोड़पर कियो चारू दिससँ दुश्मनसँ घेरा, हारि-जीतक तारतम्य नै कऽ पबैत तहिना बलदेव सेहो घेरा गेल। हारिओ मानने दुश्मनक हाथे प्राण गमेबे करब, तखनि प्राणक मोह रखि हारिओ मानब उचित नै। तइसँ नीक जे सामना करैत सामनेमे जेतेकाल ठाढ़ रहब ओत्तेकालक जिनगीक महत तँ आरो किछु हएत।

मुदा ठाढ़ रहि के सकैए? जेकर शरीर टी.बी., केन्सर सन रोगसँ जर्जर भऽ खोखला भऽ गेल रहैए ओ ठाढ़ केना रहि सकैए। पएरमे ओ शक्ति कहाँ छै जे ठाढ़ रखतै। बलदेवक मन विचलित भऽ गेलै।

किछु क्षण पछाति मनमे उठलै, फाँसी तँ पोखरिक जाइठ सदृश जिनगीक छी। कियो अगम पानिमे डुमकुनियाँ काटि, माटि निकालि जाइठक मुरेड़ापर लगबैए तँ कियो किनछैरे-किनछैरमे पिछड़ि कऽ खसि, पिछड़ैत-पिछड़ैत अगम पानिमे डूमि, सड़ि-सड़ि सड़ैनिक गंध पसारैए। मुदा जिनगीक अंतिम छोड़पर बुझनहि की हुअए? कम-सँ-कम जौं अपनो लेल केने रहितौं तँ कनैत किए, हँसैत किए ने दुनियाँ छोड़ितौं। जिनगीक अचूक उपए कहाँ बूझि पेलौं।

सूर्योदय भऽ गेल। बलदेवक पत्नी कामिनी आ बेटा सुशील गुमसुम भेल अपन-अपन काजमे लागल मुदा मनमे विचित्र स्थिति बनल रहैक। ने सुशील माएकेँ किछु कहैत आ ने माए बेटाकेँ। दुनूक मनकेँ बलदेवक फाँसी भीतरे-भीतर खिंचैत रहनि। जइसँ मनक पीड़ा बढ़ैत रहनि। मनक पीड़ा ताधरि बढ़ैत जाधरि ओकरा निकालि दोसरकेँ नै कहल जाइए। तखने अकासमे एकटा कौआ बाजल। कौआक बोलमे कामिनीकेँ अपशगुन बूझि पड़लनि, मुदा सुशीलकेँ सगुन बूझि पड़ल। गुम्मी तोड़ैत कामिनी बजली-

"बौआ, कौआक बोल केहेन ओल सन भेल।"

ओना बलदेवक फाँसी दुनूकेँ बूझल, मुदा तैयो मनकेँ फुसलबैत बहलबैत कामिनी बजली। माएक बेथाकेँ सुशील बूझि गेल, मुदा जिनगीमे अहिना सोग-पीड़ा अबै-जाइ छै। छोटसँ-छोट पीड़ा होइ आकि पैघसँ-पैघ

होइ मुदा समैक संग तँ लोक ससरिए जाइए। जइसँ धीरे-धीरे कमैत-कमैत मेटा जाइ छै। जहिना चलैले रस्ता चाही, से तँ नीक आकि बेजए अछिए। समाज तँ ओहन समुद्र छी जइमे करोड़ो-अरबो जीव-जन्तु स्वछंद भऽ जीवन-यापन करैत रहैए, भलहिं एक-दोसराक बाटो घेरैत रहै छै, पकड़ि-पकड़ि खेबो करै छै मुदा, तैयो तँ रहबे करैए। नीक की अधला, मनुख मनुखे बीच रहैए। माएक पीड़ाकेँ सुशील भाँपि गेल। मोने-मन सोचलक जे एक तँ वेचारीकेँ जिनगी भरिक संगी छूटि रहल छन्हि तैपर जौं हमहूँ ओहने बात कहबनि तँ आरो मनमे धक्का लगतनि। चोट-पर-चोट लगने आरो अधिक वेदनाक अनुभव होइ छै। मुदा जहिना कड़ू लगने लोक पानि पीब कड़ू कम करैए तहिना जँ दर्द मेटबैक उपए करब तँ दर्द आगू नै बढ़ि या तँ ठमकल रहतनि वा कमतनि। समगम होइत सुशील माइक बातक उत्तर देलकनि-

"माए, कौआ तँ केहेन सुन्नर बाजल। कबकबाएल कहाँ?"

सुशीलक बात सुनि कामिनी बजली-

"आन दिन केहेन सुन्नर भिनसुरका बोली निकालै छेलै आइ केहेन सबसबाएल बोल निकाललक।"

माएक हृदैक वेदनाकेँ सुशील भाँपि लेलक। ओना मनुखक हृदैक थाह नै छै। एक दिस रूइयाक फाहा जकाँ बिनु हवोक उड़ैए तँ दोसर दिस जुआन पति, कमाइबला जुआन बेटाक मृत्यु, सेहो तँ सहबे करैए। बाट टुटल वा कटल होउ आकि छोटसँ नम्हर खाधि होउ, लोककेँ चलैले तँ बाट चाहबे करी। एकठाम बैसलासँ तँ जिनगी नहियेँ चलै छै। कोनो-ने-कोनो उपए तँ करै पड़ै छै। केतौ लोक कूदि कऽ खाधि पार करैए तँ केतौ बगलक माटि काटि वा छीलि कऽ ओकरा पहेटि चलैए। केतौ एहनो होइ छै जे नम्हर टूटान वा कटान रहै छै तँ ओकरा छोड़ि दोसर बाट बना लइए। माएक पीड़ाकेँ कमैत नै देखि सुशीलक मनमे उठल। एक-एक ढेपासँ सेहो बाटक खाधि भरल जाइए आ खाधिक हिसाबसँ चेकान काटि सेहो भरल जा सकैए। सुशील बाजल-

> ''माए, हमरा तँ कौआक बोलमे सकुन बूझि पड़ल। जहिना केकरो कोनो वस्तु हरेलासँ दुख होइ छै तहिना ने भेटिनिहारकँ खुशीओ होइ छै। बीचक वस्तु तँ एकेटा रहै छै। एक्के बात वा वस्तु एक लेल नीक अछि तँ दोसरा लेल अधलो भऽ जाइत अछि। जीवन रक्षक पतिओ होइत अछि आ बेटो होइत अछि। मुदा एक काज रहितो दुनूक करैक विधिमे किछु-ने-किछु अन्तर तँ भइए जाइत अछि। वएह अन्तर तँ एक-दोसराक बीच अन्तरो पैदा करैए।''

सुशीलक विचार कामिनीक विचारक सोझहा-सोझही ठाढ़ भऽ गेल। कामिनीक विचार ठमकलनि। एकाएक ठाढ़ भेने जहिना शरीरमे झोंक अबै छै तहिना कामिनीकँ एलनि। मनमे झोंक लगिते डोललनि। डोलिते नजरि एक दिस पतिपर तँ दोसर दिस पुत्रपर विभाजित हुअ लगलनि। जइ छत्रछायामे अखनि धरि रहलौं ओ तँ टूटि रहल अछि। मन निराश हुअ लगलनि, मुदा लगले आगूमे पुत्र देखि आशा जगलनि। पुत्रो तँ पतीए जकाँ प्रहरी होइत अछि। निराशाक मचकीमे आशाक आस लगलनि। हृदए सिहरलनि। सिहरिते पुत्रक प्रति प्रेम जगलनि। ओ प्रेम नै, जे प्रेम माएक आशामे पुत्रकँ होइत। बल्की ओ प्रेम जइ आशामे पुत्रक आश्रयमे माए जीबै छथि। जहिना जलसँ जलकण आ ओससँ ओसकण बनि पुन: जल वा ओसक सृजन करैए, तहिना। निराश मनमे खुशीक संचार भेलनि। संचार होइते खिलैत कली जकाँ मन खिललनि। जहिना खापड़िमे मकइ वा धानक लाबा एक्के-दुइए फूटि-फूटि रंग बदलैत तहिना मनक रंग बदलए लगलनि। केना लोक कहैए जे कोनो बीआ लेल अनुकूले वातावरण भेटलापर अँकुर होइ छै। अँकुर लेल तँ वएह वातावरण अनुकूल भऽ जाइत अछि जइ मूलक ओ बीआ आ बीआक गाछ होइत अछि। जौं से नै तँ एक दिस अगम पानिबला समुद्रमे बीआ अकुरि पनिगाछक जनम दैत अछि तँ दोसर माटि-पानि बीच सेहो दैत अछि। तेतबे किए, दोखरा बालुओ आ चखान भेल पाथरोमे तँ कोनो-ने-कोनो गाछक बीआ तँ अकुरिते अछि। जखनि दुनियाँक सभठाम शक्ति मौजूद अछि तखनि मिथिलाक भूमि किए शक्तिहीन भऽ जाएत। जे बीत भरिक पेटक रच्छा नै कऽ सकैए। जे धरती भिखारीकँ भिक्षु बना सकैए,

भोगीकेँ जोगी बना सकैए ओ जोगीकेँ किए ने भोगी आ भिक्षुकेँ भिखारी बना सकैए। एक नव शक्तिक उदय कामिनीक मनमे भऽ चुकल छेलनि। धानक लाबा जकाँ मन दू फाँक भऽ गेल छेलनि। जहिना खापड़िमे एक-फाँक, दू-फाँक, तीन-फाँक होइत लाबा खापड़िसँ उड़ए चाहैए, उड़बो करैए तहिना कामिनीक विचार उड़लनि। मुदा मुँहक बोल सूखा गेलनि। कंठक तरास बढ़ए लगलनि। मुदा पति-पुत्रक बीच चलैत धारमे अपनाकेँ पाबि कामिनीक हृदए छटपटेलनि। सुशीलक आँखिमे आँखि गाड़ैत बजली-

> ''बाउ सुशील, अहाँक पिता, अपन पतिक तँ अंतिम दिनक क्षण क्षणकि रहल हेता। चलि कऽ आइ दुनू गोटे भेँट कऽ लहुन?''

माएक बात सुनि सुशीलक मन ठमकल। केकरो मनमे फूलक वर्षा होइत अछि तँ केकरो पानि-पाथर बनल ओला बरसैए। मुदा जहिना मरबो दुनू करैए तँ जीबो तँ करिते अछि। भेँट करए चलैले माए कहै छथि मुदा की ई उचित हएत? हम सभ जेबे करब तइसँ की हुनका भेटतनि? आ हमरे सभकेँ किछु भेटत? अस्ताचल गामी सुरूजक लाभ तँ ओकरे भेटै छै जे उदीयमान अछि। जे उदीयमान नै अछि ओकरा लेल तँ जेहने दिन तेहने राति, तखनि अस्ताचलक महत्ते की? हुनका -पिता- किछु ने भेटतनि, भेटतनि वएह जे अपना लेल फाँसीपर चढ़ि रहला अछि आ परिवार लेल। जौं परिवार लेल तँ की अधले काजपर परिवार चलि सकैए आ नीक काजपर नै चलि सकैए। जौं चलि सकैए तँ ओ खुद नीक बाट छोड़ि अधला बाटपर चलि अंतिम दर्शन देखा रहला अछि। अंतिम दर्शन की? यएह ने जे धरतीपर कनैत एलौं हँसैत जाएब आकि जहिना कनैत एलौं तहिना कनैत जाएब, तँ की एहेन जिनगीकेँ सुभर जिनगी मानबै? कथमपि नै? जखने घरसँ डेग उठाएब तखनेसँ लोक कहबो करत आ थूकबो करत जे खूनियाँ-अधरमीक बहु-बेटाकेँ देखियौ? निरलज जकाँ केहेन धमौड़ दैत जा रहल अछि। माएक प्रश्नक उत्तर दैत सुशील बाजल-

> ''माए, कोन मुँह देखए आ देखबए जाएब। सोझ पड़लापर पिता यएह ने कहता जे अहीं सभले जा रहल छी? मुदा अपना सभ कथी पुछबनि?''

सुशीलक विचार कामिनीक मनमे अभिभावक रूपमे जगलनि। जहिना सएओ हाथक लत्ती बिनु सहाराक धरतीसँ नै उठि सकैए तहिना ने नारिओ अछि। डाँड़मे चोट मारि ने विधातो विधिक रचना केलनि। बेटाक सहारा देखि कामिनीक मनमे अगिला जिनगीक आस जगले रहनि। विह्वल भऽ बजली-

''बेटा, बेटा बनि जौं धरतीपर आबी तँ बेटा कहबैत चली। आब तँ तोंही ने सभ किछु भेलह। वैधव्य भेने एक अंकुश मात्र लगत। मुदा आरो जिनगी तँ संग मिलि चलबे करबह किने, तोहर जे विचार हेतह सएह ने हमरो विचार हएत। कहुना भेलह तँ तूँ पुरुष-पात भेलह? हम केतबो हएब तँ घरे भरि हएब।''

माएक बात सुनि सुशीलक मन पसीज गेल। अपन दायित्वक भान भेलै। मुदा लगले मन मुरुछि गेलै। एक दिस धरती सदृश निश्चल माए तँ दोसर दिस कुकर्मी अपराधी, धरतीक पापात्मा पिता देखए लगल। पिताक प्रति मनक उष्मा तेज भऽ गेलै। बाजल-

''माए, परिवारक बड़का बोझ उतरैक दिन...।''

सुशीलक बोल बन्न भऽ गेलै। विस्मित अवस्थामे सुशीलकेँ देखि कामिनी बजली-

''सोग नै करह। जइ दिनक जे भवितव्य छेलै ओ भेलै। जहिना जरल-मरल धरती अदराक बून पाबि सिरिफ जीविते नै सृजक सेहो बनि जाइत अछि। तों तँ सहजे पुरुख छिअ। आन के केकरा कहत आ केकर के सुनत। मुदा जहिना तोहर पिता तहिना तँ हमरो पति छथि। तँए अन्तिम घड़ीमे श्रद्धापूर्वक स्मरण कऽ बिसरि जाह। चलह अँगनेक ओसारपर बैस चाहो बना पीब आ गपो-सप्प करब। दुनियाँ किछु कहअ मुदा तोहर मुँह देखि एहेन खुशी भऽ रहल अछि जे जिनगीमे कहियो नै भेल छल।''

माएक बात सुनि सुशीलक मन ओहिना औगता उठल। बाजल-

“असगरे लोक जनम लइए आ अपने आशा सभकेँ करबाक चाही।”

बेटाक आस भरल बात सुनि कामिनीक हृदए पसीज गेलनि। बजली-

“बौआ, आब तूँ बौआ नै बेटा भेलह। बापक काज कऽ देखि परखि दुनियाँक संग चलैक एक सिपाही भेलह। परिवार-समाज कर्मभूमि भेलह। ने अनका पढ़ने आनकेँ ज्ञान होइत आ ने अनकर ज्ञान अनका लेल सबतरि उचिते होएत। तँए अपन समए, परिस्थितिकेँ अँकैत परिवारकेँ आगू मुहेँ ससारैक तँ भार माथपर आबिए गेल छह। केहेन मनुख बनि धरतीक धारण केलौं, यएह ने जिनगीक परीछा छी।”

माए-बेटाक बीच जिनगी परिवारक गप-सप्पक बीच कामिनीक मन कखनो पतिसँ हटिओ जाइत मुदा लगले पुन: आबि मनकेँ पकड़ि लैत। जखनि मनसँ हटैत तखनि अपनो हाथ-पएर निहारि-निहारि देखथि आ सुशीलोकेँ निहारि-निहारि देखथि। मनमे उठलनि पाँखि तँ टिकुलीओकेँ होइ छै, अकासमे उड़बो करैए मुदा तँए ओ चिड़ै तँ नै कहाइत। चिड़ै लेल तँ पाँखिमे दम चाही। से कहाँ टिकुलीमे होइ छै। कनीओं किछु होइ छै आकि पाँखि टूटि जाइ छै। जइसँ अकासमे उड़बे बन्न भऽ जाइ छै। तहिना तँ अखनि अपनो परिवार भऽ गेल अछि। हम उमरदार छी तँ घरसँ बाहर किछु करबे ने केलौं आ सुशील तँ सहजे कोनो भार बुझबे ने केलक। नै बहराइक कारणो भेल जे अपनाकेँ घरेक सीमामे रखलौं। जे उचितो भेल आ अनुचितो भेल। अर्द्धांगिनी होइक नाते जिनगीक सभ वृत्तिसँ परिचित हेबाक चाहै छल से नै भेल। जौं से भेल रहैत तँ जरूर नीक-अधला वृत्तिक विचार करितौं। मुदा, अपसोचो केने तँ नहियेँ किछु हएत। बजली-

“बेटा, जौं ऐ धरतीपर बेटा बनि आबी तँ किछु कऽ देखाबी। जौं से नै तँ बेटाक महौते की?”

माएक बात सुनि सुशीलक मन नव कलशल टुस्सा जकाँ नव रूपमे पोनगल। माएक आँखिमे आँखि गाड़ि बाजल-

> “माए, दुनियाँमे सभ अपन-अपन भाग-तकदीर लऽ जिनगी बनबैए। जेहेन जेकर जिनगी जीबैक बाट रहै छै तेहेन से भार उठा चलैए।”

सुशीलक बात सुनि कामिनी विह्वल होइत कहलखिन-

> “बेटा, जहिना एक बेटा बनल-बनाएल परिवार-खनदानकेँ नाश कऽ दैत अछि तहिना एक बेटा बनल-बनाएल परिवारकेँ उठा ठाढ़ो कऽ दैत अछि।”

जहिना कल्पवृक्षक निच्चाँ बैसिनिहार बौड़ाइत रहैए तहिना फाँसीपर चढ़ैत बलदेवक परिवारक मन बौड़ा रहल अछि। असमसान जाइकाल मुर्दाक पाछू कठियारीबला कहैत चलैत-

> ‘राम-नाम सत् है, सबको यही गत है।’,

मुदा घुमतीओ काल जखनि कि मुर्दा नै रहैत, वएह कहैत-

> ‘राम नाम सत् है, सबको यही गत है।’

भलहिं मृत्युक आँगन आबि लोह-पाथर, आगि छूबि बिसरि जाइत वा छोड़ि दैत। जैठाम बच्चासँ सियान धरि मंत्र जपैत तैठाम एहेन जिनगीक दशा किएक? जहिना रस्ता चलैत बताह कखनो रस्तासँ हटि तँ कखनो सटि ललकारो भरैत आ कखनो असथिर भऽ बौको बनि जाइत तहिना माए-बेटाक अर्थात् सुशील-कामिनीक मन पिता-पतिक फाँसीक किछु समए पूर्ब पुरबा-पछबा जकाँ रस्सा-कस्सी करैत रहनि।

कामिनी पुन: बजली-

> “बेटा, तीन गोरेक परिवारमे एकक अंत भऽ रहल अछि तैयो तँ दू गोरे बँचलौं। तोहर बिआह होइते फेर तीन गोरे भइए जाएब।”

माएक बात सुनि सुशील बाजल-

"अहिना परिवार कम-बेसी होइत एलैए आ होइत चलतै। तइले केते माथ धूनब। तखनि तँ एकटा बात बुझए पड़त जे आन के केकर परिवारक भार उठबैए, अपन परिवारक भार तँ अपने उठबए पड़त।"

कामिनी कहलखिन-

"हँ, ई तँ बेस बजलह।"

सुशील बाजल-

"दुखे की सुखे परिवारक बोझ तँ परिवारेक लोककेँ उठबए पड़तै।"

सुशीलक बात सुनि कामिनीक मन सहमि गेलनि। बेटा सहजे अनाड़ीए अछि, अपने कहियो भारे ने बुझलौं। तखनि...? बकार बन्न भऽ गेलनि। जहिना भुमकमक समए धरतीक सभ किछु डोलए लगैत तहिना कामिनीक भीतर-बाहर डोलए लगलनि। धारक बोहैत पानिमे जहिना पएर असथिरो कऽ टपैमे थरथड़ाइत तहिना कामिनीकेँ हुअ लगलनि। सुशीलोक मन विचलित होइत मुदा मनकेँ थीर करैत बाजल-

"माए, प्रश्न तँ छुटिए गेल अछि। उत्तर कहाँ देलँह।"

सुशीलक प्रश्न मन पाड़ि कामिनी बजली-

"अर्द्धांगिनी बनि जइ पुरुखक संग पकड़लौं हुनका चीन्हि नै सकलियनि। आइ बुझै छी जे पुरुखक भीतरो पुरुख होइ छै आ नारीक भीतर सेहो नारी होइ छै। जौं से बुझने रहितौं तँ एतेक दूरी नै बनि पबैत। ओना परिवारक भीतर अपन भार निमाहैमे कहियो कोताही नै केलौं मुदा...। आब उपऐ की अछि?"

बजैत-बजैत कामिनी ठमकि गेली। जहिना नदी-नालाक पानिक बेग आगूमे बान्ह पाबि रूकि जाइत तहिना कामिनीकेँ भेलनि। सहत बेधल माछ जकाँ छटपटाए लगली। छटपटाइत मनमे आबए लगलनि, एक दिस तत्ववेत्ता तात्विक चिन्तन-विवेचनमे लगल रहैए तँ दोसर दिस बेकती-बेकतीक बीच सेहो होड़ लगल अछि। सभ सभसँ आगू बढ़ए चाहैए।

जइसँ संगे चलब छूटि जाइत अछि। समाज विखण्डित भऽ जाइत अछि। श्रमिक अश्रमिकक बीच दिसा-दिसान्तरक अंतर बनि जाइत अछि।

दुनू माए-बेटा गुमसुम भेल एक-दोसराक मुँह बड़ीकाल धरि देखैत रहल। गुम्मी तोड़ि सुशील बाजल-

"माए, तोहर की इच्छा छउ?"

बेटाक बात सुनि कामिनीक मन शान्त भऽ गेलनि। पतिक फाँसी मनसँ हटि गेलनि। मन पाड़ि बाजए लगली-

"बेटा, बहुत दुनियाँ देखलौं। नाना-नानी, दादा-दादी, बाप-माए, मामा-मामी, केते कहबह। पाछू उनटि तकै छी तँ सभ किछु देखै छी मुदा आगू तकै छी तँ तोरा छोड़ि किछु ने देखै छी। जहिना नम्हर गाछ खसि रस्ता रोकि दइए तहिना आगू बूझि पड़ैए।"

माएक बात सुनि सुशील बाजल-

"माए, तोहर जे इच्छा छोउ, ओकरा जहाँधरि भऽ सकत पूरबैक कोशिश करब। जे धरती छोड़ि चलि गेल, ओ तँ सहजे चलि गेल। ओकरा संग किछु थोड़बे जेतइ। मुदा जे अछि ओकर तँ आशा अछिए।"

आशा भरल सुशीलक विचारमे आस लगबैत माए बजली-

"दुनियाँक खेल छिऐ जे एक-पर-सए ठाढ़ अछि आ कखनो सए सए दिस छिड़ियाएल रहैए। तँए सभ किछु बिसरि जाह। बितलाहा काल्हि मन राखह आ अगिला काल्हि लेल हाथ-पएर उठाबह।"

नअ बजिते जहलक भीतर ओहने चलमली आबि गेल जेहने नम्हर बर्खा भेलापर वा भुमकम भेलापर होइत अछि। किछु गोटे -सिपाही- नहाइ-खाइले गेला। तँ किछु गोटे दस बजे जहलसँ निकलैक कागत-पत्तर सरियबैमे लगि गेला। ओना अनदिनासँ ऑफिसोक रंग बदलल।

जेना घंटा-घंटा भरि ऑफिसरक अभावमे गेटपर ठाढ़ भऽ प्रतिक्षा करए पड़ैत रहैत तेना नै। ऑफिस समैएपर खुजि गेल। केना नै खुजैत, आइ बलदेवकेँ जहलक सजाए जे समाप्त भऽ रहल अछि। फाँसी तँ जिनगीक छी। सिरिफ दूटा सिपाही बलदेवकेँ सेलसँ निकालि अग्नेयक गाछक निच्चाँमे सब्जीएपर बैस गप-सप्प करए लगल। तहूमे एक गोटे चीलमक भाँजमे लगि गेल आ दोसर बलदेवसँ गप-सप्प करए लगल। मुदा तीनू गोटे माने दुनू सिपाही आ बलदेवक मन तीन दिस बौआइत ढहनाइत। चीलमक भाँज-भूँज केनिहार -पहिल सिपाही- तमाकुलबलापर बिगड़ि गरियबैत जे साला सभ पानि छीटि अधलो पत्ताकेँ तेहेन डगडगी आनि दइए जे लेनिहारकेँ बूझि पड़ैत जे टिपगर अछि। मुदा स्नो-पोडर लगौलहा मुँह तँ ओतबे काल ने चमकैत जेतेकाल ओकरा चमकैक शक्ति छै, मुदा तँए कि सभ मुँह ओहने होइए जे लगले चमकत लगले दबि जाएत, बिलिन भऽ जाएत। तमाकुलक तामस सिपाहीकेँ आगू बढ़ा सरकार दिस लऽ गेल। सरकारपर नजरि पड़िते हँसी लगलै। बड़बड़ाए लगल-

> “अजीब मदारी-नाच सरकारो करैए। एक दिस तमाकुल खेती करैक लाइसेंस, गुटका बनबैक लाइसेंस दइए आ दोसर दिस कैंसर रोगक कारण कहि मनाही करैए। मुदा लगले मन घूमि कऽ अपनापर चलि एलै। तीस बर्खक नोकरीक कमाइ अही-गाँजा-भाँगमे चलि गेल। जखनि रिटायर करब, आ अदहा दरमाहा भेटत तखनि की करब। एक तँ देहमे किछु ने रहल जे दोसरो काज करब, खेनाइ-पिनाइक अभाव सेहो हेबे करत। तैपर बुढ़ाड़ीओ तँ बिमारीक जड़िए छी, कहियो दाँत टुटत तँ कहियो आँखिक इजोत कमत। कहियो कानक बहिर हएब तँ कहियो बातरस ठेहुनमे पकड़त। मुदा अपना विषयमे अपने सोचलौं कहिया जे बूझब। सिपाही दोसर जे बलदेवक आगूमे बैसल रहए, ओकर मन भिन्ने बौआइत। जहिना शराबीकेँ शराबक बोतल आगूमे अबिते शराबक खुमारि आबि-आबि नाचए लगैत तहिना ने मृत्यु वा फाँसीसँ पूर्वक क्षण होइत। फाँसीसँ पूर्ब धरि ने बलदेव अपराधी छी आ हम ओकर पहरूदार सिपाही? मुदा किछु काल पछाति अर्थात् बारह बजे पछाति के केतए रहब

तेकर कोन ठेकान अछि। से नै तँ अखनि ने हम सिपाही आ ने बलदेव अपराधी। की केने बलदेव एत्ते पैघ अपराधी भेल आ हम ओकर सिपाही छी। बलदेवक मन बीरान होइत ऐ दुनियाँकेँ देखैत जे जहिना फलसँ लुबधल आमक गाछ बिहाड़िक झोंकमे खसि पानि फेरि दैत तहिना ने अपनो आ परिवारोकेँ भऽ रहल अछि। मुदा आब तँ ने सोचै-विचारैक समए रहल आ ने ओकरा पुरबैक।''

तीनू गोटे अपने-आपमे मस्त। मुदा जहिना तीर्थस्थानमे अनठिया यात्री एक-दोसर लग बैस अबैक कारणो पुछैत आ रस्ताक भीड़-कुभीड़ सेहो पुछैत तहिना दोसर सिपाही चुप्पी तोड़ैत बलदेवकेँ पुछलक-

''भाय, आइ तँ फाँसीएपर चढ़ि जिनगीक अन्त करबह। मुदा एकटा बात कहअ जे केना-केना करैत एहेन सजाएक भागी भेलह?''

सिपाहीक प्रश्न सुनि बलदेव मर्माहत भऽ जिनगीक समुद्रमे डूमि गेल। जहिना पोखरिमे पानिक ऊपरक आवाज तँ पानिक भीतरोमे पहुँचैत मुदा पानिक भीतरक आवाज ऊपर नै अबैत तहिना बलदेवकेँ भेलै। बकार बन्न रहै मुदा कलपैत मन किछु बजैत जरूर रहै। जिनगीक समुद्रमे डुमैत बलदेवकेँ, जहिना छठियारीक दूध बच्चाकेँ मन पड़ि जाइ छै तहिना जिनगीक ओइ धरतीपर पहुँच गेल जेतए अवोधे नै छेहा अवोध रहैए। मन पड़लै ओ दिन जइ दिन दोसर बच्चाक खेलौना छीनि नुका धेलौं आ माएओ झूठ बाजि लाथ कऽ लेलकै। मन पड़िते भोरका सुरूज जकाँ, लालीसँ दप-दपी चेहरामे आबए लगलै। मुसिकियाइत बलदेव बाजल-

''सिपाही भाय, बच्चाक ओ दिन मनसँ निकलैले छटपटाइए तँए पहिने वएह कहै छी।''

बलदेवक बात सुनि सिपाहीक मन सेहो अपन बालपन आ परिवारक बच्चापर पड़लै। सड़क नपैत दूरबीन जकाँ केतौ-सँ-केतौ दुनू गोटे नापए लगल। सगतरि बच्चे-बच्चा देखि पड़ैत। आगूओ बच्चा पाछूओ बच्चा

तैबीच अपनो दुनू बच्चा। बच्चाक वनमे दुनू गोटे हरा गेल। हराइते दुनू गोटे सहटि कऽ आरो लग आबि गपकेँ आगू बढ़ौलक।

जहिना दुखक निवारण बोल आ नोर दुनूसँ होइत तहिना बलदेव अपन दुखनामा बजैत बाजल-

''भैयारी, बच्चामे हम दोसर बच्चाक खेलौना छीनि कऽ चोरा रखलौं। कनैत ओ बच्चा आँगन जा माएकेँ कहलक। बच्चाक संगे माए आबि पुछलक। नठि गेलौं। मुदा रखैले माएकेँ दऽ देने रहिऐ। माएओ नठि गेल। तेसर दिन वएह खेलौना लेने ओकरे आँगन खेलाइले गेलौं। दुनू माए-बेटा चिन्ह गेल। कहलक तँ किछु नै मुदा चोरबा नाओं रखि देलक।''

बलदेवक बात सुनि ठहाका मारि सिपाही अपन संगी, दोसर सिपाही दिस इशारा करैत बाजल-

''भैयारी, संगी तँ गाँजा पीब मस्त छथि। बँचलौं दुइए गोटे, जेकरा सबहक राज-पाट छिऐ से सभ अपन सम्हारह। तइसँ हमरा की। अच्छा तेकर पछाति की भेल?''

सिपाहीक बात सुनि बलदेव गुम्म भऽ गेल। कनीकाल गुम रहि बाजल-

''ओइ दिनक नीक आइ अधला बूझि पड़ैए।''

बलदेवक उत्तर सुनि चौंकैत सिपाही बाजल-

''से केना, से केना भैयारी?''

विस्मित होइत बलदेव बाजल-

''भैयारी, बात ओतबेपर नै अँटकल। आगू बढ़ि गेल।''

''की आगू बढ़ि गेल?''

''पानि भरैले माएओ इनारपर गेल आ ओहो दुनू माइपूत आएल। आरो गोटे सभ रहए। तैबीच ओ माएकेँ कहलक, अहींक बेटा हमरा बेटाक खेलौना चोरा लेलक। एतबे बजैत मातर, अँएले-

वँएले, पछियामे पजड़ल पसाही जकाँ लगि गेलै। दुनूक बीच कहा-कही शुरू भेल। कहा-कहीसँ गारा-गारी हुअ लगल। जहिना सात पुरुखाकेँ हमर माए उकटए लगलै तहिना ओहो उकटए लगल। तैबीच एक्के-दुइए आनो-आन कहा-कहीमे शामील हुअ लगल। हल्ला सुनि लोको सभ आबए लगलै। जे अबै से कोनो दिस सन्हिया जाए। दू पाटीमे बँटि खूब गारि-गरौबलि चलए लगलै।''

बलदेवक बात समाप्तो नै केने छल आकि बिच्चेमे दोसर सिपाही टोनि देलक-

''ई तँ नाहँकमे एत्ते बात बढ़ल?''

''से की ओतबेपर अँटकल। आरो बेसीआ गेल। दुनू दिसक गबाही कमलेसरीए माता हुअ लगलखिन। कारण जे सभ तँ कानो ने कोनो दिसक पाटी बनि झगड़ा, गारि-गरौबलिमे शामील रहए।''

जहिना फुलाएल पानकेँ मुँह बन्न कऽ आनन्द लेल जाइत अछि तहिना आनन्द लैत सिपाही पुछलकै-

''स्त्रीगणेक बीच झगड़ा भऽ कऽ रहि गेल। आकि आगू बढ़ल?''

सिपाहीक प्रश्न सुनि बलदेव बाजल-

''मरद स्त्रीगणमे कोनो भेद अछि। ने मरद मरद जकाँ रहैए आ ने स्त्रीगण स्त्रीगण जकाँ। मरदो मौगयाही चालि पकड़ि मौगी बनि गेल अछि आ मौगीओ मरदनमा चलि पकड़ि मरद बनि गेल अछि। स्त्रीगणक गारि-गरौबलि पुरुखक मुँहमे चलि आएल। जहिना एक चम्मच दही तौला भरि दूधकेँ दही बना दइए, जइसँ एक तौलाकेँ के कहए जे केतेको तौला दूध दही बनि जाइए तहिना स्त्रीगणक मुँहक गारि पुरुखमे चलि आएल।''

बिच्चेमे सिपाही बाजल-

“होत-सँ-होतान भऽ गेल।”

बलदेव आगू बाजल-

“अँए! एतबे भेल, स्त्रीगण ने भोरसँ साँझ धरि गारिएक माला जपि सकैए मुदा पुरुखमे तँ से नै होइए। एकसँ दू गारि मुहसँ निकालिते हाथ उठए लगै छै। जखने हाथ उठल आकि दोसरपर खसल। सएह भेल।”

रस चुसैत सिपाही पुछलक-

“तखनि तँ मारि भऽ गेल हएत?”

सिपाहीक जिज्ञासु प्रश्न बलदेवकेँ उत्साहित करए लगल। उत्साहित होइत बलदेव बाजल-

“मारिए भेल की गधकिच्चनि मारि भेल। मुदा दुनू दिस एक रंग नै भेल। हमर दियादी नम्हर, तहूमे तेहेन छड़े-छाँट समांग सभ अछि जे देखबोमे राक्षसे जकाँ लगबो करैए। ओकर दियादी छोट माने कम संख्याक अछि तँए वएह सभ बेसी मारि खेलक।”

सामंजस करैत सिपाही बाजल-

“एतए तँ दुइए गोरे छी, तेसर हमर संगी -पहिल सिपाही- अछि, ओ तँ भकुआएले अछि। निच्चाँ धरती ऊपर अकास अछि। तँए दुइए गोरेक बीच पनचैती करू जे नीक भेल कि अधला?”

सिपाहीक बात सुनि बलदेव आगू बढ़ैत बाजल-

“पनचैती पछाति करब। अखने अगुता गेलौं भैयारी! अखनि तँ पेनिओ नै छनाएल अछि।”

बलदेवक बात सुनि सिपाही घड़ी देखलक। साढ़े नओए बाजल। एक तँ ओहिना प्रतीक्षाक समए गड़ूगर होइ छै तैपर जहलक बीचक प्रतिक्षा! समए पाबि सिपाही बाजल-

“आरो बात अछि भैयारी?”

आरो सुनि जहिना आदि-इत्यादि नेनमुँह बच्चाकेँ हरा दैत अछि तहिना बलदेव हरा गेल। बाजल-

> “आरो की कनीए अछि जे धक दऽ नजरि चलि जाएत। मारे-अमार लगल अछि। तैबीचमे सँ बीछए पड़त किने। नै तँ ओही नेनमुँह बच्चा जकाँ जिनगी भरि आदि-इत्यादि करैत रहब, मुदा ओकरा बीछि नै पएब।”

बलदेवक थीर विचार सुनि सिपाही अपनाकेँ थीर करैत बाजल-

> “अच्छा होउ। अखनि दू घंटासँ बेसीए समए अछि।”

दू घंटासँ बेसी समए सुनि बलदेव बाजल-

> “दू घंटामे तँ विद्यार्थी परीक्षा पास कऽ लइए। तइसँ बेसी समए लगने बोर्ड-युनिवरसिटीसँ डिग्री लऽ अबैए। अखनि बहुत समए अछि।”

समए पाबि सपाही जेबीसँ सलाइ-सिगरेट निकालि एकटा अपनो आँगुरसँ दबलक आ दोसर बलदेवोकेँ देलक। सलाइ खरड़ि सिगरेट सुनगा दुनू पीबए लगल। दुनू मुँहक घुआँ मुहसँ निकलिते तेना मिलैत जाए जे फुटा कऽ देखब असंभव भऽ गेल। मुँहक सिगरेट सठिते बलदेव बाजल-

> “भैयारी, किछु घंटाक मेहमान छी, अहाँ केतए रहब हम केतए रहब तेकर कोन ठेकान। मुदा मनमे जे अछि ओ केकरा कहि सकबै। तँए जाबे एकठीम छी ताबे सुनू। जेतए धरि भऽ सकत ओते तँ मन हल्लुक रहत।”

बलदेवक बात सुनि सिपाही बाजल-

> “जखनि सुनै लगलौं तँ सुनाउ, जेते सुनाएब सभ सुनि लेब। तहूमे बाल-बोधक गप छी, हम सभ नै सुनब तँ के सुनतै। आखिर गारजनो तँ छियन्हिहेँ।”

मुस्कीआइत बलदेव बाजए लगल-

“ठीकसँ मन नइए। मुदा वएह सात-आठ बर्खक रही।”

बिच्चेमे सिपाही टोकलक-

“ने सात ने आठ, साढ़े सात भेल। तइले एत्ते ततमताइ किए छी।”

बलदेव आगू बाजए लगल-

“एते नीक नहाँति मन अछि जे अनका बाड़ीसँ नेबो, दाड़ीम, लताम चोरा-चोरा खूब आनी। पड़ोसीएक नेबो बाड़ी हमरा भाँगक चहटि लगौलक।”

जिज्ञासा करैत सिपाही-

“से केना, से केना?”

“बाड़ी-झाड़ी लगबैमे एकटा पड़ोसीआ बड़ माहिर। भरि दिन ओही पाछू बेहाल। मुदा गुणो रहनि, ने केकरो बाड़ी-झाड़ी जाइसँ रोकथिन आ ने सोझहामे छुच्छे हाथे केकरो घुमऽ देथिन। हुनके बाड़ीसँ सभ दिन दूटा नेबो तोड़ि ली, आ चौकपर बेचि, भाँगो आ पानो खा ली। गुजर करै जोकर खेत-पथार तँ नहियेँ रहए मुदा तैयो सात-आठ मास खेतक उबजासँ गुजर चलि जाए। कट्ठा दसे-बारहेक करीब बँटाइओ खेत बाबू करैत रहथि। तइ सभ मिला साल-माल लगि जाइ छल। ओना साँझू पहर कऽ जे अन्ट-सन्ट काजो करी आ बजबो करी तइसँ बाबू बूझि गेल रहथि जे छौड़ा बहबारि भेल जाइए। संगति खराब भऽ गेल छै।”

सिपाही-

“बाबू किछु कहथि नै?”

बलदेव-

“कहितथि की माइयक ने दुलारू बेटा रही। जौं कहियो किछु बजौ चाहथि तँ तेना कऽ माए झपटि लन्हि जे मुहेँ बन्न भऽ

जानि। ओना भैयारीमे असगरे रही तहूसँ कहियो तेना भऽ नै कहए चाहथि।''

सिपाही-

''तब की भेल?''

बलदेव-

''एक दिन कनी पहिने पिसुआ भाँगक गोली खा लेलौं तैपरसँ पान सौ नम्मर जरदा देल पान कनी पुष्टसँ चढ़ा देलिऐ। घरपर अबैत-अबैत खूब निशाँ लगि गेल। बाबू दरबज्जेपर रहथि। कहलनि जे एकटा बात पुछियौ, कहलियनि जे एकटा किए एक हजार पूछू। हमहूँ हाथीएपर सवार रही।''

हाथीपर सवार सुनि सिपाहीकेँ हँसी लगि गेल। हँसीकेँ सम्हारि बाजल-

''आ जे हाथीपर सँ खसि पड़ितौं तखनि की होइतए?''

मुस्कीआइत बलदेव बाजल-

''हद करै छी भैयारी। से जौं बुझैत रहितीऐ तँ अहिना करितौं। यएह ने नै बुझलिऐ जे केना लोक उट्ठी-बैसी खेल खेलाइए। केना खसलाहा अपनाकेँ चढ़ल बुझैए।''

सिपाही- ''बाबू की पुछलनि?''

''पुछलनि जे अन्न-पानि तँ जेना-तेना बँटाइओ-खोटाइ कऽ साल-माल लगिए जाइए मुदा दूध-दहीक नसीब नै होइए। दूध-दहीक नाओं सुनि अपनो मन चमकल। कहलियनि से की कहै छहक। कहलनि, एकटा महिंस पोसियाँ लऽ लइतौं। आब तोहूँ चरबै-बझबै जोकर भइए गेलह।''

बिच्चेमे सिपाही टोनलक-

''बड़ सुन्नर बात कहलनि।''

बलदेव-

''हँ-हँ। से तँ अपनो नीक लागल। मनमे उठल जे जहिना खेतक उबजाक अगो, तीमन-तरकारीक पहिल फड़क हकदार आने होइत तहिना गाए-महिंसबला परिवारमे डारहीक हकदार तँ धिए-पुते ने होएत। एक तँ डारहीसँ छालही धरि, दोसर दूधसँ दही धरिक ओरियान हएत। तैपर सवारी बना महिंसपर चढ़ि सौंसे गामो घूमब। बिनु किछु केनौं काजक मोजर सेहो हेबे करत। आ कनी-मनी संगतिओ मुहेँ सुनि ईहो बुझैत रहिऐ जे गजेरी-भँगेरीक पथ्य दूधे-दही छी। जौं से नै खाएत तँ उनटे गाँजा-भाँग खा जेतइ। जानिए कऽ तँ भाँग खाइते छी। अहीमे रमल रहै छी। जे काजुल अछि ओ ने काजमे रमैए तहिना जे चिन्तक अछि ओ चिन्तनमे। मुदा हम तँ तइ सभमे नै छी। जिनगी जौं रमता जोगी बहता पानी नै बनल तँ जिनगी सराठीए ने भऽ जाइए।''

चौंकैत सिपाही बाजल-

''सराठी जिनगी केकरा कहै छिऐ?''

सिपाहीक बात सुनि बलदेवकेँ हँसी लागल। जहिना एको दाना नून आकि चिन्नी अपन सुआद जना दइए। तहिना बलदेवकेँ अपन ज्ञानक सुआद लगलै। मुस्की दैत बाजल-

''जहिना धारक पानि ताधरि चलता रहैए जाधरि संगे-संग चलैत रहैए। मुदा जखने कोनो खत्ता-खुत्तीमे फँसि जाइए आ बहाउ रूकि जाइ छै तखनि माटिक संग सड़ए लगैए। सड़ैत-सड़ैत एत्ते सड़ि जाइए जे नहाइ-पीबैक कोन गप जे अपन सड़निसँ ओहन-ओहन बेमरियाह किड़ी सभकेँ जनमबए लगैए जे हाथिओ सन-सन जानवर ओइमे फँसि जान गमबैए। महिंस चरबै जोकर भइए गेल रही। किएक तँ देखिऐ जे हमरोसँ छोट-छोट छौड़ा सभ चरबैए। कहलियनि नीक काजमे एक्को दिन देरी नै करबाक चाही बाबू। जे देरी करैए वएह पछताइए। बाबूओकेँ गप नीक लगलनि। एकटा पोसियाँ महिंस लऽ अनलनि।''

महिंसक नाओं सुनि सिपाही बाह-बाही भरैत बाजल-

“जखने कमाइ-खटाइ लोक करए लगैए तखनेसँ अपन धरतीक भार उतारए लगैए।”

सिपाहीक बात बलदेवकँ नीक लगलै। जहिना एके अन्न पेट भरैक संग-संग मनमे आनन्दो दइ छै तहिना बलदेवोक मनमे भेलै। गदगदाइत बाजल-

“असलाहा बात तँ कहबे ने केलौं।” कहि चुप भऽ किछु मन पाड़ए लगल।

जहिना खिस्सकरक संग हूँहकारी भरने ओकर उत्साह उठैत रहै छै तहिना बलदेवो उत्साहित भेल। राज-काजसँ हूसल रागी-भोगी जकाँ दोहरबैत बलदेव बाजल-

“ओह, सुखक दिन चलि गेल। आब थोड़े देखब आकि भोगब। ओ हो हो।”

दुनूक मनसँ बारह बजेक फाँसी हराएल। एक फाँसी ओहनो होइत जइमे संकल्प रूपी कल्याणी माएक कोरामे बैस हँसैत-चढ़ैत दोसर एहनो होइत जे खण्ड-खण्ड टुटल-छिड़ियाएल मन शरीरकँ छौड़ैत। हूँहकारी भरैत सिपाही बाजल-

“से की। से की?”

चानि ठोकैत बलदेव बाजल-

“महिंससँ दूध-दही हेबे करए। पाँच गोटे एहेन छड़े-छाँट महिंसवार रही जे महिंस चरा साँझू पहर घुमती काल लोकक खेतक जजातो चरा लिऐ आ धानक महिनामे धानो नोचि लिऐ आ नारो बान्हि महिंसपर लादि लऽ आनिऐ। तेते अन्न घरमे ढेरिया जाए जे खाइक दुखे हरा गेल रहए।”

सिपाही-

“सभ दिन महिंसे चरबैत रहलिऐ?”

आँखि-भौं चमकबैत बलदेव बाजल-

“हद करै छी अहूँ भैयारी। बुधि-बलक संग जिनगीओ ने घटै-बढ़ै छै। ठीकसँ तँ नै मन अछि। मुदा एते मन अछि जे दुरागमन भऽ गेल रहए। बाबूओ मरि गेल रहथि। जहिना खेत-पथार बेचि लोक नोकरी करए जाइए तहिना महिंस बेचि लेलौं। मुदा पाँचो महिंसवारक सम्बन्ध आरो बढ़ि गेल। खेनाइ-पिनाइ कथा-कुटुमैतीक संग पनचैती सभ करए लगलौं। गामेमे बहरबैया मालिकक जमीनो आ कचहरीओ रहए। कचहरीक बराहिलसँ दोस्ती सेहो भऽ गेल। संजोगो नीक रहल, बराहिलगिरीक नोकरी भऽ गेल। सए बीघा जमीनक मालिक भऽ गेलौं।”

मालिकक नाओं सुनि सिपाही बाजल-

“तखनि तँ मानो-दान हुअ लगल हएत?”

मानदान सुनि कठ-मुस्की दैत बलदेव अपशोच करैत बाजल-

“सोझहामे जहिना मान-दान बढ़ल परोछमे तहिना गारिओ बढ़ि गेल।”

“से किए?” सिपाही पूछि देलकै।

किछु मन पाड़ैत बलदेव बालज-

“करबो तहिना करिऐ। जेना गमैया नेता सभकेँ देखबै जे ऊपरका नेताक आगूमे जे किछु बाजत आ करत, लोकक बीच उनटि कऽ मुहोँ आ चालिओ बदलि लेत। तहिना करए लगलौं। मालिकक -जमीनदार- आदमीक बीच किछु आ लोकक बीच किछु करए लगलौं।”

उनटैत-पुनटैत पाशा देखि सिपाही बाजल-

“से की?”

बलदेव-

“गामक लोककेँ कोनो मोजर दिऐ। अनेरे केकरो गरिया देलौं, बलजोरी कोनो चीज लऽ लेलौं। तहिना स्त्रीगणो सभकेँ, केकरो किछु कहि दिऐ, केकरो किछु।”

“कियो जवाब नै दिअए?”

“जवाब की दइत, जहिना पर्डू खुट्टा देखि चुकड़ै छै तहिना ने रहए। एक दिस मालिकक धाक दोसर अपन बलउमकी।”

बिच्चेमे सिपाही बाजल-

“की अपन उल-उमकी?”

“जहिना शरीरेक मुख्य अंग आँखिओ छी आ कानो छी। मुदा दुनूमे केते अन्तर छै से देखै छिऐ। कान वेचारा एहेन सज्जन अछि जे नीकसँ नीक आ अधलासँ अधला सुनि किछु नै करैत, मुदा आँखि केहेन लुच्चा अछि जे देखिते छिऐ, कखनो ललिया कऽ अगिया जाइत तँ कखनो कनखिया जाइत तँ कखनो गैंचिया जाइए। तहिना अपनो अलेल खेने-पीने सदिकाल रमकी चढ़ले रहै छेलए।”

सिपाहीक मनमे तरंग उठलै। तरंगि कऽ बाजल-

“गामक पढ़ल-लिखल लोक ऐ बातकेँ नै बुझै?”

सिपाहीक प्रश्न सुनि बलदेव गुलाबी हँसी हँसि बाजल-

“जहिना कृष्ण एक दिस भदवरिया बूझल जाइ छथि तँ दोसर परब्रह्म सेहो छथि। मुदा छथिन तँ सभ लेल। तँए जे जेहेन तेकरा लेल तेहेन। तहिना वीणावादिनी सेहो ने छथि। जेहेन कर्म तेहेन वोध। तही बीचमे ने समाजक पढ़लो-लिखल लोक छथि। जखनि जेहेन तखनि तेहेन।”

“से केना?”

सिपाहीक प्रश्न सुनि अपनाकेँ सम्हारि बलदेव बाजल-

''जहिना काजोमे लोक एहेन रमान रमि जाइए जे खेनाइ-पिनाइसँ लऽ कऽ अपन जिनगीक किरिया-कलापक संग घरो-परिवार बिसरि जाइए तहिना दोसर दिस बेरागी सेहो ने ब्रह्ममे लीन भऽ सभ किछु बिसरि जाइए। रमता जोगी तँ दुनू बनि जाइए। मुदा की दुनू एक्के भेल?''

बलदेवक बात सिपाही नै बूझि सकल। बाजल-

''कनी फरिया कऽ कहियौ।''

जहिना कारखानाक बनल कपड़ाक थानसँ दरजी काटि-काटि रंग-रंगक वस्त्र बनबैत तहिना बलदेव बनबैत बाजल-

''देखियौ, सप्ताह मास आ सालेक लिअ। आइ तारीख एक महिना एक छी। ई दू सालक बीचक सीमानपर अछि। एकक अंत दोसराक आरम्भ छी। बाँकी जेते अछि से सभ कचिया अछि। जेना मासक भीतर बाइस दिनकेँ की कहबै? तहिना सप्ताहक भीतर पाँच दिनकेँ कथी कथी कहबै?''

बलदेवक बात सुनि सामंजस करैत सिपाही बाजल-

''खैर, छोड़ू दुनियाँदारीकेँ। ठनका ठनकै छै तँ कियो अपना माथपर हाथ दइए।''

सिपाहीक बात अन्तो नै भेल छल आकि बिच्चेमे बलदेव बाजल-

''भैयारी, आइ बूझि पड़ैए जे गलती नै भेल गलतीक बाटे पकड़ा गेल।''

चौंक कऽ सिपाही बाजल-

''से की! से की?''

उदास होइत बलदेव बाजए लगल-

''भैयारी, कहैले तँ जेते मुँह तेते बाट अछि। जौं से नै रहैत तँ हृदैसँ निकलि दोसर हृदैमे सटैत केना अछि। मुदा ओते कहैक अखनि समए नइए। तँए एतबे कहब जे मनुखक बीच दू रस्ता

बनल अछि। एक रस्ताकेँ लोक मनुखक रस्ता बूझि केकरो कियो चलैसँ रोकैत नै अछि आ दोसर अछि जे अपना छोड़ि दोसरकेँ मनुख बुझिते ने अछि। रस्तासँ हटि जहिना जंगल-झाड़मे चलैत-चलैत डगर बनि जाइ छै, तहिना डगर धड़ा देने अछि।''

जहिना लोहाक कोनो औजार जखनि भोथ हुअ लगैत तखनि कारीगर ओकरा आगिमे धीपा, पीटि पानिमे पनिया दैत, जेकरा पानि चढ़ब कहल जाइ छै। तहिना तँ पाथरपर पानि दऽ दऽ रगड़ि-रगड़ि सान सेहो चढ़बैए, तहिना सिपाहीकेँ कारीगर सिगरेट पीबाक इच्छा जगौलकनि। जेबीसँ सिगरेट निकालि एकटा अपनो संगी -जे गाँजा पीब मस्त भऽ सुनै छल- केँ आ एकटा बलदेवो हाथमे दैत सलाइ खरड़लक। एक दम पीब पहिल सिपाही धुँआ फेकैत बाजल-

''अनेरे अहाँ दुनू गोरे मगजमारी करै छी। एते छिलनि करैक कोन बेगरता अछि। देखबै जे भोजमे दर्जनो समान रहने खेनिहार एक-दूटापर चोट करैए। परसनिहारक काज छिऐ पूछि-पूछि देनाइ। खेनिहारक मन छिऐ जे खाएब कि नै। आइ जइ गतिक फल पाबए चलब से केना भेल?''

सिपाहीक प्रश्नसँ बलदेवकेँ दुख नै भेल। संगीक एहसास भेल। जहिना जुआन-जहानकेँ सासुरक रंगोली कथा संगीकेँ सुनबैत आनन्द अबैत तहिना बलदेवकेँ भेल। दुखो तँ दोसरकेँ कहने कमैए। जौं से नै तँ नोरक संग कियो किए अपन पति-वियोगक खेरहा सुनबैए। बात मन पाड़ैक समए बनबैत बलदेव बाजल-

''भाय साहैब, औझुका खुशी सन जिनगीमे कहियो खुशी नै भेल छल।''

सिपाही-

''से की?''

बलदेव-

"अपन बेथा-कथाकेँ जौं एकोटा सुनिनिहार भेट जाए तँ ओइसँ नीक की हएत। तहिना हृदैक वेदना जौं अहाँ सुनए चाहलौं तँ जिनगीक अंतिम दिनक अंतिम पहरमे सीढ़ीक अन्तिम पौदानक बात कहए चाहै छी।"

बलदेवक विचार सुनैक खुशीमे सिपाही विह्वल भऽ बाजल-

"जहिना भतभोजक अंतिम विन्यास चीनी होइत तहिना जौं अहाँक मधुर वाणी वाणीक -अपन वाणी- संग मिलत तखने ने मिश्री बनि पाथर सदृश सक्कत हएत। यएह ने जिनगीक ओर-छोर छी।"

सिपाहीक बात सुनि दोसर सिपाही बाजल-

"भैया, अहाँ भकुआएल मोने भकुआ लगा देलिऐ आ भकुआ गेलौं। कनी चिक्कन जकाँ कहियौ।"

सिपाहीक बात सुनि पहिल सिपाही बाजल-

"सभ दिन तँ दस किलोक बन्दूक कन्हामे लटकौने रहै छह, तखनि फुलसन विचार पाथर सन भारी कोन कान्हमे लटकेबह। वहिना तँ कान्ह बदलि दुनू कान्ह भकभकाइत रहै छह तखनि माटि तँ माटिए छी।"

दोसर सिपाही-

"कनी फरिछा कऽ कहियौ।"

पहिल सिपाही बाजल-

"देखहक जहिना ई दुनियाँ माटिक बनल अछि तहिना ने ई देहो माटिएक छी। तँए देह बुझैले माटि बुझए पड़तह। रंग-रंगक माटिसँ ई दुनियाँ बनल अछि। एकर गिनती करब साधारण नै। जहिना देखबहक जे साते रंग तेते रंग बनि गेल अछि जे डोराक दोकान, जे साएओ रंगक डोरा बेचैए तेकरो दोकानपर सँ दर्जी घूमि जाइए जे ऐ रंगक डोरा नइए। तहिना माटिओ अछि।

> एक माटि थाल बनबैए तँ दोसर चिक्कन। तेतबे नै, एक पाथर सन सक्कत पत्थर बनबैए तँ दोसर पानि सनक वस्तुकेँ पैदा करैबला लेयर -जल मिश्रित माटि-। अच्छा छोड़ह अपना सभ गप। वेचारा बलदेवक अंतिम समए गुजरि रहल अछि तँए पहिने ओहिना सूनब होएत जहिना सूर्यास्तक समए कोनो दूर जाइत बटोही अनभुआर जगहपर आबि अँटकैक ओरियान करए चाहैत। पहिने अहाँ अपन बात विसर्जन करू बलदेव भाय तखनि जे हेतै से हेतै। जे जीबए से खेलए फागु, जे मरए से लेखे जागु।''

अंतिम तीर निकलैत जहिना हजारो वाणसँ वेधल तीराएलक हृदए सुखसागरक घाटपर पहुँच हियबैत जे सभसँ सुन्नर जल कोनठाम छै, जैठाम स्नान करब। जाधरि पवित्र पानिसँ पथ नै पखारब ताधरि पएर पिछड़िते रहत। जाधरि पएर पिछड़ैत रहत ताधरि सोझ भऽ चलि नै सकै छी। जाधरि सोझ भऽ ठाढ़ नै भऽ पएब ताधरि कमलासन देखि नै पएब। जाधरि कमलासन देखि नै पएब ताधरि रंग बदलैत कमल कुमुदनीक संग भौराकेँ पराग-जालमे ओझरा लाल-उज्जर आँचरा समेटि राति भरिक जीवन-रक्षण ओइ मातृ सदृश करैत जइ सदृश छातीमे सटा मैया यशोदा अपन लाड़लाकेँ जिनगीक कथा-बेथा सुना-सुना सुनबैत। तहिना अंतिम तीरसँ तीराएल वा वाणसँ वेधाएल बलदेवक संकल्प-शक्ति जागल। शर्त लगबैत बलदेव बाजल-

> ''भैयारी, दुनियाँमे हित-अपेछित, दोस-महिम आदि अनेको तरहक होइत अछि, मुदा से नै जिनगी तँ ओकरे जिनगी ने सार्थक होएत जे संकल्पित हुअए। भलहिं छोट-सँ-छोट संकल्प किए ने होइ। मनुखक पहिल वाण तँ संकल्पे वाण ने होइत! जौं से नै तँ जिनगी की। आइ हमरा ओहनो विचार वोध भऽ रहल अछि जे सपनोमे नै सपनाएल छेलौं। ओना सपनो तँ सपने छी। कोनो हवाइ जहाजक सैर करबैत, तँ कोनो मलेरिया मच्छड़क मेलामे सैर करैत।''

जहिना कोनो वस्तुक जिज्ञासा एते बढ़ि जाइत जे सभ किछु बिसरि ओकरा पकड़ैले बाबल बनि जाइत तहिना सिपाही बाजल-

''समैपर धियान रखए पड़त। कालक गति केकरो बुते ने रोकाइ छै। तँए अपनाकेँ ओइमे समावेश करू।''

जहिना भोजक वारीक चंगेरामे खाजा रखि एकटा हाथमे नेने पंचक आगूमे आग्रह करैत, तेहने तगेदा बूझि बलदेव बाजल-

''भैयारी, अहाँ तँ भाइक संग, जे माएक संग अबैत ओ यार छी तँए संकल्प बूझू जे झूठ नै कहै छी। ई बात आइ बुझै छी अनकर मेहनतिकेँ तागतिक बलपर लूटैत-चोरबैत एलौं। जेकर चोरोलिऐ ओहो हमरे सन मनुख दूटा हाथ-पएरबला ने छै। हम किए छुलिऐ। हमरा ओही दिन फाँसीपर समाज चढ़ा सकै छल आ अपन निअममे सुधार कऽ सकै छल। मुदा से नै भेल। हम गल्ती कहाँ केतौ केलौं गल्तीक बाटक जे कर्तव्य छै वएह ने केलौं। हम तँ तखनि बुझितिऐ जे जखनि अपने टा एहेन रहितौं। से तँ नै आगू-पाछू दुनू दिस भरल देखलिऐ!''

सिपाही-

''भैयारी, एहेन सजाए किए भेल, से कहाँ कहलिऐ?''

एक टकसँ दुनू सिपाहीपर नजरि राखि बलदेव टकटकी लगा देखए लगल। जहिना हजारो मील हटि कोनो विचार जनम लऽ सटि जाइत तहिना सिपाही अपराधीक दूरी मेटा गेल। ने सिपाही किछु बजैत आ ने बलदेव। मुदा ड्यूटीक तीर सिपाहीकेँ लगल। घड़ी देखि बाजल-

''भैयारी, आब सुनैक समए नै पाबि रहल छी।''

समैक अभाव देखि बलदेव ओहन कथाकार जकाँ जे जिनगीक बेथाकेँ कथा कहैत। घटना-विशेष तँ ओहनो होइत जइसँ गढ़गर घटना सुनिनिहार भोगने रहैत। मुदा तँए की हुनकर विचारकेँ विचार नै मानबनि। तँए समाजक वस्तु साहित्य छी। विचार-सुझाव लेल पाठक-श्रोताक दरबज्जा सदति खुजल रहैक चाही। समाधानक अनेको उपए अछि।

तँए जाधरि साहित्य समाजक सचित्र नै बनि, बेकती-चित्र (वक्रचित्र) बनैत रहत ताधरि दुनूक बीच विषमत नै रहए ओहो अनुचित।

जिनगीक अंतिम मोहक बात अंतिम मोड़पर आबि बलदेव बाजल-

> "भैयारी, सरकार विरोधमे हवा उठल। हमहूँ बराहिलगिरी छोड़ि नेता बनि गेलौं। हमरा सबहक जीत भेल। अपनेमे टूटान शुरू भेल सभमे, किसान, वेपारी, वुद्धिजीवी, अपराधीमे टूटान भेल। इलाकामे जाल पसरल छल। बुझबे ने केलिऐ जे नेताक टूटानसँ हमहूँ टूटि गेलौं। ऊपरे-ऊपर अपेछा रहल, भीतरे-भीतर दुश्मनी भऽ गेल। जहिना तीतहा रोगक तीतहो दबाइ होइत आ मीठहो होइत। तेहने टूटानमे फँसि गेलौं। चुनावक समए एलै दोसरा ऐठाम धन लूटैक योजना बनल। मुदा ई नै बुझलिऐ जे ग्रुपमे ओहनो अछि जे खून करए जाइए। भेलै सएह। खून केलक कियो नाओं लागल हमर। अपनो मन कहैए जे खुनी हम नै छी। मुदा सोझहामे खून भेल तखनि हम केम्हर रहिऐ।"

तही बीच दर्जनो तैयार सिपाहीक प्रवेश भेल। सिपाहीकेँ देखिते सिपाहीओ आ बलदेवो चौंक गेल। उठि-उठि सभ ठाढ़ भेल। जहलसँ निकलि सभ सभकेँ देखए लगल।

